रामकलेवा

कविरामनाथ प्रधान रचित

जिसके

ध्यानकर पाठ करने से परब्रह्म त्रिलोकीनाथ
श्रीरामचन्द्र महाराज के पद सरोज में प्रेम
और भक्ति उत्पन्न होती है

वही

श्रीयुत मुन्शी नवलकिशोर अवध
समाचार सम्पादक ने निज यन्त्रालयीय
विद्वानों से अति प्रबन्ध से शुद्ध कराय॥

स्थान लखनऊ

निजपाषाण मुद्रायन्त्र में छपवाया

नवंबर सन १८७४ ई

॥ दोहा ॥

राम चरित्र पवित्र अति राम कलेवा नाम । राम नाम्य परधान कृ-त सुख पद मंगल धाम ॥ १ ॥ पढ़ै पढ़ावै प्रेम सों प्रेम राम प-द होइ । हर्ष सदा मन में बढ़ै जाइ अघौ गुन खोइ ॥ २ ॥ अति प्यारी जग में लगै ससुरारी की हास । नारी सारी सं-रहजौ दिल मिलि कियौ विलास ॥ ३ ॥ परम रहस्यर दस्य-हृद रसिक चारिहुं भ्रात । जनक भवन भावन भयौ रघुबंशी-की पांत ॥ ४ ॥ जाहि सगाई राम पद नांहि सगाई सर्व । जस भाजन साजन सकल तासु मिलन दर गर्व ॥ ५ ॥ जनक-नगर नागरि निपुन यथा भई प्रभु प्रीय । राम कलेवा सेवि त्यों प्रभु लागत कमनीय ॥ ६ ॥ श्री ॥ श्री ॥

ति रमणीय सुहावन देखेही मन मोहै ॥२१॥ कड़े बड़े नग जड़े मंडे अ-
ति कनक कड़े कर माहीं। छवि उमड़े उर अड़े तिन के गाड़े मदन मन
माहीं ॥२२॥ मणि मय कंकन सुख प्रद रंकन बंकन कर विधि बांधे। न-
पुर युवतिन मन जीतन को यंत्र वशीकर साधे ॥२३॥ मणि मय ढाले
विरचित जाले कसी कमर कर वालैं। कंचन ढालें वधी विशालें सजी
सबुज उर मालैं ॥२४॥ सजही पीत अचकन सी पनहीं मनहिं मनैं सुहाती।
नूपुर युत पद दिये महावर देखत वेद भुलाती ॥२५॥ वदन सकल सु
ख सदन राम के कोटि मदन मन मारै। दशरथ उर वसत रस सरस के अनु
रूप वार सिंगारै ॥२६॥ बीरिन खात चलात सखन सों जब प्रभु जेहि दिशि
वोलैं। तन मन भूलि जात सब ताको लेत प्राण मन मोलैं ॥२७॥

दोहा वर्णि सकै को राम को अनुपम दूलह वेष। ॥+
जेहि लखि शिव सनकादि को रहत न तनहिं संरेष

इति श्री राम नाट्य प्रधान लिखिते राम कलेवा रहस्ये प्रथमो ध्यायः॥१॥

छन्द ॥ भूमि सजि अनुज सहित रघुनंदन चाल्यौ राज दुलारे। कं-
गन चढ़े तुरंगन अंगन वसन सम्हारे ॥१॥ जे रघुवंशी कुंवर लाड़ि-
ले प्रभु कहं प्राण पियारे। चढ़े तुरंग संग ते उमगनि राम रंग मन वारे ॥२॥
बोले चोवदार लै नामनि यश जो गाये अलापे। चंचल चपल चलै चहुं दिशि
ते छत्र सरस शिर तापै ॥३॥ राम वाम दिशि श्री लक्ष्मी निधि सखन स-
हित तेउ सोहैं। चंचल वाजी किये तुरिन को वालै करत हंसो हैं ॥४॥ अरवं
दन जेहि नाम आहिरो रघु नंदन को वाजी। ताको गुण छवि कहं लौं वरणौं
जेहि होत मन राजी ॥५॥ भूषित भूषण अंग सदू षण भूषण हूं नहि ला-
जै। चढ़ी नलनि या गुथी सुमदियां पग पैजनियां वाजैं ॥६॥ नाड़ि नव
जीन जरी कीजर वीली अति सोहैं। पूंजी पदा की कहा कहै को काम लाम न
मोहैं ॥७॥ जो बंद मन फेर वसन को संग तुरंग सुभावै। जरकसि रेशी लसी
लपेटी झुकि झालरी छवि छावै ॥८॥ लसित लगाम दाम बहु केरी अंकि

के रवि कुल मान पियारे ॥३॥ रज सुहाग आनु भल पायो श्री मि
थिला धिप बेटी । सुंदर श्याम माधुरी मूरति जिन निज भुज भरि भेटी ।
॥४॥ बोली अपर सखी सुनु सजनी भली बात बनि आई । हमहूं
चलिस ब जनक महल को हँसिये इन्हैं हँसाई ॥ ५॥ इमि मृदु बातैं
करत परस्पर गई प्रेम बस बामा । सुनत बात मुसकात अनुज युत
कृपा सिंधु श्री रामा ॥ ६॥ तुरंगन चावत गए छवि छावत बाजत बिपु-
ल नगारे । चोपदार जो गरे अलापत जनक नगर पगु धारे ॥७॥ द्वार समी
प देखि अति सुंदर मन मय चौक सवारी । राज कुंवर रघु बंसिन की तहं ठा
ढ़ि भई असवारी ॥८॥ उतर जाय लहि सीय मातु की नगर सुवासिनि नारी ।
कंचन कलश सजे सिर ऊपर पल्लव दीपनि बारी ॥ ९ ॥ गावत मंगलगीत
मनोहर कर लै कंचन थारी । परछन चली हेतु रघुवर के बहु आरती सं-
वारी ॥१०॥ जाय समीप निहारि राम कहि दृग आनंद जल बाढ़ी । छकि-
त रही वर बदन बिलोकत थकित रही तहं ठाढ़ी ॥ ११॥ राम रूप रंगि ग-
ई रंगी को लखि दूलह सुख सारा । तन मन रह्यो नारे खन काहू को कै
मंगल चार ॥ १२॥ प्रेम पयोधि मगन सब नारी धरि धीरज भारी । प
रछन चली भली विधि कीन्हों रोरि विलोचनि वारी ॥ १३॥ लक्ष्मी निधि
व उतरि तुरंग तैं चारि उ कुंवर उतारे । पानि पकरि रघुनंदन जी को भीतर भ
वन सिधारे ॥ १४॥ दीप दीप के जहां महीप सब जनक समीप विराजे । बै
ठे सभा सकल निमि बंसी सुर अंसी छबि छाजे ॥ १५॥ चोबदार जागे अ
लापैं बहु विधि नौबत बाजैं । फहरैं विपुल निशान नरी के मत्त गयंद
गाजैं ॥ १६॥ रघुनंदन तहं अनुज सखन युत सादर जाय जुहारे । देखत उ
ठे सकल रघु बंसी जनक निकट बैठारे ॥ १७॥ गर मैं गजरा दृग कजरा सेहरा
मुकुट मौर बिराजै दूलह बेष देखि रघुवर को भई सभा सब राजी ॥ १८॥ तहं
करि कछु दरबार जनक को दशरथ राज दुलारे । लै के राय श्राद्ध नादि
पितर स्वासु सवीन सिधारे ॥ १९॥ जहं पिक बैना सब मृग नैना बैठि सुनै-

जिनके हास विलास लखि लाजत लक्षन मार ॥१॥ + + +

इति श्रीरामनाथ प्रधानविरचिते श्रीरामकलेवारहस्य ग्रंथे तृतीयोध्यायः ३॥

छन्द तेहि अवसर सुधि पाइ सखी सुखलक्ष्मी निधिकी नारी। नाम
सिद्धि पर सिद्ध जासु गुण रूप शील उजियारी ॥१॥ भाग सुहागा भरी
सुठि सुंदरि नव योवन मत वारी। रसिकन रीति प्रीति परवीनी रसिनिहिं ज-
जावन हारी ॥२॥ अति गुनवान निधान रूपकी सब विधि सुभग
सयानी। लक्ष्मी निधि की प्राण पियारी निमि कुलकी महरानी ॥३॥ अल
बेली सहज रघुवर की बड़ी सनेह सिंगारी। प्रीतम प्रीति निवाहन वारी रा-
म रूप रिझै वारी ॥४॥ चंचल चपल चकुं दिठि चितवत देखन की
आतुराई। भरी उमंग संग सखियन लै तुरित राम ढिग आई ॥५॥ वद-
न चन्द अरविंद लिये कर विमल मंदन सोहैं। राम कुअर कर पकरि ला-
डिली बोली तकि तिर कोहैं ॥६॥ ये चित चोर किसोर मृग के बड़े चोर तु-
म प्यारे। सुरति हमारि भुलाय मोदरे सासु समीप सिधारे ॥७॥ उनकी बा-
त कहो जनि प्यारी आपन दोष दुराई। तुमहिं छिपाय छबीली मूरति सुर-
ति हमारि अवाई ॥८॥ हम आये तुम महल न भीतर तुमहिं न परयो
जनाई। भलो सदन तुमसो है प्यारी नहु सब लागहि सुहाई ॥९॥ सुनत रा-
म के वचन लाड़िली बोली मृदु मुसकाई। तुमरे आगे [illegible] अलि लाल ओढ़
होन चली चलाई ॥१०॥ सासु सुनैना के समीप सहैं देखा ज्ञान [illegible]।
पानि पकरि रघुनंदन जी को गै लेवाय निज ऐना ॥११॥ चारि सिंहासन
देत है आसन भरी हुलासन प्यारी। वारेहिं वार निहारि बदन छवि चन्द्र
आरती उतारी ॥१२॥ सेलि सुकंठ मालती माला वसन अनि अतर लगायो।
अंचल सो मुख पोछि राम को निज कर पान खवायो ॥१३॥ जहा चन्द्रिका
सदृश चांदनी चहुंकित विछी बिशालैं। चमकै बहु चित्राम धाम के
दम के मनिन दिवालैं ॥१४॥ जहं रंभा सी रसिक सुन्दरी बैठी किये सिंगारैं।
कोउ सुसुमन की करन फूल रचि कोउ कलंगी कोउ हारैं ॥१५॥ ललित।

रामहि पान खवावत साथहिं भलो सिद्धि सुख देना। आये राम महल मह-
सिगरे जह श्री मातु सुनैना ॥ श्री रघुनंदन कीन्ह प्रनाम जोरि सरोरुह पा-
णी। विदा हेतु पुनि बचन सुनाये कहि अति कोमल बाणी ॥१०॥ सुनि ये
बैना सासु सुनैना भरे प्रेम जल नैना। रहो कि जाहु न कछु कहि आवै भूलि
गई सब बैना ॥११॥ पुनि धरि धीर अनेक अभूषण जे बहु मोलहि वानी
अनुज सखा युत राम कुंवर को दीन्ह सुनैना रानी ॥१२॥ वसन विचित्र
पवित्र हरषि हिय पहिराये वर जामा। पाय पोशाक नाय शिर चरण-
नि लहि आशीस मुद धामा ॥१३॥ हमरावर चरणनि की दासी प्रेम पियासी
नारी। हम पर छोहन छाडहु प्यारे आपुन विरद निचारी ॥१४॥ सुन जननी-
ि बोले रघुनंदन हम तुम्हार अति प्यारी। अस कहि बोध दियो बहु भाँ-
तिन तब सिधि महल सिधारी ॥१५॥ रघुनंदन तब अनुज सखन युत
जनक सभा पगु धारे। सादर कीन्ह प्रणाम चरण छुइ पाय रजाय सि-
धारे ॥१६॥ लछमी निधि युत राम कुंवर सब आदि पौरि सब आये।
सेवक सकल तयारी कीन्हे वाहन विविधि लगाये ॥१७॥ कोउ तुरंग प-
र कोउ मतंग पर आपु रुचिर सुख पाला। कोउ सुंदर स्यंदन चढि बैठे।
बाजे बजे विशाला ॥१८॥ फहरै सुभग निसान गजन पर विपुलन की-
न पुकारैं। चहुँ दिशि नागर अस्वायें बंदी विरद उचारैं ॥१९॥ कोउ शि-
र करै छत्र की छाया कोउ कर विनय पसारै। कोउ पान खवावैं रा-
मै चमर कोउ दिय ढारैं ॥२०॥ इमि रचना युत श्री रघुनंदन चले च-
दे सुख पाला। लखि कि झरोखन झांकन लागीं जनक नगर की बाला ॥२१॥
कोउ कह भामिनि वरन वनी जस श्री मिथिलेश किशोरी। तैसे
श्याम सुभाय सलोने राम कुंवर की जोरी ॥२२॥ कोउ कहै कौन जन्म
धौं पूजी यह लालसा हमारी। कछु बातैं करि राम कुँअर सों मिलती
भुजा पसारी ॥२३॥ कोउ कह धन्य राज्य कुल नारी पूर्व पुण्यफल की-
नी। इमि संवाद श्री राम कुंवर सों जन्म सुफल करि लीनी ॥२४॥ आ-

विजयमुक्तावली

छत्र कवि रचित

जिसमें

दोहा चौपाई आदिछन्दों में सम्पूर्ण महाभारत का

संक्षेप

अति उत्तमता से वर्णित है

श्रीयुत विद्या प्रकाशक

मुन्शी नवलकिशोर अवध

समाचार सम्पादक ने दूसरी प्रति छपी हुई से

अपने पण्डितों के द्वारा शुद्ध कराय

लखनऊ

स्वकीय यन्त्रालय में छपवाया

फ़ेब्रुएरी सन १८७४ ई०

विघनहरण तुम हौ सदा गणपति होउ सहाइ॥ विनती कर जोरे करौं दीजै ग्रंथ बनाइ॥१॥ जिहि कीनो परपंच सब अपनी इच्छा पाइ॥ ताको हौं वंदन करौं हाथ जोरि सिर नाइ॥२॥ करुणाकर पोषत सदा सकल सृष्टि के प्रान, ऐसे ईश्वर को हिये रहै रैन दिन ध्यान॥३॥ मेरे मन में तुम बसौ ऐसे क्यौं कहि जाइ॥ ताते यह मन आप सों लीजै क्यौं न लगाइ॥४॥ जा गुरु गिरिधर देव की सुंदर दया दरेर गुंग सकल पिंगल पढ़ैं पंगु चढ़ैं गिरि मेर॥५॥ व्रज रक्षण भक्षण अनल रक्षण गोधन ग्वाल॥ भुजवर कर वर कंजपर गिरिवर धरन गोपाल॥१॥ हरि दीपक मन सदन धरि कपट कपाट उघारि॥ नसै सकल अघ कालिमा कछु सुदेखि विचारि॥२॥ अथ दंडक छंद॥

झूमि झूमि आये कोपि वासव पठाये नभ धाये दिसदिसन ते बासव तरज पर॥ मेघ की मरोर महा पवन की झकोर जोर नीरद निपट घोर घोष सों गरज पर॥ ऐसे लखि कृष्ण ने उठायौ गिरि गोवरधन व्रज की सहाइ करी कर की करज पर॥ तबै सुरपाल के [illegible] कोप ते भुपाल [illegible] दयालु गोपी

ग्वाल की तरज पर ॥ ३॥ सवैया ॥ आनन एक कहै नर को चतु राननं चारिहु बेद बता में ॥ जे रिषि वृन्द प्रसिद्ध हैं सिद्ध महा मन बंछित सिद्धि जो पामें ॥ नारद सारद जो बतलैं सनकादि सुकादि सबै गुणगामें ॥ बंदत ये सब शेष सुरेश दिनेश धने श गनेशहु धामें ॥ दोहा ॥ जग जननी जग बंदनी जग पावनि सुख कारि ॥ गिरा थिरा मति दीजिये बरनौं ग्रंथ बिचारि ॥ ५॥ मथु रा मंडल मैं बसै देश सदा बर ग्राम ॥ आसन्न तहां प्रसिद्ध स दि क्षेत्र बटे श्वर नाम ॥ ६॥ ता भग जनके पग परत श्रघ कोस न रहैन ॥ बिकट जटे संकट नकित डरत सदा शिव नैन ॥ ७॥ सूक्ष्म स्थूल समूल अघ जरें जात दुख सूल ॥ फूल होत उर में तहां निरखि कलिंदी कूल ॥ ८॥ सवैया ॥ धंग धुधंग मृदंग कहूं सु कहूं धुनि शंखन की सुनिये ॥ कहूं ऋषि वृन्द प्रसिद्ध कहूं कहूं सोहत साधु महा मुनि ये ॥ वेद निवेदन भेदनि सों कहूं नृत्यत गावत हैं गुनिये ॥ शृत्ती बटे श्वर के शिव बं दन देत हैं मुक्ति सदा दुनिये ॥ ९ ॥ दोहा ॥ सुजस सकल ता निकट ही पुर अटेर इहि नाम ॥ जज्ञ यजन होमादि व्रत रचत धाम प्रति धाम ॥ १० ॥ नगर मनहुं अमरावती बा सी बिबुध समान ॥ आखंडल सों लसत तहां भूपति सिं ह कल्यान ॥ ११ ॥ कीरति दान कृपान की को बरनै बिस्तार ॥ जय गुन सुजस प्रताप सें छाय रही दिस चार ॥ १२ ॥ दंडक ॥ छंद बदर बदक खान बंगसो तिलंग छाई छाय रही बंदर में बारि ध के घाट लौं ॥ माडू कर काम रू फिरंग रोही रोह तास छा ई है कुमाऊं विधि बंधव कु हाट लौं ॥ गौड बानौ मारवाड़ मालवा उड़ीसा छाई छाई है सु देश देश हू विराट लौं ॥ छा ई धरा केहरी कल्यान सिंह कीरति का बिल कलिंग कास

मीर करनाटक लौं॥दोहा॥श्री वास्तम कायस्थ है छत्र सिंह यह नाम॥वसत भदावर देश में गृह अटेर सुख धाम॥१४॥कौरव पांडु की कथा तिन सब सुन्यौ पुरान॥तातें भाषा ग्रंथ को कीनौ छत्र वखान॥१५॥संवत सत्रह से वरष सप्त वाढ पंचास॥शुक्ल पक्ष एका दशी रच्यौ ग्रंथ नभमास॥१६॥नाम विजय मुक्ता यलौ हित करि सुने जो कोइ॥अष्टा दशौ पुराण कौ नाहि महा फल होइ॥१७॥लसत हस्तिना पुर अवनि अमरा वती समान॥सुरपति सो शांतनु तहां चहूं चक्र में आन॥१८॥सायर रिषि के श्राप तें शांतनु भयौ नरेस॥भुज वर कर वर स्वर्ग वर जीति लयौ वहु देश॥१९॥लावर तरुणी सुर सुरी पाले व्रत सुख कारि॥प्रजा सकल आनंद सों निशि वासर नर नारि॥२०॥वचन सुर सुरी यौं लयौ शांतनु पै सुख पाइ॥पुत्र होन मो पूर में दीजो भूप वहाइ॥२१॥जव यह विधि करि हौ न हीं तवहि तजौं यह गेह॥जौ लौं वचननि दृढ़ रहौ तौ लौं तजौं सनेह॥२२॥अष्ट पुत्र नृप के भये दीनो गंग वहाइ॥नवये भये गांगेय तव भूतल जनमे आइ॥२३॥दोधक छंद॥भूपति यौं मन मांहि विचारी॥कौन लहै नृप ता अधि कारी॥पुत्र भये सव गंग वहाये॥मंत्री सव नृप सोधि वुलाये॥वात सवै भुव भूप वखानी॥मंत्र कहा करिये सुख दानी॥जौं वर जौं गृह गंग नरेंदें॥पुत्रहि राखत पूर समेंदे॥२४॥मंत्री उवाच॥राखिय पुत्र रहै नृप ताई॥गंग रहै नृप के गृह जाई॥मंत्र सुनो यह भूपति भायौ॥सो चलिकै तिय पै तव आयौ॥२५॥राजा शांतनु उवाच॥दैसुत गंग अवै इक मांही॥मांगत हौं हित सौं यह तोही॥लै तिय पुत्र तवै कर दीनौ॥चंद सो आनन रूप नवीनौ॥२६॥दोहा॥पति सौं कहि पूरव क

था रही समाय प्रवाह ॥ महा दुःख नृप को भयौ चकितचित - नर नाह ॥ २७ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

नग स्वरूपगी कुंद ॥ भयौ नरेस कौ महा ॥ सो दुःख हौं कहौं कहा ॥ महीप देखिये इसौं ॥ निशा बिना शशी जिसौं ॥ २८ ॥ मंत्री उवाच ॥ न भूप शोक कीजिये ॥ सो पुत्र देखि जीजिये ॥ अनेक भांति पारिये ॥ संदेह शाता सुधारिये ॥ २९ ॥ दोहा ॥ बीते वासर च बने नव गांगेय कुमार ॥ शस्त्र शास्त्र विद्या पढी सीखे मंत्र अपार ॥ ३० ॥ नृपति शांतनु एक दिन गयौ अखेटकै काज ॥ सघन विपिन सरिता निकट लै प्रिय लोग समाज ॥ ३१ ॥ केवट त

नया प्राप्ति वदनि जोजन गंधा नाम॥ निरखि रूप मोहित भयौ विज्जुलता सी वाम॥ ३२॥ अति आशक्त भयौ नृपति केवट लियौ बुलाइ॥ देहु मोहि अपनी सुता मन वच क्रम सुख-पाइ॥ ३३॥ केवट उवाच॥ तुम पृथ्वी पति भूप हौ नीच जा-ति मल्लाह॥ आपहि कहौ विचारिकै किहि विधि होइ विवाह॥ ३४॥ तौ विवाह तुम कौं करौं जो यह मांगे देहु॥ नृपता या को सुत लहै करौ आप करि नेह॥ ३५॥ चौपाई॥ यह सुनि राजा मन विलखानो॥ गृह तन कौ तव कियौ पयानो॥ अव सोई हौं कहौं विचार॥ जोजन गंधा कौ अवतार॥ ३६॥ पारासर मुनि वन पगु धर्यौ॥ तरुनी वचन प्रगट यौं कर्यौ॥ किती वरष वन जैहैं वीती॥ कहि संतानि होइ किहि रीती॥ ३७॥ पारासर उवाच॥ चौपाई॥ ऋतु वंती ह्वै जवही न्हाई॥ सुक दीजो मो पास पठाई॥ ध्यान उर्म्मि कंद्रप हुव का कं॥ सुक कर देतो पास पठाऊं॥ ३८॥ तुम कान्न मेलि कीजियो पान। इहि संजोग होइ आधान॥ यह कहि कै मुनि विपिन सिधाए॥ तप हित महा विपिन में आए॥ ३९॥ दोहा॥ ऋतु वंती अज्ञान कियौ सुक पठयौ पति पास॥ पहुंच्यौ मारग निकट लखही छोडि अवास॥ ४०॥ चौपाई॥ देखत ध्यान रिषीश्वर धर्यौ॥ मन मथि मदन नखै जल ढर्यौ॥ धर्यौ पत्र में सुक कर दयौ॥ रिषिनी हित सौं सोंपि गयौ॥ ४१॥ आयौ सरिता निकट सुकीर॥ गिर्यौ मदन जल आवत नीर॥ एक मीन सो की नो पान॥ ताको प्रगट भयौ आधान॥ ४२॥ प्रापत्यौ सो तवही लयौ॥ रिषिनी पास कीर लै गयौ॥ जा विधि सो कहि गये मुनी ह्वार॥ जो विधि कीनी त्रिय तिहि औसर॥ ४३॥ दोहा॥ वीति पूरण मास तव गर्भ सुच्यौ तेहि काल॥ भयौ पुत्र कविक

त्र कहि उर आनंदति वाल ॥ ४४ ॥ त्रोटक छंद ॥ उत मीनहि पू
रण गर्भ भयौ ॥ चलि केवट तासु सिकार गयौ ॥ लहि मीन सु
गेह गयौ जवही ॥ निकसी तनया तेहि गर्भ तंही ॥ चपला
जनु सोहत देह धरे ॥ रति मानहु अद्भुत रूप करे ॥ दिन को
तिक ताकहं वीति गये ॥ कुल धर्म सवे हित कै सिखये ॥ ४६
॥ दोहा ॥ नाम कृता मत्स्योदरी करति आप कुल धर्म ॥ पथिक
उतारति आपगा करि मलाह के कर्म ॥ ४७ ॥ कीनो द्वादश
वर्ष तप पारासर मुनि आइ ॥ निरखि रूप मत्स्योदरी गिरयौ
पुहुमि अकुलाइ ॥ ४८ ॥ निरखि [illegible] आशक है कही
वात मुनि राय ॥ मोहि तोहि सुरतिसनी सुरति होइ सुख
पाय ॥ ४६ ॥ मत्स्योदरीउवाच ॥ सुंदरी छंद ॥ वात [illegible] न
सौ कहि आवहि ॥ क्यौं कहि आपु कलंक लगावहि ॥ ५० ॥
रिषिरुवाच ॥ दै रति कै लहि आप अवै त्रिय ॥ नाहिं रह्यौ क
छु धीरज मो हिय ॥ त्रास भयौ सुनि ताउर मैं अति ॥ जानि
न जाइ कछू विधि की गति ॥ आतुर ह्वै रिषि राज दई रति ॥
ताहि प्रसन्न भयौ सु महा मति ॥ ५२ ॥ दोहा ॥ तुम तनकी
दुर गंधता नसि जैहै सुनि वाल ॥ होइ सुगंध शरीर को
जोजन लौं सव काल ॥ ५३ ॥ लखै न कोऊ गर्भ तुम जा
हु अनंदित धाम ॥ होइहै पुत्र प्रसिद्ध महि तीन भुवन जेहि
नाम ॥ ५४ ॥ चौपाई ॥ यह कहि कै रिषि ग्रह को गयौ ॥ प्रगट
गर्भ ना त्रिय को भयौ ॥ लखै न कोऊ ताहि अवास ॥ लीनो जन्म
महा रिषि व्यास ॥ ५५ ॥ वन [illegible] चलै [illegible] रिषि राई ॥ अ
ति हित वचन कह्यौ सुनि माई ॥ [illegible] सुधि करै तहां चलि आ
ऊं ॥ तेरो कठिन कलेस मिटाऊं ॥ [illegible] न काहू सो व्यौहार ॥
जिहि विधि लीनो रिषि [illegible] ॥ [illegible] हि [illegible]

पुरुष रूप निधना निरमई ॥दोहा॥ ताको शांतनु देखि कै गृह आ
ये नर नाथ॥ कुम्हि लानो आनन महा धीरज रह्यो नहाथ॥
॥ भीषम उवाच ॥ कौन हेत नृप मलिन हो कहो पिता सों
काज ॥ पाऊं आज्ञा रावरी कहौं सो सारौं काज ॥ ५९ ॥ राजा
उवाच ॥ दोहा ॥ जबतें सुत गंगा गई वीती वर्ष सात ॥
छिन छिन वीततु वर्ष सम जुग भरि जाम विहात ॥ ६० ॥
चौपाई ॥ तिय विनु कर्म धर्म नहिं होई ॥ नहिं नर लहै वडा
ई कोई ॥ धन संपति लागै नहिं नीको ॥ ता विन भवन वस्तु
है फीकी ॥ ६१ ॥ दोहा ॥ जोजन गंधा की सुगति सब विधिक
ही वखानि॥ देत नहीं आपनी सुता वरन केवट कानि ॥ ६२ ॥
चलि गंगेय गये तहां ता केवट के पास ॥ देहु सुता भूपाल -
को कीनो वचन प्रकाश ॥ ६३ ॥ केवट उवाच ॥ होइ राज या
पुत्र कों तो हौं करौं विवाह ॥ मन साचा सो करैना वचन दे
हिं नर नाह ॥ ६४ ॥ चौपाई ॥ तब गंगेय वचन यों कहे ॥ तुव
तनया सुत नृपता लहे ॥ करौं विवाह न तिय संग्रहौं ॥ सत्य
वचन हौं तोसों कहौं ॥ मेटहि वचन सुनरक हि जाई ॥ करौं से
व हौं जानौं माई ॥ साधु जानि तब यह पितु मानी ॥ आये -
व्याहन नृप रवदानी ॥ ६६ ॥ करि विवाह ले तियहि सिधा
ए ॥ तवही भीषम निकट वोलाए ॥ तें अति सुख दीनो है मो
ही ॥ हौं प्रसन्न दीनो वर तोही ॥ ६७ ॥ सवैया ॥ मीच वोलाइ
विना नहिं आयहै चाहे विना मरिहै नहि मारयो ॥ तेरे न
निष्फल जाहिंगे वाण हरेगो नहीं रण काहु को टारयो ॥
तोसों तुही सरि और नहीं वर आनत कौं सब सोच निवा
रयो ॥ धन्य घरी जिहि जन्म लयो भुव धन्य तु पुत्र पिता प
न पारयो ॥ ६८ ॥ दोहा ॥ सुनि शांतनु के वचन ये भीषम जी

सुख पाइ॥ मातु पिता की भक्ति अति करि लीनी मन लाइ॥ ६६॥ इति श्री महा भारत पुराणे विजय मुक्ता वल्यां कवि छत्र विरचितायां व्यास अवतार वर्णनो नाम प्रथमोऽध्यायः॥

॥१॥ अथ त्रोटक छंद॥

नृप शांतनु के सुत दोय भये॥ शुभनाम सुचित्र विचित्र ठये गुण ज्ञान कमान सबै सिखये॥ दिन सीखत कर्म सुधर्म नये॥१॥ बहु भूपति के मन मोद भयो॥ छिति में जस भूपति भूप लयो॥ इहि भाँति किते दिन बीति गये॥ सब वासर आनंद में बितये॥२॥ दोहा॥ आयु भुगति नर नाह तब वास लयो हरि लोक॥ पुत्र कलत्र कुटुंब को उर बाढ्यौ बहु शोक॥३॥ सुरसरि सुत समुझाय सब क्रिया कर्म सब कीन्ह॥ जेठ सुत तब चित्र को राज भार धरि दीन्ह॥४॥ बहु रिषि राजनि बोलि कें कर्यो राज अभिषेक॥ सब परिवार प्रजानि कों आनंद बढ्यौ अनेक॥५॥ सोरठा॥ काशि राज के गेह हुती सुता दुइ इंदु मुख॥ इक अंबा अंबेह मृग नैनी चंपक वरण॥६॥ दोहा॥ अंबा दीन्ही चित्र कों करि विवाह को चार॥ अरु अंबेह विचित्र गृह भई सकल सुख सार॥७॥ सोरठा॥ बाढ्यौ गर्भ अपार अमनी नृप संपति निरखि॥ सकल संहज भंडार वरनि कहां लौं कवि कहै॥ चौपाई॥ निस दिन राज नीति विसराई॥ रचे कुकर्मनि के सब भाई॥ कुल को सकल धर्म नसि गयो॥ बहु संदेह मात उर भयो॥ जान्यौ जबहि राज को नास॥ जोजन गंधा सुमिरे व्यास॥ आइ गये तबही ऋषि राई॥ धाय जननि के बंदे पाई॥१०॥ जोजन गंधा उवाच॥ जद्यपि तें भुव पायो राज॥ करै नराज नीति के काज॥ ऐसो कुछ

कीजे उपदेश ॥ राज नीति मत नीति [illegible] ॥ व्यास उवाच ॥ दोहा ॥ सुनि माता तोसों कहौं राज नीति समुझाय ॥ सो सिख दीजे सुतनि कों सुजस रहै घर छाय ॥ १२ ॥ दिन प्रति व्यास कहै कथा राज नीति सब धर्म ॥ चित्र नृपति यह बात सुनि मन में वस्यौ कुकर्म ॥ १३ ॥ को यह द्विज माता निकट बैठत निस दिन आइ ॥ ताको हतन विचारि कै गुप्त भयो तहं जाइ ॥ १४ ॥ गीतिका छंद ॥ आय कै रिषि व्यास माता निकट बैठि कथा कहै ॥ सुनत पाराशर सुता सुत वचन दीरघ दुख दहै ॥ माय कहि कहि राज नीतहि सकल विधि सो उच्चरै ॥ पुत्र कहि बूझै जननि इहि भांति श्रवण कथा करै ॥ १५ ॥ अर्ध निस बीती जहां रिषि व्यास पग गृह को धरयौ ॥ निरखि यह विधि चित्र नृप तब वचन तिन सौं उच्चरयौ ॥ हे महा रिषि राइ तुम सब भांति वुद्धि प्रवीन हौ ॥ लोक की पर लोक की सब वेद विधि सौं लीन हौ ॥ १६ ॥ भयौ मनसा पाप जाकहं सो कहौ क्यों उद्धरै ॥ देहु वुद्धिनिधान सिक्षा काज कैसे कैसरै ॥ व्यास साध अगाध मति तब वचन तिन सों भाषियौ ॥ कहौं तो सों विधि सबै मन मांहि हित करि राखियो ॥ १७ ॥ दोहा ॥ [illegible] द्रुम कों खंडि कै तामें अग्नि प्रजारि ॥ धूम घूंटि प्राननि तजै सब अघ डारै वारि ॥ १८ सीख लई सोधे सोई सोई कियौ उपाय ॥ धूम घूटि तिहि भांति ही गये देव पुर राय १९ ॥ त्रोटक छंद ॥ इहि भांति नरेश विलोकि तवै ॥ वहु दीन भये नर नारि सवै ॥ तव मात महा उर दुःख भयौ ॥ जु इमि मानहु भीषम प्राण गयो ॥ २० ॥ तव भूपति भूमि विचित्र कस्यौ ॥ विधि सो सिर ऊपर छत्र धस्यौ ॥ वर नीन्द

...सब कर्म कहा ॥ गुरु लैलक सोहित आदि [illegible] ॥२१॥ चौ॰ ॥
इक द्यौस गयौ अति ही वन में ॥ भय नाहिं कछू नृप के मन
में ॥ उठि सिंह तहां नर नांह हयौ ॥ प्रिय लोगनि के अति
दुःख भयौ ॥ २२ ॥ दोहा ॥ सब साथिन पुर में कही वन में वी
ती वात ॥ शोक युक्त माता भई अति भीषम पुनि तात ॥
॥ २३ ॥ तबही माता चित्र की सुत हित बहु दुख [illegible]
त के अरु अति मोह के भीषम लये बुलाइ ॥ २४ ॥ रानी
उवाच ॥ चौपाई ॥ नृप बिन पुर वासिन के संका [illegible]
सिर बिन सूनी लंका ॥ अब सोइ काज करौ जग [illegible] ॥
राज भार सुत तेरे शीशा ॥ २५ ॥ प्रजा पालिये सुत ज्यौं मा
त ॥ राखौ राज जो बूड़ौ जात ॥ नाम [illegible] शांतनु को
रहे ॥ भीषम सों यों माता कहै ॥ २६ ॥ भीषम उवाच ॥ माता
सत्य हिये में राखौ ॥ सत्यहि छांडि असत्य न भाखौ ॥ नृप
ता करौं [illegible] करौं ॥ तुम सेवा निस दिन उर धरौं ॥ २७
[illegible] ॥ भयौ [illegible] संदेह उर कीजै कहा उपाय ॥ प्रग
ट भीषम सों कह्यो [illegible] जुत अकुलाय ॥ २८ ॥ [illegible]
[illegible] तें भये व्यास अवतार ॥ वरनि सुनायो [illegible]
विधि सों सब व्यौहार ॥ २९ ॥ जनमत [illegible] को गयो व्या
स महा रिषि राय ॥ ताही छिन मोसों कह्यो वचन परम सुख
[illegible] ॥ ३० ॥ जहां कछू संकट परै कष्ट होइ कछु आय ॥
सुमिरत ही तहां प्रगट ह्वै टारौं सकल [illegible] ॥ ३१ ॥ सुंद
री छंद ॥ भीषम यौं सुनि सुख भयौ मन ॥ बैन [illegible]
वंत तत छिन ॥ मातु बुला बहु ता रिषि [illegible] ॥ दुःख द
हे सब कारज साजहि ॥ ३२ ॥ भीषम को अनुराग [illegible] चि
त ॥ व्यास तहां सुमिरे करि कै हित ॥ सोभित आप [illegible]

रिषि सोम्यल ॥ जटा कसे कर दंड कमंडल ॥ वंदतु है पग मातु म
हा मति ॥ भीषम के उर सुक्ख भयौ अति ॥ ३३ ॥ बात विचारि
कही सबरी गुनि ॥ राज चलै केहि भांति महा मुनि ॥ ३४ ॥
श्री व्यास उवाच ॥ चौपाई ॥ एक उपाउ करौ जो माई ॥ तौ सं
तान प्रगट हो आई ॥ चित्र विचित्र नृपति की नारी ॥ होइ
नगन सब वस्तर डारी ॥ ३५ ॥ मो आगे आवै तजि लाज
देहुं असीस होइ सब काज ॥ हौं तपसी नहिं चित्त वि-
कार ॥ तातें जिनि कछु करौ विचार ॥ ३६ ॥ रानी गई म
हल में धाय ॥ पुत्र वधुन सों विनयौ आय ॥ उनि सुनि वा
त अचंभो कियौ ॥ कैसो है माता तो हियौ ॥ ३७ ॥ दोहा ॥
इहि विधि आगे जेठ कै काहू कुल की बाल ॥ ऐसी कौन
निलज्ज त्रिय करै जु कर्म कराल ॥ ३८ ॥ चौपाई ॥ रानी क
हि समुझाई बाला ॥ भई नगन वह ताही काला ॥ बहु घां
केस देह पर डारि ॥ नैन मूंदि कैं अंबा नारि ॥ ३९ ॥ आई सो
सामुहे रिषीस ॥ ह्वै प्रसन्न रिषि दई असीस ॥ इहि विधि
कै रिषि बोले बैन ॥ होइ अंध सुत लहै ननैन ॥ ४० ॥ फिरि
रानी अंबे पै जाई ॥ ले आई तोकौं समुझाई ॥ तिन हूं वस
न दिये सब डारि ॥ अंग मृत्तिका लाई नारि ॥ ४१ ॥ व्यास उ
वाच ॥ दोहा ॥ पांडु पुत्र या गर्भ तें ह्वैहै वह सुख कार ॥ मृ
त्तिका लाई अंग इनि भेद कह्यौ निर धार ॥ ४२ ॥ वांछित
फल मातहि दयौ गेह गयौ रिषि राइ ॥ चित्र विचित्र त्रिया
नकें गर्भ भये सुख दाइ ॥ ४३ ॥ सुंदरी छंद ॥ पूरण मास भ
ये तिन के जब ॥ मातनि के उर सुक्ख बढ़े तब ॥ अंध भये
सुत चित्र कीनारिहि ॥ पांडु विचित्र वधू सुख कारिहि ॥
॥ ४४ ॥ वासर हू निसि दुंदुभी बाजत ॥ धुनि सुनि के मघ

या जनु लाजत ॥ मंगल चार सखी सब गावहिं ॥ भांतिनि भां
ति आनंद बढावहिं ॥ भीषम कर्म विचारि किये सब ॥ दीन
गुनी कहं दान दिये तब ॥ बीति गये इहि भांति कछू दिन
बाढत आनंद है छिन हू छिन ॥ भाट तहां बिरदावलि गावत ॥
॥ वारन अश्व समूहन पावत ॥
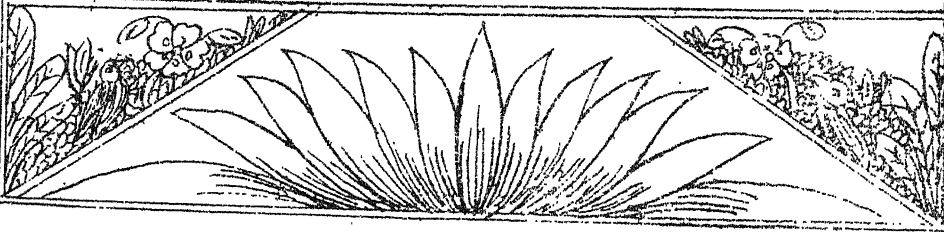
पंडित आये तहां गुनसागर॥नृत्यत हैं बहु धा नट नागर॥ [illegible]त नगर नारि नर भारी॥सुख भुज तननि सकल सुख कारी॥४७॥दोहा॥को वरनै आनंद को सुख संमूह [illegible]॥जबही फिरि सुमिरे जननि आय गये रिषि व्यास॥४८॥[illegible] उवाच॥तुम प्रसाद ते पुत्र द्वै प्रगट भये यहि गेह॥आसिष देहु उदार ह्वै मो मांगे सुत देह॥४९॥[illegible]॥जिनास मन उहि भांति ही आवै मोतट वाल॥आसिष देहु [illegible] ताको तेही काल॥५०॥आनी दासी नगन करि [illegible] गंधा साइ॥करति कटाक्ष नलाज उर मंद मंद मुसिकाइ॥५१॥चौपाई॥कासिराज की सुता [illegible]॥यह माता दासी है कोई॥याके गर्भ होइ सुत येक॥विस्नु भक्त अरु ज्ञान अनेक॥५२॥दे आसिष तबही रिषि गयौ॥प्रगट गर्भ दासी के भयौ॥पुत्र सरूप तबे अवतर्यौ॥नाम विदुर रिषि यौ उच्चर्यौ॥५३॥तीनौ शिशु खेलें इक संग॥लखि सुख उपजत मातनि अंग॥लरैं भिरैं खेलैं इहि रीति॥केते वर्ष दिवस गये बीति॥५४॥सोरठा॥भीषम सकल [illegible] बुध जन ज्यौतिसी॥दयौ अंध को राज तिलक प्रीसा सिर छत्र धरि॥५५॥दोहा॥राज नीति मारग धर्यौ भीषम बुद्धि निधान॥सुवस वास चारौं वरन आप धर्म जुत ज्ञान॥५६॥ विजय करन को तव सज्यौ भीषम दल [illegible] अरि पुर जाय के लखि मुख उपज्यौ अंग॥५७॥[illegible] एक नृपति पैलीनौ दंड॥पाटन नगर जीति बहु खंड॥एक नृपति आपने करि थांपे॥वहुत नरेस महा भय कांपे॥५८॥दोहा॥भीषम करि के दिग विजय आये आपने गेह॥पांडु अंध धृतराष्ट्र सौं दिन दिन बढ्यौ सनेह॥५९॥

चौपाई ॥ अंध राय की चलै दोहाई ॥ सव विधि करै पांडु नृपताई ॥ इहि विधि सुख वीते वहु काल ॥ रहत यथा क्रम तहं भुव पाल ॥

इति श्री महा भारत पुराणे विजय मुक्ता वल्यां कवि छत्र विरचितायां धृत राष्ट्र पांडु विदुर जन्म वर्णनो नाम द्वितीयोऽध्याय: ॥ २ ॥

दोहा ॥ सुवस भूमि कन वज पुरी चारि वरन की भीर ॥ गंधुव राय महीप तहं परम प्रीत गंभीर ॥ १ ॥ सोरठा ॥ सुरपति गंध्रुव राज अमर पुरी कन वज नगर ॥ पुर जन विवुध समाज दूजौ सरि दीजे कहा ॥ दोहा ॥ ताके दुहिता प्रगिट मुखी गंधारी इहि नाम ॥ सची किधौं है इंदिरा कै मन सिज कीवाम ॥ ३ ॥ अंध राय कौ थापि कै दीनी लगन पठाइ ॥ करि विवाह को चारु सब मंगल चार कराइ ॥ ४ ॥ पुनि भीषम आनंद युत आये साजि वरात ॥ अंध राय दूलह वने सुख समूह सरसात ॥ ५ ॥ विन लोचन को पति सुन्यौ गंधारी दुख पाय सखी आपनी सौं कही यह सव विधि समुझाय ॥ ६ ॥ को मेटै विधि को लिख्यौ पायो पति विन नैन ॥ सोई प्रभु है प्राण पति सत्य कहौं सुनि वैन ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ तवही यौं गंधारी कहै ॥ परम पति व्रत मो उर रहै ॥ कैसी तरुणी है जग माहीं ॥ पति के दुख आप दुख नाहीं ॥ गुरु देवता आप पति जानैं ॥ ताकी आज्ञा निस दिन मानै ॥ पगन देहिं पति शासन भंग ॥ रचैं पतिव्रत के जो रंग ॥ ९ ॥ शुभ गति तिन की करता करै ॥ तव गंधारी यौं अनुसरै ॥ अंध राय पति के दृग हैन ॥ लै पट्टी तिन वांधे नैन ॥ १० ॥ दोहा ॥ जो विधि दोऊ कुलन की व्याह भयौ तिहि रीति ॥ कन्या दै दासी दई भूषन वसन समीति ॥ ११ ॥ नाराछंद ॥ मतंग औ तुरंग सूर

साजि साजि साजि यौ॥ अनेक भांति दाय जौ अशेष वस्तु कौदि यौ॥ स्याम सेत नील पीत आसनै विछा वने॥ दये सुवर्ण माल मुक्त राज ते घने घने॥ १२॥ विवाह के नरेस आप गेह कों सिधा रियौ॥ दरिद्र हीन दीन के सवै नसाइ डारियौ॥ गीत नाद ठौर ठौर सुख सों घने घने॥ उपंग चंग दुंदभी निभेरि वृंद को गने॥ १३॥ दोहा॥ कही नृपति धृतराष्ट्र यह भीषम सों समुझाइ॥ करौ पांडु को व्याह अब उत्तम ठौर सुधाइ॥ १४॥ भीषम उवाच॥ नगर निरखि नावलि वनी मधि नायक कुलवार॥ कुंतल राज वखानिये तहां भूमि भरत्तार॥ १५॥ सूरसेन नृप की सुता हित कै आनी गेह॥ जन्म काल के कर्म्म सव कीने सहित सनेह॥ १६॥ नाम धर्यौ कुंती तहां सकल वुधीस वुलाय॥ दिन दिन दुहिता वृंद सुखि अति दुति सो सरसा य॥ १७॥ द्वादश वीते वरस तव करि कुंती चित ज्ञान॥ से यो रिषि दुर्वास तव मन कर्म वचन सुजान॥ १८॥ तोट क छंद॥ रिषि राज प्रसन्न भये जवही॥ अति विम्बल ध्यान धर्यौ तवही॥ सिखयौ आकर्षन मंत्र तवै॥ हित कै तिहि सीखि लये सुसवै॥ १९॥ दोहा॥ सूरज को इक ध र्म को तीजो पवन वखान॥ चौथो सिखयो इंद्र को सव गुन ज्ञान निधान॥ २०॥ चौपाई॥ पंचम तंह अश्वनी कुमारा॥ दीनो रिषि सो परम उदारा॥ जाको मंत्र जपै सु ख पाई॥ सोई देव प्रगट है आई॥ २१॥ तोटक छंद॥ उन सूरज मंत्र जप्यौ जवही॥ प्रगटे सविता घर आइ तही॥ सकुची डरपी अति भीति परी॥ नरमो जग मोहि कलं क लगै॥ २२॥ सूर्य्य उवाच॥ विनयौ जवतें वहु जाप क रौ॥ अति भक्ति करी पग भूमि धर्यौ॥ तव दृष्टि संजोग

दृष्टि पसै श्रुति धार की हित करि लियौ उठाइ ॥ २९ ॥ नाराच छंद ॥
लसै महा स्वरूप पुन सूरसो उदै कियौ ॥ गयौ सुभौन आपने कुमार
सों महा हियौ ॥ दयौ नियाहि जाति कर्म आदि कर्म ते करे ॥ अनं
द भो महा घनो असेष दुःख ते टरे ॥ ३० ॥ भयौ किसोर आव कौं
पुन यौं सिखा वही ॥ नित्य नित्य अंग अंग में सुज्योति आव
ही ॥ भयौ प्रवीन अस्त्र शस्त्र सीखवो हिये धरे ॥ सहस्त्र बाहु
जीतिये गयौ विचार यौं करे ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ आराधे तव कम
ल पद परशुराम के जाय ॥ द्विज सुत ह्वै विद्या पढ़ी मन वच
क्रम चितलाय ॥ ३२ ॥ यहि विधि बहु विद्या पढ़ी सिख दे सो
रिषि राज ॥ अस्त्र शस्त्र सीखे तहां करण तजे सुख साज ॥
३३ ॥ परशुराम रिषि राज तव आलस सों अलसाइ ॥ कर
ण जंघ पर सीस धरि सोय रहे सुख पाइ ॥ ३४ ॥ चौपाई
कीट रूप नारायण आये ॥ भृगु नंदन तहं सोवत पाये ॥ कर
ण जंघ तर पहुंचे जाई ॥ काटत रहे रुधिर धर छाई ॥ ३५ ॥
तुचा काटि बहु आमिष फोरो ॥ करण सुभट अंग नेक
नमोरो ॥ सोवत ते तव भृगु पति जागे ॥ देखि रुधिर त
व पूछन लागे ॥ ३६ ॥ परशुराम उवाच ॥ सुत यह रुधिर क
हां ते आयौ ॥ तव रवि नंदन भेद बतायौ ॥ जान्यौ करण वि
प्र नहिं होई ॥ यह छत्री बालक है कोई ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ जद्य
पि छत्री वंश सों है विरोध अति मोहि ॥ कपट रूप विद्या प
ढ़ी अंत फुरे नहिं तोहि ॥ ३८ ॥ छोड़ि आप आये सदन
रवि नंदन अकुलाइ ॥ उत्त कुंती गृह कों गई तन के चिन्ह
मिटाइ ॥ ३९ ॥ तवही कुंती राय पै नेगी दये पठाय ॥ भीप
म इति कथा कही सवनि सुनी सुख पाय ॥ ४० ॥ सोरठा ॥
कुंतल नृप पै जाय कही बात समुझाय सव ॥ तव भूपति

सुख पाय पठये नेगी लगनदै ॥४१॥ सुनत सुरव्वद यह बात सुभ घटिका लीन्ही लगन ॥ भीषम सजी बरात हय गयंद प रि गह घने ॥४२॥ भुजंग प्रयात छंद ॥ चले मत्त मातंग ऐसे बिरा जैं ॥ मनो ग्रीषम भारे महा मेघ गाजैं ॥ चले तेज सों तेज ताते तु रंगा ॥ मनो लेत भाजे कुरंगी कुरंगा ॥ चले पालिक साजे रथी सू र सेना ॥ चले वीर वंका कहूं संक हैना ॥ चले दुंदुभी आदि दै सर्व बाजे ॥ चले नृत्य कारी सुदेवी बिराजे ॥४४॥ दोहा॥ निय रने कुंतल नगर अद्भुत बहु बरात ॥ निरखि सकल वि धि नगर के आनंद उरन समात ४५ दुहु कुलनि की रीति जो ति हि विधि कियौ विवाह ॥ दै कन्या बहु धन दयौ समदे सब नर नाह ॥४६॥ करि विवाह नृप पांडु को भीषम पहुंचे धा म ॥ भये सगुन पैठत नगर होय सकल मन काम॥४७॥ दंडक छंद ॥ सगुन को सोसार देख्यौ दाहिनो कुरंग दौर भार द मयूर चारु दरपान देखायो है ॥ दाहिनोई जंवुक उलूक स्वान दाहिनोई नीलद नाव्रत सुभ सगुन जनायो है ॥ दाहि नोई प्राव्द स्वर शूकर भयो दाहिनोई उज्जल वसन लैकै रज क घर आयौ है ॥ अन्न पकवान दूव मृत्तिका सुगंध पान फूलन की माल को विलोकि सुख पायो है ॥ ४८ ॥ चौपाई ॥ कुंती गृह भीतर पगु धारी ॥ देखन मुख आई गंधारी ॥ सब गुन सुभ लक्षन लखि नैना ॥ मन में बिलखी कहै नवैना ॥ ॥४९॥ बूझी सब गुन की विधि सबे ॥ सकल सगुनिया वर णत तबै ॥ पैठत नगर सगुन सुभ भये ॥ नित नित आनं द दीखैं नये ॥ ५०॥ दोहा ॥ धर्म धुरंधर होय सुत कुंती गर्भ प्रवीन ॥ एक छत्र महि भोगवै करि समद अरि छीन ॥ ५१ त्रिभंगी छंद ॥ सज्जन मन रंजै दुर्जन गंजै भंजै जग दारिद्रघने

भनै ॥ सत्य कहै दुरव सत्य लहै सुख दुःख दहै कवि छत्र भनै ॥
दुर्भिक्षि भगै [illegible]नि मारे जारे रोग किते जगके ॥ भारी भयमा
नै निर्भय होनै जानै गुन जसके मगके ॥ ५२ ॥ दोहा ॥ कुकिगं
धारी सगुनिया दीनी तुरत निकारि ॥ लोभ ग्रसित लोभी कहै
वातन एक विचारि ॥ ५३ ॥ बढ़्यौ पांडु नृप तरुनि सों दिन दिन
प्रेम अपार ॥ क्रीडा निसि वासर रची सुजस सकल संसार
॥ ५४ ॥ दूजो कर्यो विवाहु तव आनी तरुनी [illegible]
द्री लसत सों [illegible] ॥ ५५ ॥ गयौ [illegible]
पांडु नृप आखेटक के काज ॥ तहां हते तप जुक्त द्विज रि
खिनी अरु रिषि राज ॥ ५६ ॥ तवहीं मन वस मन मथ्यौ का
मातुर रिषि राय ॥ रति मांगी त्रिय पै तहां [illegible] अकुला
य ॥ ५७ ॥ रिषिनी उवाच ॥ पति रति निशि में उचित है वासर
उचित नाहि ॥ किती विनय तरुनी करी धीरज छोड़ु नता
हि ॥ ५८ ॥ रिषि उवाच ॥ चौपाई ॥ पशु पक्षी दिन में रति करें
हम तुम रूप मृगनि को धरें ॥ रिषिनी मृगी आप मृगभ
यौ ॥ या विधि त्रिय सों रति रस ठयौ ॥ ५९ ॥ तांहिन पांडु
आय तहं गयौ ॥ विषम वाण सों रिषि मृग हयौ ॥ लाग
त वाण भयो संताप ॥ प्राण तजत तहं दीनो श्राप ॥ ६० ॥
दोहा ॥ जिहि विधि छोड़ी देह मैं लागत विषम सुवान ॥
याहि विधि त्रिय सों रति करत जैहैं तेरे प्रान ॥ ६१ ॥ छो
ड़ि श्राप रिषि राजको गृह आयो दुःख पाइ ॥ महा मलि
न निशि के समय पौढ्यौ सज्या जाइ ॥ ६२ ॥ तव कुंती
नृप पै गई करि षोड़श सिंगार ॥ मिस करि नृप सोव
त लख्यो अर्द्ध निशि सुख कार ॥ ६३ ॥ करत सेव पति
की त्रिया और पलोटति पाइ ॥ अंग अंग दुख सोंदह्यो

उतर देह नसाइ॥६४॥बड़ी वेर जाग्यौ नृपति कुंती अति सुख पाइ॥ रति मांगी त्रिय लाज तजि कामातुर अकुलाइ॥६५॥ विषको इष सो उर लग्यौ सुनत त्रिया की बात॥ दुख़नि ही नासी निसा जौलौं भयौ प्रभात॥६६॥ त्रोटक छंद॥ उठि बाहर पांडु महीप गयौ॥ नसुहाइ कछू बहु दुःख भयौ॥ गज बाजि सबै संग साजि तहां॥ चलि के पहुंचे वन घोर जहां॥६७॥ सवैया॥ देखि तहां वन ताल के जाल तमाल बिसालनि कोन गनै॥ चंदन चंपक अंब कदंब सदां फल श्रीफल वेल घनै॥ केवरे केतकी औ करना कुलि कुंद सुकुं ... को बरनै॥ वेला चमेली जुही बहु कुंजनि पुंजनि पुंजनि मे हि मनै॥६८॥ दोहा॥ सुवस बसायौ इंदु पथ कानन मैं तिहि ठौर॥ रह्यौ विरमि नृप पांडु तहां भूपनि को सिर मौर ६९॥ इति श्री महा भारते राजा पांडु वनो वास वर्णनो नाम तती यो ऽध्याया: ॥३॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

॥दोहा॥

तब कुंती मन दुखित ह्वै चली पांडु नृप पास॥ ग्रह रक्षा को छत्र कहि रक्खे दासी दास॥१॥ पहुंची भूपति के निकट नगर इंद्र पथ मांह॥ रहत सुचैने लोग सब पांडु नृपति की छांह॥२॥ चौपाई॥ रानी ... आवति जबही॥ शोक भयौ भूपति उर तबही॥ निसि सून्यौ नृप सेज सवांरी॥ इंदु वदन त्रिय तहां पग धारी॥३॥ पति को मन त्रिय लहै नसोई॥ बहु संदेह तासु उर होई॥ तजि लज्या यौं बोली वैन॥ सुनहु प्रानपति बहु सुख दैन॥४॥ कुंती उवाच॥ काहे रखत न हम सों मोह॥ यह लखि मो उर वाढ़त छोह॥ तुम सों कहौं मदन तजि लाज॥ कैौ नरवर रति

सुतके काज॥५॥सुखद वचन रानी यौं सुनै॥दुख करि रा
जा मन में गुनै॥दोहा॥वज्र तुल्य उर में लगी तरुणी की
यह बात॥वरनी कानन कीकथा विकल देह अकुलात॥
॥६॥ पांडु उवाच॥सोरठा॥ मृग नयनी के रूप रिषिनी रिषि
रति रवत में॥ हयो कह्यो यौं भूप द्विज के उर शर मूर्द्ध
में॥७॥दोहा॥ दयो श्राप रिषि यौं कह्यो ज्यौं छांडे मैं प्रा
न॥त्यौं तरुनी संजोग तें मरन आपनो जान॥८॥यौं सु
नि त्रिय लरखरि गिरी तनकी नहीं संभार॥ सुधि आई
बोली तबै यहि विधि बारंबार॥९॥दंडक छंद॥ किधौं हेम
हस्यौ आप मान कस्यौ विप्रन को किधौं धन धस्यौ जाको
ताहि मैंन दीनो है॥ किधौं मैंविछोयो काहू तरुनी को प्रा
न पति किधौं निंद निगम के गुरुको दोष लीनो है॥हो
म मैं बुझायो तन चरत बिडारी धेनु झूठी साखि बोली
के वचन महा हीनो है॥ कुंती के विलाप कहै दीनो रि
षि श्राप जाको अंग अंग ताप ऐसो कौन पाप कीनो
है॥१०॥राजा उवाच॥दोहा॥ होन हार सोइ है रहै नहीं
सु मेटी जाइ॥सावधान के वचन कहि राखी त्रिय स
मुझाइ॥११॥इहि विधि बीते दिन घने चिंता करी भु
वार॥ किहि विधि उपजै बंस गृह होइ सकल सुख
सार॥१२॥ कुंती उवाच॥देव अकर्षन मंत्र मोहि दी
ने रिषि दुर्वास॥ तुम आयसु लै जो भजौं सो आवै मो
पास॥१३॥ धर्म जपन पति तब कह्यो तरुनी सोंसुख
पाइ॥ आज्ञा लै सुमिरन कियौ सो पहुंच्यौ छिन आ
इ॥१४॥ राख्यौ इहि संजोग तब रही महल मंझार॥
धर्म असीस दई घनी इहि विधि बारंबार॥१५॥

धर्म उवाच ॥ चौपाई ॥ तेरे गर्भ होइ सुत ऐसो ॥ षोडश क
ला चन्द है जैसो ॥ धर्म्म धुरंधर धर्महि जानै ॥ दत्तसत्त के
सब मग ठानै ॥ १६ ॥ भूमि भोगवै इक छत्त राज ॥ सब वि
धि सारै जगके काज ॥ यह कहि धर्म गयो सुर लोक ॥
गर्भ धर्यो त्रिय नासे शोक ॥ १७ ॥ दसवें मास पुत्र प्रव
तर्यो ॥ मनो अतनु तनु भूमें धर्यो ॥ जैसे शब्द प्रका
शहि भयो ॥ धर्म जन्म माहि मंगल भयो ॥ १८ ॥ दोहा ॥
निसि दिन नारी नर सबै गावहिं मंगल चार ॥ होत
वधाई छत्र कहि नृपति पांडु दरबार ॥ १९ ॥ तब बूझे
नृप ज्योतिषी कहिये लगन विचार ॥ कौन महूरत
सुत भयो सो बरनौ विस्तार ॥ २० ॥ ज्योतिषी उवाच ॥
शुभ दिन शुभ घटिका भयो भाग्य वंत बहु होय ॥
एक छत्र महि भोगवै आरि कहुं बचै नकोय ॥ २१ ॥
दंडक छंद ॥ सज्जन को हुलास कार दुर्जन को नाश
कार मित्रन विलास कार पृथ्वी को सिंगार है ॥
मित्र को विश्वास कार पातनि विलास कार भिक्षु
क अवासकार भूमि भरतार है ॥ जग जाको आस
कार शत्रु को विनासकार दीननिकोजसकार रतन
भंडार है ॥ पुन्य को प्रकास कार पापनि को नास कार
नृपता को भास कार धर्म अवतार है ॥ २२ ॥ दोहा ॥
उपज्यो पूरन भाग्य ते तुम गृह सुत बल बंड ॥ उन्न
त सकल प्रवीन गृह भद्दनि दंड ॥ २३ ॥ इहि
सुख दिन बीते किते नृपति पांडु इक काल ॥ क
ही बोलि रानी तबै देव अकर्षन बाल ॥ २४ ॥ जा प्र
साद सुत दूसरो प्रगट होइ मम गेह ॥ मो आपस

अब उर धरौ भूपति कस्यौ सनेह॥ २५॥ जप्यौ मंत्र वोल्यौ पवन अंतह पुर एक धाम॥ तहां भयौ संजोग तव गर्भ धस्यौ हठि वाम॥ २६॥ सुदरी छंद॥ पूरन मास भयौ प्रगट्यौ सुत॥ काम सरूप सु शोभनि संजुत॥ [illegible] वात सवै सुनि॥ व्यास भजे तिहि वार महा मुनि॥ २७॥ आय गये रिषि राज तहां तव॥ जो निय वैन कहे तिनसों सव॥ सो वरु दै रिषि राज महा मति॥ सोई करौ प्रगटै सुतया गति॥ २८॥ व्यास उवाच॥ दोहा॥ सीसन धुनि सुनि वात यह देखु पराये ऐन॥ आपु कियौ सो पाइये कहे व्यास यह वैन॥ २९॥ दीन्ही हरषि असीस तव व्यास महा रिषि राइ॥ गंधारी को गर्भ तव प्रगट भयो तहं आइ॥ ॥ ३०॥ जहां शैल के शिखर पर कुटी रिषिनि को धाम॥ कुंती लहि भीमहि गई कीने अमित प्रणाम॥ ३१॥ सन्मुख गाज्यौ सिंह तहं भीम सेन तिहि काल॥ हुलसि गोद तें तव गिस्यौ पाहन पै उत्ताल॥ ३२॥ अरु हूं क्यौं ज्यौं जलद धुनि सुनि हरि गयो पराय॥ सुनि गंधारी मूर्छित गिरी धरणि अकुलाय॥ ३३॥ [illegible] दिन को गर्भ होय मूर्छि गयो तेहि काल॥ पस्यो पिंड सो धरनि पर अंग अंग वे हाल॥ ३४॥ भयो कुलाहल सदन में भजे व्यास [illegible] हितकारी ता वंस के तवही पहुंचे आय॥ ३५॥ [illegible] वरनि सवै विधि दासी कही॥ सो सव सुनि मुनि हिरदै लही॥ करि सत अंश पिंड के धरे॥ [illegible] सवनि में तव संचरे॥ ३६॥ सो घट घृत भरि लये मंगाय॥ प्रति घट अंस पिंड सुरख पाय॥ [illegible] एक एक गुण ग्राम॥ धरे सु अंतह पुर इक धाम॥ ३७॥ व्यास सिधाये तव रिषि रा

३॥करि गंधारी के चित चाउ ॥ पूरण मास गये जब बीति ॥ खोले घट आनंद समीति ॥ ३८॥ प्रथम जन्म दुर्जोधन लयौ॥ दूजे घट दुशासन भयौ॥ तीजे दूरध बहु सुकुमार ॥ रूप वंत ज्यौं सोवत मार ॥ ३९॥ चौथे घट उपज्यौ दुहुं वैन ॥ मानो तन धरि आयौ मैन ॥ इहि विधि करि सत भये कुमार ॥ शील वंत राचे कर तार ॥ ४०॥ दोहा॥२॥२॥

आनंद भौ धृतराष्ट्र गृह जहं तहं मंगल चार ॥ कंचन भू षन हेम नग पावत मंगन हार ॥४१॥ सब पुरमें आनंद भयो मन भायो सब लेत ॥ हरषि हरषि कै सकल विधि सबै असीसनि देत ॥४२॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ कहौ बिदुर आनंद मति जनम लग्न को भाउ ॥ तुमते और प्रवीन को हित कै बोल्यौ राउ ॥४३॥ बिदुर उवाच ॥ मैं बिचारि - देखी लगन कही नमोपै जाय ॥ मेरो बिलगु नमानिये सब बिधि देहुं बताय ॥४४॥ जेठो सुत ऐसो भयो भलो न करिहै काज ॥ कुलहि कलंक लगाइहै अरु खोवै सब राज ॥४५॥ नाराच छंद ॥ भलो बुरो गनै नहीं समूह गोत्त संघरै ॥ लहै नसीख एकहू सबै कुकर्म सो करै ॥ नराखु पुत्र भूप नीर मांहि सो बहाइये ॥ सदा अलीनता करै सुगेह मैं नचाहिये ॥४६॥ भये कितेक पुत्र और राज काज ते करैं ॥ बिचार और है न भूप बैन मो मनै धरै ॥ गंधारी उवाच ॥ न बो लि मूढ़ कूढ़ सो भलो न तोहि भावई ॥ बोलाय तोहि लीजिये इसो सु क्यौं न जावई ॥४७॥ दोहा ॥ भीषम बिदुर उठे तहीं यौं कोहि कै अकुलाय ॥ जेठो सुत कुल संघरै कुलहि कलंक लगा- य ॥४८॥ चौपाई ॥ दिन दिन बाढ़त वेसो भाई ॥ यह सब पंडु नृपति सुधि पाई ॥ फूले अंग अंग दीनो दान ॥ सब जाचक को राख्यौ मान ॥४९॥ इति श्री महा भारत पुराणे बिजय - मुक्ता वल्यां कबि छत्र सिंह बिरचि तायां दुरजोधन अवता र बर्णनो नाम चतुर्थो ऽध्यायः ॥४॥ इति आदि कथा बर्ण नम ॥ भुजंगी छंद ॥

दई पांडु आज्ञा तहां बोलि भामैं ॥ जपौ इंद्र को मंत्र आवै सु कामैं ॥ कस्यो शक्र को ध्यान सो गेह आयो ॥ भलो दृष्टि सं

गसों सुरव छायो ॥ १ ॥ भये मास पूरे भयो पुत्र नीको ॥ सवै
संक नासे नसे शोक जीको ॥ महा पांडु नरपत्ति आनंद ही
को ॥ वधायो कियो दान दीन्हो दुनीको ॥ २ ॥ राजाउ वाच ॥
कहौ ज्योतिसी पुत्रकी लग्न कैसी ॥ सुनावो सवै मो घरीहो
य जैसी ॥ ज्योतिसीउ वाच ॥ सुनौ भूप ऐसी घरी की निकाई
चहूं चक्र फेरै धरामें दुहाई ॥ ३ ॥ छप्पै ॥ वाणनिक्षत्र अ
कास नाट सुर पुर को ठानै ॥ देवनि करि आतंक भूमि ऐरा
वत आनै ॥ सरसमूह सो सेत सिंधुको मारग मंडहि ॥
लंकहि पुर वर जीति लंकपति घरू करि दंडहि ॥ छत्रध
त वरनषत वर अंतक सो जीतै समर ॥ तीनि भवन कीर
ति करहि शुभ लच्छन सुनपंडु घर ॥ ४ ॥ दोहा ॥ को हर दु
म तन सुत भयो अर्जुन पायो मान ॥ मन भायो कारज करै
जीति वहु संग्राम ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ अर्जुन जन्म भयो जव सुन्यो ॥
तव गंधारी माथो धुन्यो ॥ कुंती पुत्र वली सव जाये ॥ पंडु राय
गृह वजे वधाये ॥ ६ ॥ फिर भूपति मन में यह आई ॥ इंदु वदन
त्रिय निकट वोलाई ॥ आयसु मानि हमारे लेव ॥ जपो मंत्र फि
रि आवै देव ॥ ७ ॥ कुंतीउ वाच ॥ मंत्र न जापौं पति गुण ग्राम
पुत्र वली प्रगटे तुम धाम ॥ पंच पुरुष सो जारति मानै ॥ तासौं
गनि का कहैं सयाने ॥ ८ ॥ तुम अज्ञा तें यह विधि कीजै ॥ देव
वुलाए उरमति धरो ॥ जो यह पति को कह्यो न कीजै ॥ घोर
नर्क तो आप परी जे ॥ ९ ॥ पांडु उवाच ॥ दोहा ॥ देहु माद्री
को यही मंत्र विचक्षण वाम ॥ तो प्रसाद सुत पावई हो
य सकल मन काम ॥ १० ॥ तव अश्विनी कुमार को मं
त्र दियो तिन वाहि ॥ सुमिरत्ति आयो देव तहं कोटि म
दन छवि जाहि ॥ ११ ॥ भयो सहज संजोग तहं गर्भ भ

सौ तिहि वाल ॥ करि मन पूरण कामना देव गयो तिहि काल ॥
१२॥ उपजे ताके गर्भ तें रूप वंत सुत दोइ ॥ मंगल चार भ
ये सदन आनद्यौ सब कोइ ॥ १३॥ चौपाई ॥ सुर किन्नर कौं
तुक चाल आये ॥ व्योम विमान सकल छवि छाये ॥ कोटि
काम छवि वरनि नजाई ॥ निसु दिन आनंद होइ वधाई ॥ १४
जेठे सुत को सहदेव नाम ॥ लहुरे नकुल लसै छवि काम ॥ क
है ज्यौतिषी सुनि भुव राइ ॥ पुत्रन के गुन कहौ सुनाइ ॥ १५
जेठो वली सकल जग जानै ॥ जाको वल सव दुनी वखानै ॥
पंडित ह्वैहै आगम कहै ॥ मान सकल अरि गण को दहै ॥
१६॥ खांडे वली नहुसरो होइ ॥ महि मंडल जानै सव कोइ
भये सयाने पांचौं भाइ ॥ वहुतक दिन जव गये सिराइ ॥
१७॥ दोहा ॥ दरस्यो स्वप्न अरिष्ट तव एक द्यौस नर नाथ ॥
स्याम वरन देहे रदन तिहि त्रिय पकरे हाथ ॥ १८ ॥ चलि
चलि कंता यौं कहै वारंवार सुनारि ॥ कारो नरु ठाढो लख्यौ
केस भूमि लौं डारि ॥ १९ ॥ छाया लखी सरीर की दिन सि
र देखी देह ॥ जागत ही नर नाह उर भयो महा संदेह
॥ २०॥ जप तप दान किये घने पंडित विप्र वुलाय ॥ सा
त्विक दान दये तहां सवही को सुख पाय ॥ २१ ॥ तीन
द्यौस अंतर भये कीनो नृप वहु दान ॥ पुहुप वती मा
द्री भई तव कीन्हे असनान ॥ २२ ॥ पति की सज्या
को चली करि षोड़स सिंगार ॥ नवल चीर आभरण
वहु कंकन तर वनि हार ॥ २३॥ सवैया ॥ खंजन की ग
ति गंजन नैन करी दृग अंजन रेख निकाई ॥ भूषन
के मुक्तानि के हार सिंगार सजी सव सुंदर ताई ॥
पीन उरोज मुखी सव देह मनोज के ओज सरोज

सो छाई॥चातुर काम की पातुर सी अति आतुर ह्वै पति पास सिधाई॥दोहा॥इंदु वदन त्रिय पति निरखि कामातुर अकुलाइ॥दंपति रति मानी हरषि रिषि के वचन नसाइ॥२५॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
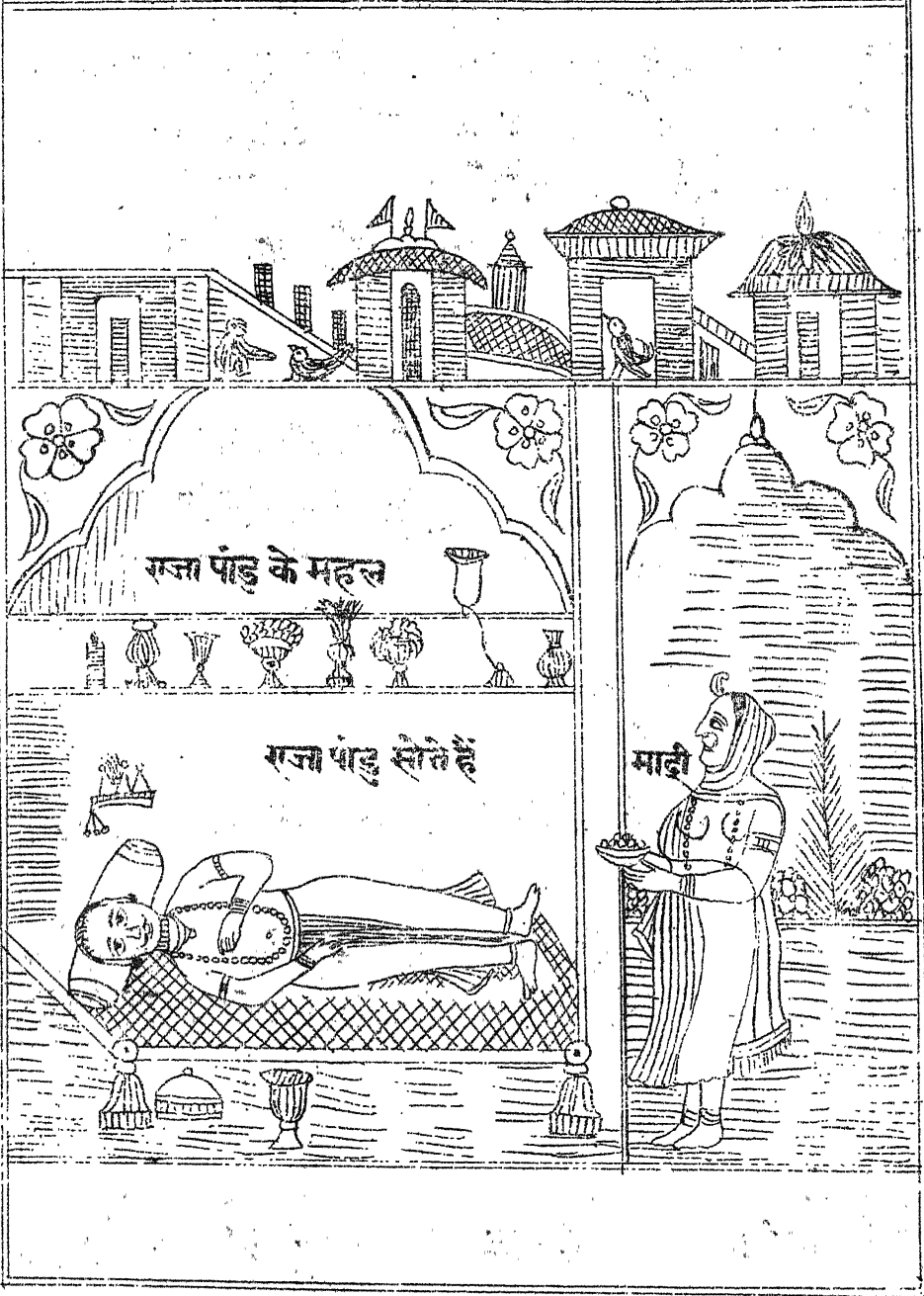
तवहीं सुख संजोग मे भूपति छांड़े प्रान ॥ अंधकार दुख को जगत भूप अथयो भान ॥ २६ ॥ शोक कुटुंबिनि के भयो नर नारिन उर दुःख ॥ रह्यो न चारो वर्ण में काहू के उर सुःख ॥ २७ चौपाई ॥ रिषिन आय कुंती समुझाई ॥ करता गति सो कहा वसाई ॥ सहदेवन कुल माद्री लए ॥ मोह छांडि कुंती को दए ॥ २८ ॥ माद्रीउवाच ॥ ज्यौं अपने तीनो सुत जानो ॥ त्यौंमो पुत्रन सों हित ठानो ॥ यह कहि उठी शीघ्रही कामिनि ॥ भूपति संग भई सह गामिनि ॥ २९ ॥ जब यह सुधि भीषम को गई ॥ सहित विदुर बहु चिंता भई ॥ कीनो पांडु नृपति को सोग ॥ खान पान बहु भूल्यौ भोग ॥ ३० ॥ दोहा ॥ चलि आये ते इंद्र पथ समुझाये नर नारि ॥ लै पांचौ पुत्रनि चले कुंती जुत सुख कारि ॥ ३१ ॥ नगर हस्तिना पुर गये सब ही लै सुख पाइ ॥ गंधारी उर सुख भयो देखत बहु पछिताइ ॥ ३२ ॥ गंधारीउवाच ॥ दुर्जोधन की सब करौ सेवा तन मन लाइ ॥ आधी नृपता लै जिये धर्म पुत्र सुख पाइ ॥ ३३ ॥ इति श्री महा भारत पुराणे विजय मुक्तावल्यां कवि छत्रसिंह विरचिता यां अर्जुन सहदेव नकुल अवतार वर्णनो नाम पंचमो ऽध्यायः ॥ ५ ॥ ॐ ॥

॥ दोहा ॥

दुरजोधन को आदिदै सत बंधव बल बीर ॥ इतहि पंच सुत पांडु नृप तेखेलैं इक तीर ॥ १ ॥ राखत उर मे दुष्टता कौरव भांति अपार ॥ ताको बारुनबांकरई जो सहाय करतार ॥ २ ॥ मत्त सहस दश भीम बल दीनो त्रिभुवन नाथ ॥ चाहत बांध्यौ ताहि बल जुरि कौरव इक साथ ॥ ३ ॥ सुंदरी छंद ॥ मंत्र कियो इहि भांति सबै
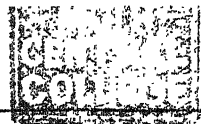
जन॥भीमहिबांधो दैहढ बंधन॥याहि दयो विधि आव मह्ना वर॥
मारत ताहि अनाथ जुधिष्टिर॥४॥बिनहि बंधु कछू करि जानहि॥
जो कहिहैं सोइ आयसु मानहि॥तेसरिता तट खेलत हैं सुत॥
कौरव पांडव आनंद संजुत॥५॥कौन हरावहि भीमहि को बर-
साजहु बार कछू अपनो छर॥सोवत बांधो दै दृढ बंधन॥गं
गबहा बहु याहि ततछन॥६॥दोहा॥भीमसुवायो सदन में
सत बंधव सुख पाइ॥दृढ़ बंधन सो बांधि करि चाहत लयो
उठाइ॥७॥रह्यौ मुष्ट करि पवन सुत देखत तिनके भाइ॥
के से सोये मूढ़ मति मोको सके उठाइ॥८॥पचिहारे बंधन सबै
सके नताहि उठाइ॥दुर्जोधन अद्भुत गन्यौ अवलो कौ
सो आइ॥९॥दुर्जोधन वाच॥प्रथम कह्यो तुम प्राण
बिन फिर यह बांधो आइ॥अबकंटक मेरो मिट्यो
दीजे गंग बहाइ॥१०॥बरु करि लयो प्रजंक जुत दूसा
सन धरि शीस॥चले बहावन सुरसरी संग बंधु दशबी-
स॥११॥डारो गंग प्रवाह में देख्यौ को सक जात॥
दुर्जोधन सो आयके कही सकल बिधि बात॥१२॥-
चौपाई॥सब कौरव मन आनंद भयो॥अब निज सा
लहमारो गयो॥अब वे चारों बंधु अनाथ॥दीजैचारि
ग्राम नर नाथ॥१३॥जो कहिहो सो सेवा करि हैं॥
अब नहिं गर्ब कछू चित धरि हैं॥बंधन तोरि भीम तब
धायो॥कौरव जहां तहां चलि आयो॥१४॥सुंदरी छंद॥
देखत ही कुम्हि लाय गयो सब॥केतिक भागि चले ग्रह
को तब॥बोलत है सब कौरव या गति॥खेल कियो हम
बंधु महा मति॥१५॥खेल कियो तुम सो हम जान्यौ
॥हांसिन आप बिसा सहि ठान्यौ॥५॥६॥

भूप जुधिष्ठिर आयसु मानहु ॥ नातरु आजु सबै तुम जानहु ॥ १६ ॥ दुरजोधनउवाच ॥ गंग वहाय दयो जब तू इनि ॥ मोहि भई उर में रिस यो सुनि ॥ मैं पठयो दइ बैन तहां तब ॥ तू चलि आय गयो कित हू अब ॥ १७ ॥ गीतिकाछंद ॥ करी झूठी सोंह इन कछु नाहि मोहि जनाइयो ॥ खोलि बंधन फांसि चलिकै भलं मो ढिग आइयो ॥ भीम सेन उवाच ॥ करौं भूपति कानि तेरी धर्म सुत सिख मैं लई ॥ नातरु बचौं कत मोहि सेरत जाय रिसि क्यौं आगई ॥ १८ ॥ कहि बैन ये चलि सदन आयो आइ माता सों कही ॥ अंध सुत मिलि दुःख दीनो सो परे कैसे सही ॥ जानि कै वे क्षुधित मो सब बचन ककस उचरैं ॥ जब करत हौं मुख धर्म सुत की आन वे सब पजरैं ॥ १६ ॥ बांधि कै गंगा बहायो दया फिर जिय मे भई छोरि बंधन सकल दीने बाट गृह की मैं लई ॥ कुंतीउवाच ॥ मानि दुरजोधन महीपति कानि तिन की कीजिये ॥ जो कहै नर नाथ सोई मानि आयसु लीजिये ॥ २० ॥ क्षुधित जान्यौ भीम जब आहार लै आगे धयौ ॥ भार के ते अन्न बिंजन तसहू भोजन कयौ ॥ उदर पूरण कै उठ्यौ बहु बस्त्र बसननि साजिकै ॥ उठि गयो कौरव की सभा तब दुरद सो गल गाजिकै ॥ २१ ॥ देखिकै कुरुराज आदर हेत सो बहु बिधि कयौ ॥ छरस भोजन कयो तुम हित सो रसोई में धयौ ॥ प्रीति तुमसो मोहिये अरु सकल अनुजनि के हिये ॥ निस द्यौस देखत तोहि आनंद छिनक बिछुरे नाजिये ॥ २२ ॥ बिदुर उवाच ॥ दोहा ॥ सब कौरव की दृष्टि छमि बिदुर कही यह आन ॥ तू कित आयो भीम त्यों बिष

ज्यौनारहि खान ॥२३॥ सवैया ॥ आवत हौं बहुतै दुचितौ ल-
खि तोहि पसीजि चल्यौ अंगहू है ॥ मानतु नाहिं सबै मिलि
जागत दुःख दियो बहु ना कछु है ॥ भोजन कीनो महा
बिष संजुत आवहि तू कत बावरी है ॥ धर्म के नंदन -
जैसे बचावत काल बचाउतु हू दिन है ॥२४॥ भीमउ
वाच ॥ दोहा ॥ सिंघ छवन कहि क्यौं जिये जो कहुं पंछी
खाय ॥ मेरे कृस को ध्यान उर काल कहां निय्यराय ॥२५॥
कही नृपति सो मोहि तुम जोनाहि अघ बाइ ॥ सकुचि छां
ड़ि भोजन करौं बिदुर गृह जो जाइ ॥२६॥ दुश्शासन उठि
तुरत ही बिदुर पठायो धाम ॥ जेवत्त बैठ्यौ भीम तब
सजे सकल मन काम ॥२७॥ दंडक छंद ॥ रसहू अन
रसहू में हांसी अरु खेल हू में गृह अरु बाहिर नेक
मन ख्रच्यौ ॥ दुष्ट दुरजोधन हलाहल कै आधे आधु -
ताके हिये दुष्ट तानि भाजन है रच्यौ ॥ ल्याइ ल्याइ आ
मिख अनेक पकवान तहां खारनि खारि के समूह
आगे सच्यौ ॥ कीनी न गलानि सों बखानि कवि छत्र
कहै जानि बूझि पवन पूत सोई बिष पच्यौ ॥२८॥
दोहा ॥ जितनो ल्यावत खार कछु डार लगै नबार ॥
बच्यौ रसोई में नकछु जेयें कैयो धार ॥२९॥ दोधकछंद
भीम चल्यौ तबहीं गृह आयौ ॥ कंचन पालकि धाम -
बिछायौ ॥ सोइ रह्यौ मन आनंद कीनो ॥ सोधि तहां सत्त
बंधर लीनो ॥३०॥ रैन गई तब कोर ब धार ॥ कुंतलकी
तनया ढिग आये ॥ सोवत भीम कहां सुख पायो ॥
खेलन को अब क्यौं न जगायो ॥३१॥ जागि उठ्यौ
चलि सो तहं आयौ ॥ दुष्टन के मन सं भ्रम छायो ॥

कहौ तुम सों मति भाउ ॥ चौसर पांच में लीजै दाउ ॥ [illegible] मेरे
है महा पिरात ॥ तातें मोपै चल्यो [illegible] ॥ ४२ ॥ दुशासन उ
बाच ॥ बक सो अंत कहूँ [illegible] भाउ ॥ तब हम छांडै अपनो
दाउ ॥ ठाढ़े भीम सेन यों [illegible] दाउ बिरानो कैसे राखे ॥
॥ ४३ ॥ दयो दुशासन दंड [illegible] ॥ परौ सो कोस एक पै जाय
॥ ढूंढ़त भीम लाय यों तहां ॥ कौरव बंधु हुते सब जहां ॥
॥ ४४ ॥ दुशासन फिरि उतरौ धाइ ॥ चाहत दंडहि देऊ
चलाइ ॥ पकरौ भीम बीचही आय ॥ सक्यौ न दूरि दंड पहु
चाय ॥ ४५ ॥ तब दुशासन बट को धायो ॥ आध पर पवन
पूत कुपायो ॥ उतरि दाउ दुशासन दीजै ॥ अब कछु लोभ
न आपन कीजै ॥ ४६ ॥ दोहा ॥ सब मिलि बट पर चढ़ि
रहे सुने नहीं कोउ बात ॥ भीम गह्यौ द्रुम मूल तब हर्ष
वंत है गात ॥ ४७ ॥ गहि यों गाढ़ी डार को रहि यों सबै
सम्हारि ॥ पवन चलायो [illegible] तब सकल गिराये मारि
॥ ४८ ॥ दंडक छंद ॥ एक परे [illegible] मुख एक गिरे उर्द्ध
मुख धुकि धुकि परत धरा धर धरकत है ॥ एक लोट
पोट ह्वै के चोट खाइ [illegible] उठे एक आध पर साखा
गहे लरकत है ॥ एक [illegible] उठि भागत है डारि-
डारि कंपि कंपि थर थर [illegible] फरकत है ॥ अंध
सुत बंधु सत डारि औ डारिनि ते [illegible] ह्वै घूमि-
घूमि भूमि परे [illegible] है ॥ ४९ ॥ [illegible] बराइ गृह
को भजे गहे भीम [illegible] ॥ सब कौरव [illegible] गयो
उबरे हाहा खाय ॥ ५० ॥ [illegible] मही पाल को सब बीती
कथा सुनाइ ॥ रोस वंत [illegible] भयो सुनि कै बहु-
दुख पाइ ॥ ५१ ॥ इत [illegible] ॥ दोहा ॥ सुन्दर

वैर न कीजिये रहो सकल अगाह ॥ तौला जौं सुनि जो उन्है ठौर न देहु छुटाह ॥ ५२ ॥ इति श्री महा भारत पुराणे विजय मुक्ता वल्या कबि कृत विरचिता यां - भीमसेन कौरव संबाद बर्णनो नाम षष्ठो ऽध्यायः ॥ ६ ॥

सोरठा ॥ खेलत येकहि साथ कौरव पांडव अनुज सब भारत कंदुक हाथ जैसे ससा बहीर को ॥ १ ॥ दोहा ॥ उछरी कंदुक तिहि समय परी कूप में जाय ॥ काढ़न को सब बंधु मिलि साजत किते उपाय ॥ २ ॥ गीतिका छंद ॥ कूप तट रिषि द्रोन आये निरखि या बिधि सों

कढ़े॥ नहीं हैस्समरत्थ कोऊ काढ़ि कंदुक को लहै॥ बंस क्षत्री की लज्या वत जतन नहिं करि आवही॥ काढ़ितुम को देहुं यह चण सीक जो कोउ लावही॥ ३॥ आनि आपी सींक ताकरि धनुष तानि तिहिं कस्यौ॥ बाण ताहीको रच्यौ तिहि काल धनु ऊपर धस्यौ॥ लग्यौ कंदुक माहि सो सर साक दूजो कर लयो॥ करि कर्म अद्भुत वेगि देइवु माहि हीदृष सोदयौ॥ ४॥ दोहा॥ यहि बिधि बेधी सींक सो सींद कूप मंझार॥ आन सींक गहि काढ़ि यो गेंद छन तिहि बार॥ ५॥ चौपाई॥ देखत सकल अचम्भे रहै॥ समाचार भीषम सौं कहै॥ लयो पितामह बिदुर बुलाई॥ द्रोण विप्र ढिग पहुंचे आई॥ ६॥ लैहित आये आपने गेह॥ करि सनमान रच्यौ बहु नेह॥ सब सिसु तापहं विद्या पढ़ै॥ दिन दिन चाउ चौगुनो बढ़ै॥ अस्त्र शस्त्र विद्या सब जानी॥ बिदुर पिता मह के मन मानी॥ तिन में अर्जुन भो अधिकारी गुरप्रसाद पायो गुण भारी॥ ८॥ दोहा॥ देख्यौ चाहतसिसुन को तब गुरु द्रोण प्रभाउ॥ कस्यौ अखवारो सदन मे बोले राजा राउ॥ ९॥ त्रोटक छंद॥ रबि पुत्र तहां तब कर्ण गयो॥ कुरु नंदन साथ मिलाप भयो॥ अति आदर भाउ बिसेख कस्यौ॥ हित सो नरनायक [illegible] कस्यौ॥ १०॥ गज दंतनि के बहु मंच बने॥ बहु भिन्न बिचित्र अवास घने॥ बैठे पितामह आदि सबै॥ निरखैं सिसु को तुक लोग सबै॥ गुण की रचना प्रगटी जबही॥ लखि अद्भुतवर नत लोग तहीं॥ भट और न अर्जुन की सरि हैं॥ गहि के धनु को समता करि हैं॥ १२॥ यह बात सुनी

दुर्जोधन जबही॥प्रगट्यौ उर कोप महा तबही॥धनु लै तब अर्जुन पास गयौ॥अवलोकि सुरांघहि छाइ गयौ ॥१३॥ कर्ण उवाच॥ तोमर छंद॥ अब समर मोसों माडि सब देहु बातनि छांडि॥ सजि बाण तूड्डर डारि॥ अब पांडु पुत्र सम्हारि॥ अर्जुन उवाच॥ साजि तो कहु बान। यह नाहिं मेरो स्थान॥ निज होइ भूपति कोय॥पुनि-समर तासो होय॥१५॥दोहा॥ कैसे कहौं बराबरी मोसों तोसों आय॥ तूसुत है निज सूतको नही अवनिपति राय॥१६॥ सुनि दुर्जोधन कोपकरि आयौ करण भुव राय॥टीको नृप ताको कस्यौ सुभ घटिका सुख पाय। ॥१७॥ सवैया॥ अर्जुन के सुनि बैन सरोष तहां कुरु राज महा रिस भीनो॥ देस दियो सब कोसु दियो बहु बाजि दै साजि कै वाहन दीनो॥ भूषन दै गज भूषन भूपति भूप कियो कबि छत्र नवीनो॥ राज दियौ सुख साजि दियो सब काज के कर्ण महीपति कीनो ॥१८॥ दोहा॥ जुरे कर्ण नर नाह तब अर्जुन सों करि जुद्ध॥ दुहूंओं धनुर्धर धीर अति करत अमित गति जुद्ध॥ ॥१९॥ देखै जननी पुत्र बिधि करत दृष्टि सब लाल कही महा अकुलाय सुत दोऊ राखि गुपाल॥२०॥ पांच बार धर मूरछो कर्ण सुभट बलि वंड॥ बार सात अर्जुन धुको बिक्रम कियो अखंड॥२१॥ दोऊ बरजे द्रोन गुरु दोऊ सिसु इक सार॥ राखि अखारो सम दियो लोग सकल तिहि बार॥२२॥ दुरजोधन लै करण को गये आपने धाम॥ आजु पैज राखी महा सुनि रबि सुत गुण ग्राम॥२३॥

द्रोणाचार्य उवाच ॥ चौपाई ॥ धनि धनि सुरपति सुत
सुखदाई ॥ सबते तुम पौरुष अधिकाई ॥ यह कहि
अपने कंठ लगायो ॥ ह्वैहै तोतें जो मन भायो ॥ २४
जाडर करण करयो नर नाह ॥ तोहि निरखि दुरजो
धन दाह ॥ गुरु दक्षिणा सकल मिलि देहु ॥ द्रुपद
जीति मेटौ संदेह ॥ २५ ॥ अर्जुनउवाच ॥ जो आज्ञा
मोहि देहौ आप ॥ सोई करि हौं तुम परताप ॥ प्रथ
महि दुर्जोधन सो कहो ॥ यह गुरु दक्षिना उनपै लहो
॥ २६ ॥ जोवे यह करि सकै न आजु ॥ तब सारोंगो हौं
सब काजु ॥ यह सब कही द्रोण तहँ जाय ॥ कौरव
सजी चमू सुख पाय ॥ २७ ॥ कियो द्रुपद सो सन्मु
ख जुद्ध ॥ तब पंचाल कियो बहु क्रुद्ध ॥ बाननि जु-
र्यो समर भुव आइ ॥ अंबर लीनो तन छिनवाय ॥
॥ २८ ॥ टुंडक छंद ॥ द्रुपद सो जुरे अंग सोदर सकल
संग लीनो रण रंग महा सूरनि के गण में ॥ बाननि
आकास छाय दोउ समुदाय जुद्ध क्रुद्ध बाढ़ौ अति
दुहू बीरनि के मनमें ॥ केते सरजाल को प्रयोग कि
यो पांचाल कौरव बिहाल काहू धीर नहीं तन में ॥
सेना अकुलानी देखि राख्यौ छत्र कुल पानी लेखि
पांडु पुत्र पाँचौ तहाँ आइ गाजे रण में ॥ २९ ॥ दोहा
अर्जुन करि संग्राम बहु जीतो सो नर नाथ ॥
आन्यौ बांधि सु गुरु निकट चकित भयो [illegible]
॥ ३० ॥ चौपाई ॥ डारौ गुरुके चरननि सोई ॥ देख्यो अ
द्भुत गात सब कोई ॥ बाल मित्रता की सुधि करी ॥
विप्र द्रोण करुणा हिय धरी ॥ ३१ ॥ आनि हित भूप

ति कंठ लगायो॥ तुम तें भयो सकल मन भायो॥ धनि अर
जुन गुरु द्रोण पुकारे॥ तो बिनु मो कारज को सारे॥३२
युधिष्टिरउवाच॥ सुनि अर्जुन सोदर गुण ग्राम॥ आजु
करो नीको संग्राम॥ भयो हमारो सब मन भायो॥ दुर
जोधन को गर्भ नवायो॥ ३३॥ द्रुपद राय बिलख्यो गृह
गयो॥ महा सोच उर अंतर भयो॥ द्रोणहि हित कै
परिहू सुसारैं॥ ऐसे कोटि बिचार बिचारैं॥३४॥ पुत्र
प्रिरवंडी ताके धाम॥ तातें सरै नहीं मन काम॥ जज्ञा
रम्भ बोलि द्विज कीनो॥ भूपति अति करुणा रसु
भीनो॥ ३५॥ दोहा॥ जज्ञ कुंड ते तब कढ़ी कन्या रूप
निधान॥ कै रति सची पुलोमजा है मेन का समान॥
३६॥ नाम द्रोपदी तब भयो निरखत दुहित्ता नैन॥
धृष्ट दुवन पुनि कुंडते कढ़ौ पुत्र जनु मैन॥ ३७॥
द्रुपद उवाच॥ या कन्या या पुत्र तें ह्वै है सब मन काम
पूरण करि कै जज्ञ को हर्षो भूपति धाम॥ ३८॥ तब
ही जज्ञ सिराय के सब समंद रिषि जाल॥ बर्णा बर्णा
सुबरण सहित्त सुरभी देति हैंकाल॥ ३९॥ इति श्री
महा भारत पुराणे बिजय मुक्ता वल्यां कबि छत्र सिं
ह बिरचिता यां अर्जुन बिजय वर्णनो नाम सप्त
मोऽध्यायः॥७॥

दुर्जोधन उवाच॥ त्रिभंगी छंद॥ कहा मति कीजे क्यों
जग जीजे बे सब कीजे उर धरिये॥ कछु मंत्र विचारैं जे
ज्यो हारैं भीमहि मारैं सो करिये॥ कछु विंजन की
जे बहु विष दीजे बोलि सुलीजे भोजन कों॥ सुनि
धावन धाये॥ तुरतहि लाये बहु भाये भूपति मनकों

॥ ३ ॥ अति आदर की जो बहु सुख भीनो ताहि तबै ॥ मन सुख भये भारे आंध दुलारे आय जुहारे बंधु सबै ॥ निस दिन तुम आवत मन करि आवत सरसावत आनंद घने ॥ सबही सुख पायो नेह बढ़ायो मन भायो वह को बरनै ॥ २ ॥ भीम सेन उवाच दोहा ॥ सेवक जानत मोहि तुम कृपा करत सब कोइ ॥ ताते दिन प्रति को इहां आवन को मन होइ ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ सहस लाष पनवारो आयो ॥ पवन पूत जेवन बैठायो ॥ दस बीसक जन परसत धाई ॥ सोई लेय छिनक में खाई ॥ ४ ॥ दंडककंद दुष्टता को पूर अति तामस को मूर महा क्रूर दुरजोधन रहतु तासों क्रोध में ॥ काल कूट फोरि फोरि जोरि जोरि केते बिष घोरि घोरि डारे बहु भोजन असेष में ॥ व्यंजन अपार भोजन के यो भार आनि कीनो हलाहल आधे आधु दुर्योधन में ॥ लावत ही हारि जात खार जेतो डारि जात भीम सेन खाय जात पातरि निमेष में ॥ ५ ॥ सवैया जद्यपि आनत चित्त कछू नहिं जद्यपि भाव महा छल को ॥ जाननि जानतु भोजन स्वातु नहीं डरु ताहि हलाहल को ॥ भोजन व्यंजन वृंद घने सु किते कनि जेयन लग्यो पल को ॥ दृष्टि इतै उत सोन करै नकरै सुतौ पान कहूं जल को ॥ ६ ॥ दोहा ॥ भोजन करि बीरा लयो चल्यो आप ने गेह ॥ छाय गयो तिहि काल विष अंग अंग सब देह ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ पवन पुत्र जब बाहर आयो ॥ जान्यो भीम महा बिष खायो ॥ आई लहरि गिरो बिकराल ॥ तब लहि सोवत बारंबार ॥ ८ ॥ तीनो मोलघु सादर आइ ॥ तिन को इन सों कहा बसाइ ॥ भूपति मन में नेक न क्रोध ॥ कौरव सों को करै बिरोध ॥ ९ ॥ यों सुमिरत

दोहा॥ बासुकि दुहिता आहिमैं आहिल मती सो नाम॥
गवरि कृपा पाये पुरुष मो गृह करि बिश्राम॥२७॥
अब अपनी सब विधि कहो कोहो आप निदान॥
कौन बंस का नाम है किहि कारण ह्यां आन॥२८॥
भीम सेन उवाच॥ सोम बंश हम सुखद निय छत्री जाति
सुजान॥ भूपति जंबू दीप के माहि मंडल में आन॥
२९॥ तव संग दीसैं ब्याल बहु कहो कौन यह भाउ॥
जिते तिते ये देखियत सो सब बरनि सुनाउ॥३०॥ *॥
आहिल मती उवाच॥ ये पियूष के कुंड नव जग की
जीवन मूरि॥ रखवारे तहं सर्प बहु रहे चहूं दिसि
पूरि॥३१॥ भीम सेन उवाच॥ दोधक छंद॥ मैं अब कुं
ड सकल लखि पाये॥ सोखौं सबै करौं मन भाये॥
आहिल मती तव बिनवै ताहि॥ यह कछु बातन
नीकी आहि॥३२॥ जैहैं ब्याल किते लिपटाइ॥ रंच
क सुधा सको नहि खाइ॥ करि बिवाह जो मोसों
लेहु॥ जानि हितू मानै सब नेह॥३३॥ दंडक छंद॥
भारे भारे ब्याल महा कारे कारे बिकराल काल हू के
काल जहां तहां छाइ जायंगे॥ आनन की ओर जे
श्रवत बिष ज्वाल जोर घोर घोर चहूं ओर कहां
धौं समाइंगे॥ सप्त मुखी एक आह मुखी ते अनेक
एक एक मुखी आसी बिष आइ लपटाइंगे॥ जोर
दोऊ हाथ कहौं मानो प्रान नाथ प्यारे देखि ऐसे
साथ कैसे धीरज धराइंगे॥३४॥ नाराच छंद॥ दुरै
न मंत्र मूरि एक एक ब्याल जोड सें॥ करौ विचार
कौन आप संग आय जो रसैं॥ कछु सुनै ननारि

बात भीम सेन यों कहै ॥ सरोष मोहिं देखि कें कहो सु कोइहां रहै ॥ ३५ ॥ भुजंग प्रयात छंद ॥ लखे कुंड नैना नि सोखो अबै हौं ॥ सबै नाग के जूथ को त्रास देहौं ॥ चल्यौ धाय कें नारि यों चित्त सोचै ॥ करै दुःख सोनीर नैना नि मोचै ॥ ३६ ॥ अहिल मती उवाच ॥ कहा कर्म कीनो मुया मैं जियायो ॥ दुहूं भांति सों काल है स्वान आयो ॥ करै जो कहूं यह पराजै पिता की ॥ बिनासै किधौं - जुद्ध मैं देह याकी ॥ दुहूं भांति मोको महा दुःख हैहै ॥ अभै दान मोको कृपा सिंधु दैहै ॥ महा क्रोध है पवन को पूत धायो ॥ हते नाग सो कुंड में पैठि आयो ॥ ३७ महा क्रोध कीनो सबै ब्याल धाये ॥ चहूं ओर घेरे सबै कुंड छाये ॥ उठ्यो कोपि कें भीम धायो तहांते ॥ भगे नाग सो नैन देख्यो जहांते ॥ ३८ ॥ दंडक छंद ॥ एक मारे तोरि कें मरोरि मारे एकै नाग एकै मारे मींडि कें कहा लौं कहौं करनी ॥ एकै धाय कै धुकाय दये धांवतहीं धर धर धर कत है एकै परे धरनी ॥ एकनि के कारे फन फर फर फर कत थर थर कंप भगे एकै लैलै घरनी ॥ भागि भागि एकै गये बासुकि नरे श आगे जायकै अकह कह बात सबै बरनी ॥ ३९ ॥ नागउ वाच ॥ चौपाई ॥ आयो असुर एक अति भारी ॥ कोंहू न मानत आन तुम्हारी ॥ कुंड एक क रि लीनो पान ॥ मारो सब नागनि को मान ॥ ४० ॥ सोखन कुंड सकल कहे कहे ॥ परयो काल सो सूझि तहै ॥ बासुकि कहै असुर नहिं होई ॥ नृपति जुधि ष्ठिर बंधव सोइ ॥ ४१ ॥ भीम सेन है ताको नाम ॥ कीहै

थल जीत्यौ तिहि संग्राम ॥ ता बिनु हतो बली को और ॥ सोम-
बंस सुभटन सिर मौर ॥ ४२ ॥ दोहा ॥ जुधिष्ठर नर नाह की
देइ दुहाई धाइ ॥ भीम सेन कुंडल निकट सकै ननीयरे जाइ ॥
४३ ॥ चौपाई ॥ आय रजाइस धामन धायो ॥ तुरतहि पवन पु
त्र ढिग आयो ॥ आनि युधिष्टिर नृपकी दीनी ॥ कानि
भीम कुंडनि की कीनी ॥ ४४ ॥ भीम सेन उवाच ॥ जौ
न दुहाई देते आई ॥ कुंडल सकल होते सौखाई ॥
कौने तुमे बता यो भेद ॥ यह मन में बहु उपज्यौ खे
द ॥ सुधि पाई बासुकि उठि धाये ॥ भीम सेन तब
कंठ लगाये ॥ बहु सुख संजुत लै गृह गये ॥ अष्ट कु
ली मन आनंद भये ॥ ४५ ॥ दोहा ॥ शुभ घटिका शुभ ल-
ग्न गनि शुभ बासर शुभ बार ॥ अहिल मती भीमहि
दई करि बिवाह सब चार ॥ ४७ ॥ पाइ दाइजो ब्याहि
कै बिधु बदनी बर नारि ॥ हिय हुलास कीनो महा
बदन मयंक निहारि ॥ ४८ ॥ बहु प्रताप पूरण कला भी
म सेन ज्यौं भान ॥ फूलति लखि अंबुज मुखी सब गुण
रूप निधान ॥ ४९ ॥ सोरठा ॥ धर्म पुत्र भुव राय सह
देव सों यह कही ॥ यह संदेह मोहि आय भीमहि भ
यो बिलंब बहु ॥ ५० ॥ सहदेव उवाच ॥ गयो बीर पाताल
भू पर नहीं सु भूमि पति ॥ कौरव कर्म कराल करि
भोजन में बिष दयो ॥ ५१ ॥ दोहा ॥ दीनो गंग बहाइ
सो परौ पतालहि जाइ ॥ बासुकि तनया तिन बरी
रहत तहां सुख पाइ ॥ ५२ ॥ पठयो धावन भूप तब
पहुंच्यौ भवन पताल ॥ बोले हो तिन सों कही
जुधिष्टिर भूपाल ॥ ५३ ॥ पवन पुत्र मांगी बिदा

बातु किपै सुख पाइ ॥ नाय मीस तिन को चल्यो अहिल मती संगलाइ ॥ ५४ ॥ चौपाई ॥ सब नागनि मारग दरसायो निकसि भीम भुव ऊपर आयो ॥ धर्म पुत्र के आनंद भयो कुंती को सब दुख मिटि गयो ॥ ५५ ॥ सकल अनुज मिलि आनंद ठयो ॥ महा दुखित कुरुनंदन भयो ॥ दयो दुष्ट सुरसरी बहाई ॥ कहो कहां ते प्रगट्यौ आई ॥ ५६ ॥ सकल जगत अपजस ह्वै गयो ॥ अब यह सात्रु हमारो भयो ॥ अब कछु ऐसो करो विचार ॥ भीम सेन को सकिये मार ॥ ५७ ॥ राजा युधिष्टिर उवाच ॥ दोहा ॥ अंध सुतनि को मान हति कियो सुजस संसार ॥ गांधारी को गर्ब अब गयो बार इहि बार ॥ ५८ ॥ इति श्री महा भारत पुराणे विजय मुक्ता वल्यां कवि छत्र सिंह विरचितायां भीम सेन बिबाह बर्णनो नाम अष्ट मोऽध्यायः ८

दोहा ॥ आश्विन कृस्ना अष्टमी नर नारिनि की भीर ॥ पूजन गज नारिनि सजे भूषन बसन शरीर ॥ १ ॥ महा मलिन कुंती भई अर्जुन निरखी नैन ॥ कहा बिसूरति आज तुम सो कहि मोसों बैन ॥ २ ॥ कुंती उवाच ॥ मेरे पांचों पुत्र तुम वै सत बंधु बिचारि ॥ सौ गौंदा ले आवहीं सकल मृत्तिका डारि ॥ ३ ॥ करि गज पूजे आजु सो गंधारी सुख पाइ ॥ तिन सों हम सों कौन विधि करौ बराबर जाइ ॥ ४ ॥ अर्जुन उवाच ॥ पंच पुत्र तेरे बली क्यों मलीन बिचारि न ॥ ऐरा वत आनों दुरद तेरे पूजन हित्त ॥ ५ ॥ सवैया ॥ काहे को माय बिसूरति याबिधि बान अनेक तनि अंबर छाऊं ॥ बाट करौं सर जाल परै नभ भूमि अकासहि मेंद कराऊं ॥ मान हतौं दुरजोधन को

बल कौरव को सब गर्व नवाऊं॥ आनो भुजा बल सों
ऐरावत अर्जुन तौ तुव पुत्र कहाऊं॥६॥दोहा॥ करि
प्रणाम गुरु द्रोण को लीनो धनुष उठाय॥ हित ऐरावत
सुरपुरी दीनो बाण पठाय॥७॥ अर्जुन इषु देवन लखि
कह्यौ इंद्र सुनि लेहु॥ तुम सुत मांगत तब दुरद करो
कृपा सो देहु॥८॥ जोन देहु ऐरावतै तौ यह चरु करि
लेहु॥ अमर पुरी भट भंजि के दुख देवनि को देहु॥९॥
देन कह्यौ वारण सुनी देवनि की मनु हारि॥ क्यौं धरि
जैहें स्वर्ग तें सो सब कह्यो बिचारि॥१०॥ चौपाई॥
सब देवन मिलि बाण पठायो॥ भूतल अर्जुन के ढिग
आयो॥ ऐरावत को मारग कीजे॥ इहि विधि आरग आ
पन लीजे॥११॥ अर्जुनउवाच॥ बाण अनेकनि अंबर
छाऊं॥ ऐरावत को बाट बनाऊं॥ इंद्र सभामें बाण पठा
यो॥ देवनि इंद्रहि जाइ जनायो॥१२॥ दोहा॥ आज्ञा
सुरपति तब दई सारिव दये सुर पाल॥ पूजा करि प
ठवै इहां वारण याही काल॥१३॥ आयो पत्री भूमि को
अर्जुन लखिये भाइ॥ निकसि नगर तें सुभट तब लीनो ध
नुष चढ़ाइ॥१४॥ करि प्रणाम गुरु द्रोण को हरिहि सीस
नवाइ॥ सर पंजर पूर्‌यो तबै लयो व्योम सब छाइ॥१५॥
सवैया॥ व्योम को पठाये बाण प्रथम सहस्र एक दूसरै स
हस्र दश स्वर्ग को पठाये हैं॥ तीसरैं अयुत पांच चौथे ल
क्ष एक सर एक कोटि पांचये आकाश माहिं छाये हैं॥
षष्टमे करोर दश अर्ब एक सातयें सुकहां लौं बखानौं
सर जाल जेते धाये हैं॥ पूर्‌यो सुर लोकतें धरा लौं सर पं
जर बिलोकि अंध पुत्र सत बंधु तें सताये हैं॥१६॥

॥२६॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ धनि अर्जुन तैं राखि यो लोकलोक मैं नाम ॥ अब न करैं गे गर्व वे रहे ससौके धाम ॥२७ दुर्जोधन को आदिदै भये गर्व करि हीन ॥ नैक सुहाय न धाम धन छिन छिन है गये छीन ॥२८॥ गंधारीउवाच ॥ कहा भयो सुत सो जने सरै न तिन सो काम ॥ जायेअर्जुन भीमउनि धनि धनि कुंती बाम ॥२९॥ देखि पराक्रम इकुन के लखो नही कुस रात ॥ सैहैं तुमतें राज वे यह सूरति है बात ॥३०॥

अर्जुनने बाणोंसे स्वर्ग का मार्ग बनाया

अर्जुन

ऐरावत

कुंती

दोहा॥लाज भई दुरजो धनै दूसासन के चित्त॥ याके - अमित्त प्रकार करि कुंती पुत्रनि हित्त॥ ३१॥ सवैया॥ राज सुहाय नकाज सुहाय नलाज सुहाय नहीं मनमा हीं॥ ग्राम सुहाय न धाम सुहाय न बाम सुहाय हिये - सुधि नाहीं॥ देस सुहाय नकोस सुहाय सुकौरव के म न रोम सुधा हीं॥ खान सुहाय नपान सुहाय सुहाय न पंडु के पुत्र की छाहीं॥ ३२॥ दुरजोधन उवाच॥ दोहा॥ अर्जुन भीम भये बली कीजे कछु उपाइ॥ सब मिलि ऐसो कीजिये सालु हमारो जाइ॥ ३३॥ इति श्री महाभा रत पुराणे बिजय मुक्ता वल्यां कबि छत्र सिंह बिरचि तायां ऐरावत आगमनो नाम नवमो ऽध्यायः॥ ९॥ ❀॥

॥दोहा॥

गंधारी भ्राता सकुनि बोलि लयो अकुलाय॥ भीषम रूप बोले बिदुर मंत्र काज सुख पाय॥ १॥ दुरजोधन उवाच जैसे छीजें पंडु सुत सो मति कहो बिचारि॥ बीचहि - बोले सकुनि तब देहु गेह में जारि॥ २॥ बरुन नगर - लै कोटि रचि तामें दीजे बास॥ चहुं दिसि अगिनि - पजारिये होइ सबनि को नास॥ ३॥ चौपाई॥ भीष म मंत्र कहन नहिं पायो॥ सकुनि कह्यौ सो नृप मन भायो॥ सम सौ सोई कोटि करा वहु॥ बेगहि चलो चार जनि लावहु॥ ४॥ सवैया॥ तेल भरे घट आनि धरे घृत्त के भरि कै घट केते सवारे॥ तूल है मूल मेंसर अपार सुलाख मिले किये गंधक गारे॥ अंतर सूत निरंतर काठ बनाय के पावक धाम सुधारे॥ चित्रि त चित्र सवारि दिवालनि देखिये सदन सबै उजियारे

॥५॥दोहा॥वर्ष दिवस बीते सकुनि कह्यौ नृपति सौं आय॥ सपरयो मंदिर पंडु सुत दीजै तहां पठाय॥६॥ गीतिका छंद॥बोलि लीने बिदुर भीषम लै सभा बैठारियो॥नृप युधिष्ठिर आदिदै सब पंडु पुत्र हंकारियो॥बात भीषम पै कहाई मानि आयसु लीजिये॥तुम हेत मंदिर बरणा रच्यो बास तामैं कीजिये॥धर्म सुत के हर्ष उपज्यो तुरत सब रथ पर चढ़े॥राज आज्ञा मानि कैं जुत मातु पुर बाहिर कढ़े॥बिदुर साथ चले पठावन सकल सिक्षा ते कहैं॥बैठि कै पर सदन में निश्चिन्त भूपति ना रहैं॥ ॥८॥चौपाई॥अति सचेत रहियो गृह माहीं॥आप उठायो तुम वह नाहीं॥जाय बासुना गृह की लीजो॥आप सूरू तौ सब कुछु कीजो॥९॥पेठन भेद जु कोई आवै॥सोनहि भेद कछू लखि पावै॥बुधि दै बिदुर गये फिरि ग्राम॥ पहुंचे नृप चलि ताही धाम॥गेह प्रबेस कियो भुवपाल॥सनमुख छीक भई तिहि काल॥सह देव कहै सुनो महराज॥रहहु इहां नहिं नीको काज॥११॥नकुल उबाच क्यौं न हस्तिना पुर पगु धारो॥जिय में कहा बिचार बिचारो॥कही भूप उहि पुर नहि जैहैं॥दुख सुख बीर इहां हम रैहैं॥१२॥यह दुख बिदुर पितामह पायो॥सो आनि उर आनंद छायो॥बिदुर कह्यो सबतें सो देख्यो॥पावक पुंज धाम सो लेख्यो॥१३॥सावधान निस बासर रहैं॥मरम न काहू सौं कछु कहैं॥दुरजोधन प्रतिहार बुलायो॥भेद सकल दै ताहि पठायो॥राजा उबाच॥हम सौं आनरस करि तुम जाहु॥जहां जुधिष्ठिर रहैं नर नाहु॥ भूमे रुपाने सो वारो धाम॥करि हौ सब

तुम पूरण काम ॥१५॥ सुंदरी छंद ॥ आयसु पाय गयो वह ता थल ॥ जाय प्रणाम कियो पलही पल ॥ और कहे दुरजोधन के दुख ॥ पेर विश्वास कहै हित की मुख ॥ १६ ॥ दोहा ॥ बचन सम्हारे बिदुर के कपटी उर पहिचानि ॥ सब बिधि सकल सचेत है कह्यो पवरि मग आनि ॥ १७ ॥ मालती छंद ॥ भीम सिधायो सुरंग खनायो ॥ बन कहं कीनो पंथ नवीनो ॥ १८ ॥ चौपाई ॥ हमहिं भरे ज्यों कौरव जानौं ॥ ऐसे सब मिलि कै मति ठानौं ॥ भिक्षुक पंच दिवस इक आए ॥ जननी इक संग ते लाए ॥ १९ ॥ देखि भीम यों कहे बिचारी बनमें जाहिं इन्हें यों जारी ॥ बहु बिधि भोजन तिनहि कराए ॥ उत्तम ठाम तहां पौढ़ाए ॥ २० ॥ दोहा ॥ जबही बीती अर्द्ध निशि सोवत सबही जानि ॥ कही भीम नरनाह सों चलौ बिपिन सुख दानि ॥ २१ ॥ सुरंग बाट सब मिलि कढ़े लै जननी लिहि काल ॥ लैपावक तब पौरि पर भीमहु गयो उताल ॥ २२ ॥ ऊंक दई प्रति हार सिर दीनी पौरि जराइ ॥ महल महल परि जारि कै गयो भूप पै धाइ ॥ २३ ॥ दोधक छंद ॥ बाट लई बन को उठि धाये ॥ मंदिर दुर्गम कोटि कराये ॥ मूंदि गयो मग कोउ न जानै ॥ जात चले थकि के हह राने ॥ भीम महीपति कंध चढ़ाये ॥ पार्थ नबे उर सों लिपिटाये ॥ बंधव दोइ लये एक धारी ॥ सीस धरी जननी सुख कारी ॥२४॥ लै दश कोस गयो बन माहीं ॥ भय जिन के मन में कछु नाहीं ॥ धाम जर्‌यौ सुनि कै कुरु राई ॥ बैठिसभा

वह ते पछि ताई ॥ २६ ॥ मुख बाढ़ौ आनिही उर माहीं देखत लोगनि के पछि ताहीं ॥ साल मिलो उर को यह जान्यौ ॥ क्रुद्ध भयो तब दै करि पान्यो ॥ २८ ॥ दोहा ॥ नयो जन्म जान्यो तबै सत बंधव उर फूल ॥ बड़ी कृपा करता करी नसे हमारे सूल ॥ २९ ॥ उन पांडव बन को गये उतरे बट की छांह ॥ सब सोये [illegible] जागे भीम सेन बन मांह ॥ ३० ॥ नर देही की बास [illegible] आई बिय गल गाजि ॥ नाम हिडंबी राक्षसी घोर महा बपु साजि ॥ ३१ ॥ तन दीरघ दीरघ उदर दीरघ दंत कराल ॥ दीरघ मुख दीरघ श्रवण दीरघ [illegible] सुबाल ॥ ३२ ॥ आई गर्जत नारि वह भीम न मानी संक ॥ तरवर ले सामही गयो करी नभय कछु अंक ॥ ३३ ॥ देखत साहस भीम को भई परम बपु बाल राका शशि षोड़श कला रूप लख्यौ तिहि काल ॥ हिडंबीउवाच ॥ दोधक छंद ॥ मो मन रोचक आपुन मानो ॥ आपु त्रिया करि कै उर जानो ॥ मैं तुम देखि बली बर कीनो ॥ नित्त बसों तब आयसु लीनो ॥ ॥ ३५ ॥ आइ हिडंब तहां तब गाज्यौ ॥ भीम हते द्रुम ले कर साज्यौ ॥ को कहि नारि कहां यह [illegible] ॥ भेद कछू नहिं मैं अब पायो ॥ ३६ ॥ हिडंबी उवाच दोहा ॥ मेरे बीर हिडंब यह कीजे जुद्ध निसंक ॥ कछु बिसमै जिय जिनि करो लज्या धरो न [illegible] ॥ ३७ नहिं गाजत धीरजु रहो तेरो बुद्धि निधान [illegible] कछु तेरो करे हति बरया है निदान ॥ ३८ ॥ भीमसेन उवाच ॥ चौपाई ॥ तेरे [illegible] भरोसो मो [illegible]

त रिस लागे तोहि ॥ जब याकी तू होहु सहाय ॥ तब कहि मेरी कहा बसाय ॥ ३९ ॥ हिडंबीउवाच ॥ दोहा ॥ जानति तोको प्राण पति नहि राखति चित और ॥ तोस म यामें बल नहीं हति हिडंब यह ठौर ॥ ४० ॥ भयो असु र अरु भीम सों अति गति मुष्टि प्रहार ॥ मल्लजुद्ध करि धर परे ह्वै दोऊ बिकरार ॥ ४१ ॥ निकट नपायो भीम जब जागे बंधव चारि ॥ निसचर सों मंडत समर अब लोकौ सुख कारि ॥ ४२ ॥ त्रोटक छंद ॥ अब लोक त भीमहि लाज भई ॥ तब दानव के भुज कंठ दई ॥ बरु कै वह दानव बीर हयो ॥ सब बंधव को बहु सुः ख भयो ॥ ४३ ॥ गीतिका छंद ॥ धर्म सुत को मांगि आयु सु सीख कुंती पै लही ॥ तब हिडंबी भीम ब्याही विधि करी जैसी चही ॥ रहत बीते दिन किते ता बिपन में सु ख साजहीं ॥ कंद मूल नि खात खनि खनि जीविका यों राखहीं ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ रहत किते दिन जब भये ताका नन के धाम ॥ पुत्र हिड़ंबी के भयो धर्यौ घटूका नाम ॥ ४५ ॥ बीति किते दिन तब गये तज्यौ बिपन वह ठाम छांडि घटूका ताथली पहुंचे इक चक ग्राम ॥ रूपक परिया को सजे रहे एक द्विज धाम ॥ उद्यम करि भोज न करैं सब बंधव गुण ग्राम ॥ ४७ ॥ इति श्री महाभा रत पुराणे बिजय मुक्ता वल्यां कवि छत्र सिंह बिर चिता यां घटूका जन्मवर्णनो नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

॥ त्रिभंगीछंद ॥

इक चक नगरी सबगुण आगरी कीरति बगरी सक ल दिशा ॥ पुर नर सब गाजत इहि विधि राजत साज

त सोक नद्यो सुनिपा ॥ मव कंपत थरथर बक दानव
डर घर घर सोच सकोच महा ॥ नित प्रति नर मारै
किते संघारै बरनौ निसचर कर्म कहा ॥ १ ॥ दोहा ॥
नास जानि पुर नर सबै तब यह कियो बिचार ॥ दिन
प्रति दीजै एक नर चैन लते संसार ॥ २ ॥ निसि चरसों
कीनो बिनै सबही मिलि तहं जाइ ॥ प्रति दिन को
तुव भक्ष हित नर एक पहुंचौ आइ ॥ ३ ॥ मानि बि
नय प्रति द्यौस को भक्ष एक नर लेहि ॥ जाको जबही
औसरा सो भक्षन देहि देहि ॥ ४ ॥ द्विज तरु-
नी के धाम जहं बसत युधिष्ठिर राइ ॥ ताके सुत
को औसरो पहुंच्यौ इक दिन आइ ॥ ५ ॥ ॥
सोरठा ॥ द्विज तरुनी अकुलाइ बार बार धर मूर्छै ॥
फिरि फिरि यह पछिताय क्यौंन कान्हि यह पुर
तज्यौ ॥ ६ ॥ दोहा ॥ मोह महा देखत भयो कुंती-
के उर आइ ॥ तत छिन वाको दुख कह्यो भीमहि पा
स बुलाइ ॥ ७ ॥ भीम सेन उवाच ॥ चौपाई ॥ याके-
सुत के पलटे जैहौं ॥ फिरि मिलि हौं जो जी बतैहौं
भोजन दानव हित जो भयो ॥ भरि कै महिष भीम
संग लयो ॥ ८ ॥ दानव ठौंड तहां चलि आयो ॥ बैठि
भीम तहं भोजन खायो ॥ धायो असुर क्रोध करि
भारे ॥ बज्र पात सम दो हथ मारे ॥ ९ ॥ दोहा ॥
मुष्टि प्रहार करौ असुर आपु शक्ति अनुसार ॥
भीम न आन्यौ चित्तमें भोजन भखे अहार ॥ १० ॥
॥ दोधक छंद ॥ भारत ही सब भोजन खायो ॥ संक
नहीं अपने उर लायो ॥ बीर दुहूं मिलि के रण

कीनो ॥ कोउ नहीं तिन में बल हीनो ॥ ११ ॥ जुद्ध भयो अति ही गति ऐसो ॥ राघव रावण को रण जैसो ॥ ग्रीव दयो पगु दुष्ट संघार्‌यो ॥ ऐंचि तबै पुर बाहिर डार्‌यो ॥ १२ ॥ दोहा ॥ ठाढ़ो कीनो पवरि पर मृतक असुर सो लाइ ॥ प्रात होत पुर नर सकल निरखि भगे अकुलाइ ॥ १३ ॥ सबही को संका भई सकैं न नियरे जाय ॥ है दानव निरजीव यह कही भीम तहं आय ॥ १४ ॥ भीमसेन ढिग जाय कै संभ्रम दियो भगाय ॥ यह गति जानी ब्यास मुनि तबही पहुंचे जाय ॥ १५ ॥ श्रीब्यास उवाच ॥ पवन पुत्र मार्‌यो असुर सब जग भयो चवाउ ॥ अब सिख मानो बेगि ही नगर कंपिला जाउ ॥ १६ ॥ मानि सीख रिषि ब्यास की तिहि पुर पहुंचे जाइ ॥ होत सगुन सह देव सों कही नृपति सुख पाइ ॥ १७ ॥ चौपाई ॥ कैसे सगुन भये अब भाई ॥ सो अब मोसों कहि समुझाई ॥ सुनहु गुसांई सगुन प्रभाव ॥ होइ लाभ चित चौगुन चाव ॥ १८ ॥ आमिष लीने देख्यौ स्वान ॥ गयो दाहिनो उत्तम जान ॥ लीनो अर्जुन धाय छुटाइ ॥ लाभ बहुत पहिचानो राइ ॥ १९ ॥ रहे सु कुंभ कार गृह जाय ॥ पंच बीर संग कुंती माय ॥ इहि बिधि बीति काल बहु गयो ॥ भूपति द्रुपद स्वयंबर ठयो ॥ २० ॥ दोधक छंद ॥ सोहत पंचनि की अवली अति ॥ देखत ताको मोहति है मति ॥ उज्जल हैं गज दंत महा छबि ॥ जोर मनो दुति बर्णत हैं कबि ॥ २१ ॥ आय जुरे भुव के सब भूपति ॥ है जग में जिनि की बहु कीरति ॥ कौरव सेन तहां सब सोहत्ति ॥ दीरघ सायर सो मन मो

हति ॥ २२ ॥ दोहा ॥ यज्ञ द्रुपद भूप कै भयो आये सब रिषि राइ ॥ रच्यो द्रोण गुरु जंत्र नभ एहा बेध बनाइ ॥ २३ ॥ रा स्यो परम कठोर धनु मीन जंत्र के पास ॥ है है सो समर त्य जरा बेधै जंत्र आकाश ॥ २४ ॥ चौपाई ॥ तप्त तेल सों भ री कराह ॥ राखो नीचे तब नर नाह ॥ तरे दृष्टि करि देखे काई ॥ मीन जंत्र जो बेधै आई ॥ २५ ॥ ताउर कन्या ताही काल ॥ वाही भूप यह डारै माल ॥ बारन चढ़ी फिरै सो बाल ॥ लीने हाथ पुहुप की माल ॥ २६ ॥ दंडक छंद बेनी ज्यौं फनीन्द्र और इंदु सो मुखार बिंद सन चंपक हास मोहत है मन को ॥ खंजन चपल गति भंजन है ऐन नैंन अंजन सहित मन रंजन है बनको ॥ अधर चिबुक चारु बाहु है सुढार कुच कनक कलस रंग कंचन सो तनको ॥ कदली के खंभ से जुगल जंघ छबि कोमल कमल जिमि बानिक चरन को ॥ २७ ॥ चौपाई देखि कुमरि सब उमहे राई ॥ करि करि गर्ब छुयो धनु आई ॥ तानि सकै नहिं सकै उठाई ॥ गये सब उनके मुंह कुम्हिलाई ॥ कौरव सब बंधव पचि हारे ॥ सबही के मुख है गये कारे ॥ दुर्जोधन तब सकुनिहि देखि ॥ करत धरषना कुमर बिसेखि ॥ २८ ॥ दुर्जोधन उवाच ॥ सवैया ॥ सूर नहीं सूरनि में कूर महा कूरनि में दुष्टता सों पूरण है पूर उर बाढ़ै को ॥ मूढ़ महा मूढ़नि में गुनिन मंत्र गूढ़नि में पगनि कि आरूढ़नि में संग्रह चवाई को ॥ ऐसो आगि बे को है कुटेव टेवटेकी जिहि तासों एक पैका जौन खोज है भलाई को ॥ नाहि बली बलिन में छली महा छलिन में सुदेखि

द्रोपदी का स्वयंबर होना तथा अनेक राजा बैठे हुए वहां ब्राह्मण
का भेष धरे पांचों पांडवों का जाना
कड़ाह पर
टंगी हुई मछ
ली तीर से वे
धना अर्जुन
का
अर्जुन
पांचों पांडव
राजा
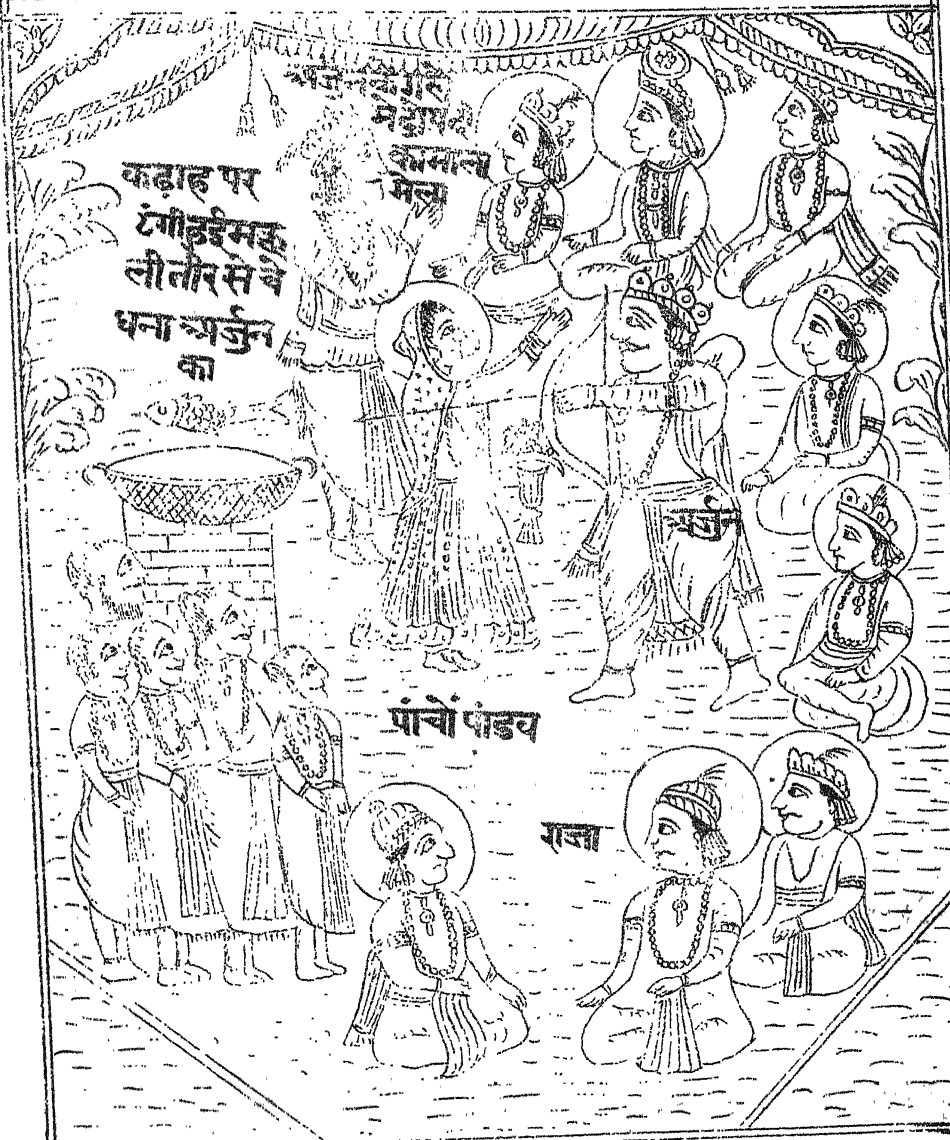
थे न मुख ऐसे कुटिल कसाई को ॥ ३० ॥ दोहा ॥ बारे ला
क्षा गेह में पंडु पुत्र दुहि जाइ ॥ होतो जीवत पार्थ जो ले तो+
धनुष चढ़ाइ ॥ ३१ ॥ जंत्र बार दश बेधतो महा बीर बल
वंड ॥ सुनि पुनि कोप्यो कर्ण तब बाढ़्यो कोप अखंड
॥ ३२ ॥ कर्ण उवाच ॥ जो मारों अब दुपद सुत कोन छुड़ा
वै तोहि ॥ मरो मर्म न तूलहै कानि भूप की मोहि ॥ ३३ ॥
॥ सोरठा ॥ चल्यौ कर्ण धनु पास बरजि कृस्न तब यों -
कही ॥ छांडि देहु यह आस बेध्यौ जाय न जंत्र यह ॥
॥ ३४ ॥ दोहा ॥ जो बेधो इक बाण सों तौ जग में जस
होत ॥ हारे होय कलंक बहु और लाजि हो गोत ॥ ३५ ॥
रूप कपरिया को कियें अर्जुन बचन प्रकाश ॥ नहीं स
भा समरत्थ कोउ बेधै जंत्र अकास ॥ ३६ ॥ दुपद उवा-
च ॥ चौपाई ॥ के भूपति के तपसी होई ॥ एहा बेध क-
रै जो कोई ॥ ता उर कन्या तेही काल ॥ डारै अमल
कमल की माल ॥ ३७ ॥ तब चलि अर्जुन आगे गयो ॥
धनुष चढ़ाय हाथ सों लयो ॥ अति कठोर जान्यो धनु
जबही ॥ भीम सेन मुख चाह्यो तब ही ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ भी
म सेन बलवंड गति अर्जुन की पहिचानि ॥ कोमल क-
रि धनु पार्थ कर दयो बार दश तानि ॥ ३९ ॥ लै धनु
गयो कराह तन इक टक ताहि निहारि ॥ झांई पाई मी
न की रह्यौ ध्यान उर धारि ॥ ४० ॥ दीठ मूंदि मन एक
करि बेध्यौ सो सर येक ॥ फोरि गयो इषु दृगनि
को कौतुक करत अनेक ॥ चौपाई ॥ चूकि गयो
नर एक बखाने ॥ बेधि गयो सर एक तें जाने ॥
बाल लियें कर मालहि आई ॥ अरजुन के तब

ही उर नाई ॥ देखत कर्ण महा रिस भीनो ॥ दारुण क
र्म महा इन कीनो ॥ ४१ ॥ लै तपसी अब याको जैहै
लाज सबै भुव पालनि ऐहै ॥ ४२ ॥ दोहा ॥ कर्ण चढ़ायो
कोपि धनु देखत सब भूपाल ॥ निरखि सोच उर
में भयो विकल भई उर बाल ॥ ४३ ॥ अरजुन उवाच ॥
सवैया ॥ चंद्र मुखी कत सोच करै जिय। गर्ब हरौं कुर
नंदन कोतो ॥ आजु करौं छिन में रण में जय जुद्ध जुरै ज
म आय कै जोतो ॥ हौं समरत्थ अकेलोइ बे किनि सोद
र जूझहि धायकै सोतो ॥ जोन बधौं तो लजाऊं पिता कहं
अर्जुन नाम कहाइ कौं तो ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ कोपे दोऊ बी
र रण रह्यो बाण नभ छाइ ॥ लोपे सूरज तम भयो उप
मा कही नजाइ ॥ ४५ ॥ देख्यौ करण प्रचंड रण पार्थ को
पि ज्यों काल ॥ रुद्र बाण बेध्यौ कवच बिकल भयो बे
हाल ॥ ४६ ॥ तबहि करण छांड्यौ समर जय जय करि -
तिहि काल ॥ दुरजोधन हूत भीम सो कीनो जुद्ध कराल ॥
४७ ॥ करणउवाच ॥ अरे कपरिया कौन तू मोसों कहि
सत भाइ ॥ तेरे सर ऐसे लगैं ज्यौं अर्जुन के घाइ ॥ ४८
यों कहि करण बराइ गो भिरे भीम भुव राइ ॥ मल्ल
जुद्ध करि बीर दोउ थाकि रहे अकुलाइ ॥ ४९ ॥ चौपा
ई ॥ बर करि भूपति भीम उछास्यो ॥ मल्ल जुद्ध करि भू
परछास्यो ॥ जय जय कार पार्थ तब कस्यो ॥ सम्हस्यो
भीम कोपि तब लस्यो ॥ ५० ॥ मास्यो गुरज गिस्यो भुव
राउ ॥ ठाढ़ो भीम करै नहिं घाउ ॥ चेति फेरि यों कहै
नरेस ॥ तू को सुभट तपी के भेस ॥ ५१ ॥ दोहा ॥ ऊ ॥
पवन पुत्र अरु पार्थ के ऐसे हूते प्रहार ॥ वै सोई मैं

तू लख्यो बल दीनो करतार ॥ सोरठा ॥ सह देव तहं आय ग
हि कर लै भीमहि गयो ॥ द्रुपद सुता संग लाय पहुंचे कुंती
निकट सब ॥५३॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ चौपाई ॥ सुनि सुनि मा
त महा सुखदाई ॥ आजु कछू हम भिक्षा पाई ॥ तुम आज्ञा
सब बंधुव मानैं ॥ सो तजि और न चित्तहि आनैं ॥ ५४ ॥ कुं
ती उवाच ॥ दोहा ॥ पांचौं बंधुन सों तम्है पुत्र आय बहु नेह ॥
जो कछु पाई भीख तुम बांटि सकल मिलि लेहु ॥ ५५ ॥ अ
र्जुन उवाच ॥ माता को सुनि सुखद प्रिय बचन न मेट्यो जा
इ ॥ मुख जोयो तब पार्थ को पंचाली अकुलाइ ॥ ५६ ॥ नि
रखी कुंती द्रौपदी मनही मन पछिताइ ॥ बचन अनैसो
मैं कह्यो पुत्र नसकैं नसाइ ॥ ५७ ॥ आये हल धर कृस्न
तहं जानत सगरो भाउ ॥ करि कुंती को बंदना मिले जु
धिष्ठिर राउ ॥ ५८ ॥ तब बिचारि कै द्रुपद नृप धृष्ट दुम्नन
सुत बोलि ॥ आप कपरिया को भये भेद लेहु सुत खोलि
॥ ५९ ॥ सुंदरी छंद ॥ नीच कि धौं कोउ उत्तम है नर ॥ कै ब
न में कि बसैं पुर सुंदर ॥ श्री जदु नंदन भूपति है जहं ॥
आय दुरो सुत भूपति को तहं ॥ ६० ॥ बात बितीत कहे
भुव भूपति ॥ कृस्न सुनी बहुधा हरखी मति ॥ पूछत पार्थ
हि यों जदु नायक ॥ तैं सुख आजु दयो सुख दायक ॥
॥ ६१ ॥ दोहा ॥ राहा बेध कर्यो भलो सुनि हो पार्थ सु
जान ॥ गर्ब नवायो करन को मारे कौरव मान ॥ ६
अर्जुन उवाच ॥ सवैया ॥ कष्ट पर्यो जबही जहं आय
के राखी तहीं सब पैज हमारी ॥ मांझ स्वयंबर द्रौपदी
के अति कर्णहि गर्ब बढ्यो तहं भारी ॥ जीति कै बीर
धनं जय धीर सु आजु लई बल कै बर नारी ॥ कीज

हौ मरतौ किहि भांति जो होते सहाय न आप मुरारी ॥६३॥ दोहा ॥ भलो दिखानो करण रण यहै सराहे उं ताहु ॥ भीम कहे करु राज हरि बड़ो बली यह आहु ॥६४॥ मैं अघ वायो जुद्ध मैं धनि दुर्जोधन राउ ॥ हनतो येक निमेष जो करते सबै सहाउ ॥६५॥ चौपाई ॥ धृष्ट दुम्न सबरी गति जानी ॥ कही पिता सों सब सुखदानी ॥ वे क्षत्री कुल उत्तम आहिं ॥ नहीं कपरिया जानो ताहि ॥६६॥ हरि हल धर तिन पै चलि आये ॥ देत बड़ाई बहु गुन गाये ॥ यह सुनि भूपति फूल्यौ हियो ॥ बिधना सब मन भायो कियो ॥६७॥ द्रुपद उवाच ॥ चामर छंद ॥ साजि साजि बाजि राज मत्त दंति गाजि के ॥ चर्म बर्म अस्त्र शस्त्र चीर द्रव्य साजिकै ॥ जायकै अवास द्वार बस्तु सो रखा दयो ॥ देखि के तपिनि को सुकर्म मर्म पाइयो ॥६८॥ दोहा ॥ आयसु दीनो भूप जो सोई कीनो जाइ ॥ मंडप छायो विधि स-हित मुक्तनि चौक पुराइ ॥६९॥ गीतिका छंद ॥ आइ कै त-हां पंच बंधव सकल सौ जनि हारियो ॥ नकुल लखि बाजी सराहे पार्थ धनु टंकारियो ॥ भीम फूल्यौ देखि कुंजर ख-ली सहदेव कर गह्यौ ॥ नृपति सब देखत सराहत हा-थ तिन कछु नालह्यो ॥७०॥ देखि या बिधि द्वार भूपति परम सुख हिरदै भये ॥ है देव गंधर्व कै कोऊ भेष तपसी को लये ॥ बोलि लीने पार्थ भीतर द्रुपद नृप सु-ख पाइ कै ॥ तब यों कह्यौ हँसि भीम जोहो प्रथम आहै आइ कै ॥७१॥ सुनि भयो बहु संदेह भूपति नीच कोऊ है महा ॥ पंच जन त्रिय एक ब्याहै भूलता बरनो कहा ॥ बोलि पठये ब्यास आये कही तिन सो बिधि सबै ॥

एक पति है धर्म पुत्री कही रिषि सों यह सबै ॥७२॥ दोहा॥
जेठो व्याहे जा त्रियहि लहुरे की है माय॥ लहुरे की त्रियजे
ठके सुता बराबरि आइ ॥७३॥ व्यास उवाच॥ सोम बंश ए
पंडु सुत एक जोति मन एक॥ पूरब जन्म सुरेश ए सुनि
ये सहित बिबेक ॥७४॥ पंच इंद्र इनि वहि जनम पायो
शिव बरदान ॥ पंडु नृपति गृह अवतरे क्षत्री रूप निधा-
न ॥७५॥ रिवि कन्या है द्रौपदी सेये शिव चित लाइ ॥
पंच कला कै देहु बर यह बांछौं सुख पाइ ॥७६॥ दिव्य
दृष्टि कै नृपति को दरसायो ब्यौहार ॥देखे ऐकै जोति
तहं पंच इंद्र अवतार ॥७७॥द्रुपद उवाच॥चौपाई ॥
तुम बिन को संभ्रम हि भगावै॥ तब छिति नायक रिषि
गुण गावै ॥नृप बिवाह की सब विधि ठानी॥ बोलि जु
धिष्टिर सब सुख दानी॥७८॥ तिन की भांवरि करि न
र नाह॥ फिरि चारों का कखो बिवाह ॥दुहूं कुलनि की
विधि ही जैसी॥ भांति भांति सब कीनी तैसी ॥७९॥
पंच पुरुष को कन्या दीनी ॥ बिदा दाइजौ दै करि की
नी ॥ हय हाथी पट भूषन घने॥ दासी दास दिये को
गने ॥८०॥ दोहा॥ लैदल परि गह गृह चले द्रुपद
फिरे पहुंचाइ॥ गये हस्तिना पुर सबै आप सदन सु
ख पाइ॥८१॥ सुनि दुर्जोधन के भयो अंग अंग अति
दाह ॥ नेक सुहाय नद्यौस निसि चकित चित्त नर ना-
ह ॥८२॥ इति श्री महा भारत पुराणे बिजय मुक्तावल्यां
कबि छत्र सिंह बिरचिता यां बक दानव बध द्रौपदी
बिवाह बर्णनो नाम एका दशो ऽध्यायः ॥११॥११॥
दुर्जोधन उवाच॥ दोहा ॥ ॥

ग्राम धाम आपनो लयो पांचो बंधव आय॥ कहो बंधु कीजै कहा इन सों कछु न बसाय॥१॥ बरुण नगर को आदि दै कीने कित्ते उपाय॥ तबहूं मुये न पंड सुत फेरि प्रगट भये आय॥२॥ तपी भेष आये हुते भूप द्रुपद अस्थान॥ हम काहू जाने नहीं मारे सब कै मान॥३॥ भीषम बिदुर बुलाय कै बूझे मंत्र सुजान॥ कौन उपाव करैं कहो सो मत देहु निदान॥४॥ भीष्म उवाच॥ अपकारी तुव बंधु नृप उनको कछू न खोरि॥ महा सयानो पवन सुत अवगुन सहै करोरि॥५॥ बरजो अपने सेवनि अवगुण करै न कोइ॥ अति सनेह तुमसो उनहि ताही दिन नृप होइ॥६॥ राजा उवाच॥ दोष लगावत हो हमैं उनको भलो सुहाइ॥ सकुनि कह्यो यह मंत्र तब बीच बैठि कै आइ॥७॥ कत्त बूझत भीषम बिदुर यहै मानि मन लेहु जो कछु उन को देस है उन्हैं आपु सो देहु॥८॥ गयो नृपति धृतराष्ट्र पै सुनि भूपति यह बात॥ सकुनि कही सोई कह्यो पितु के आगे जात॥९॥ बोलि जुधिष्टिर तब कही सुनि बिनयो सो मानि॥ रह्यो इंद्र पथ जाइ कै आपु ग्राम उर जानि॥१०॥ चौपाई॥ मानि रजायसु चले नरेशा॥ सुबस इंद्र पथ कीनो देशा॥ मनि मय खचित्त बने सब धाम॥ मनहु लसत सुरपति के ग्राम॥११॥ फटिक थंभ की जागति जोति॥ होइ सूर किरन निंतें होति॥ बापी कूप सुनीर तड़ाग॥ दिसि दिसि दीसत सुंदर बाग॥ कल्प बृक्ष से द्रुम मन मोहैं॥ फूले फलें छहूं रितु सोहैं॥ चंचल हय अति धाम बिराजैं॥ तम के सुत से कुंजर गाजैं॥१३॥ भाट भले बिरदावलि

गावत ॥ जो मन बांछित सोई पावत ॥ भूप जुधिष्टिर अज्ञा होइ ॥ चारों बंधु करत हैं सोइ ॥ १४ ॥ करत सबै आनंद मन भाये ॥ एक द्यौस नारद मुनि आये ॥ आदर करि बहु आसन दीनो ॥ तब रिषि बचन प्रगट यों कीनो ॥ १५ ॥ तीनिहु लोक जातु हों जहां ॥ अति आतिथ्य करत सब तहां ॥ मेरो बचन नमेटै कोइ ॥ जोई कहों बहै पै होइ ॥ १६ ॥ रिषिरुवाच ॥ तुम हो सोदर पंच सनेह ॥ तरुन द्रौपदी है तुम गेह ॥ मिलि सब बंधव यह मन धरो ॥ मो आगे सब बाचा करो ॥ १७ ॥ जौलों बीति जांय षट मास ॥ एक रहै द्रौपदी अवास ॥ अवधि मांझ दूजो जो जाइ ॥ बारह वर्ष होइ बन ताइ ॥ १८ ॥ सब ही मिलि कै आज्ञा मानीं ॥ स्वर्ग सिधाये रिषि सुख दानी ॥ प्रथम नृपति की बारी भई ॥ पंचाली सज्या पर गई ॥ १९ ॥ द्विज की सुरभी चोरनि लीन्ही ॥ आय कुकार बिप्र तहां कीन्ही ॥ सुनै न कोऊ लगे गुहारि ॥ सो तब धयो पुकारि पुकारि ॥ २० ॥ द्विजउवाच ॥ ॥ छप्पय ॥ क्षत्री कुलहि कहाइ आप जग अपजस लावत ॥ सुरभी बिप्र गुहारि क्योंन तुम पापी धावत ॥ कायर है कित रहे मूढ़ तुम धामनि गहि गहि ॥ और न जानै नाम रटै यह अर्जुन कहि कहि ॥ त्रीय काज सुरभि द्विज काज जो नहि इन को उप करहि ॥ द्विज दोष लगै तापुरुष कों घोर नरक में सो परहि ॥ २१ ॥ अर्जुन उवाच ॥ दोहा ॥ रहि रहि बिप्र सुजान तू जात न दै नर नाथ ॥ बिनती करि तबही चलों लै कृपान धनु साथ ॥ २२ ॥ सोरठा ॥ धनु न हमारे हाथ धरों सबन

में बिप्र तहँ ॥ द्रुपद सुता नर नाथ पौढ़े ताही धाम में ॥२४॥ तोटक छंद ॥ द्विज एकहु बात नमानतु है ॥ मुख बैन कुबैन न आनतु है ॥ रचि कै सब बात बनाव न छोड़हु ॥ लहि पाप महा सिर आपहि ओड़हु ॥ डरि आपहि सो अकुलाइ मनै ॥ चित में द्विज को अपमान गनै ॥ नृप धाम गयो धनु बानु जहां ॥ हग ओझिल बाद दई जु तहां ॥ तबहीं बर बीर चल्यौ धनु लै ॥ मुकराइ दई सुर भी बलु लै ॥ रिषि नारद बैन धरे मन में ॥ हित तीरथ बेगि चलो बनमें ॥ २५ ॥ अब लोकि सुदेव नदी जबही ॥ हित मज्जन पत्थ धसौ तबही ॥ लखि नाग सुता लगि दृष्टि रही ॥ अवलोकि तहीं तब बांह गही ॥ २६ ॥ गहि ताहि पतालहि लै सु गई ॥ वह ब्याल सुता अति मोह भई ॥ तुम तो वर ईश्वर मोहि दये ॥ अति निष्ठुर क्यों तुम नाह भये ॥ २७ ॥ अर्जुन उवाच ॥ रिषि नारद को हम बैन लसो ॥ अब या विधि तीरथ पत्थ गह्यो ॥ व्रत भंग महा तिय अंक भरे ॥ बहु तीरथ की हम जात करे ॥ २८ ॥ यह आपने जी महं नेम धरों ॥ फिरि तो कहं सुंदरि आइ वरों ॥ इमि ब्याल सुता तब बात कहै ॥ इहि भांति नहीं तुव धर्म रहै ॥ २९ ॥ चलि हौ मम बैन नसाइ जबै ॥ पुनि जाय अकारथ धर्म सबै ॥ पुनि ता संग पत्थ बिवाह भयो ॥ तहं केतिक द्यौस बिराम लगो ॥ तिय नाम उलूपिहि गर्भ भयो ॥ सुत मन्मथ ज्यौं अवतार लयो ॥ उर तीरथ की तब सुद्धि भई ॥ कहि पत्थ तबै गहि बाट लई ॥ ३० ॥ उलूपी नाग कन्या उवाच

सुनु प्रान पती इक बात कहौं॥किहि भांमिनि हौं कुष्टलात लहौं॥द्रुम दाडिम को रसस्वाद दयौ॥ज ब जानहु जू यह सूखि गयो॥३२॥दोहा॥तब संदेह भो प्राण को कीजो नागरि नारि॥आयो निकसि पतालते तीरथ हेत बिचारि॥३३॥सोरठा॥ नैमिषार चलि जाय परसि बनारस को गयो॥वारा नसी अन्हाय गया तृपति कीने पितर॥३४॥ दोधक छंद॥सागर संगम गंगा गये जू॥दौस किते बनमें बिनये जू॥न्हाइ तबै मथुराहि चले जू॥ देखत आश्रम कुंड भले जू॥३५॥न्हाइ न ताजल में नर कोई॥जाइ लखै फिरि आवत सोई॥ बिप्रनि कों लखि पार्थ कही यों॥पैठत कोऊन मध्य कहो क्यौं॥३६॥बिप्र उवाच॥यामें जंतुर है अतिभारी॥सोजरा जीवन को दुख कारी॥पार्थ नहीं कछु त्रास कर्यौ जू॥लै पग ता जल मांझ धर्यौ जू॥ ॥३७॥आय गह्यौ पग ता छिन माही॥अर्जुन के उर भै कछु नाही॥लै जल तें वह बाहर आनी॥ है गइ सो त्रिय रूप सयानी॥३८॥अर्जुन सों वह बैन कह्यौ जू॥श्राप दियो रिषि पाप गयो जू॥ता जल ते तिय पांच कही यों॥मान सरो वर इंदु त्रिया ज्यों॥३९॥दोहा॥पांच त्रियनि को मोक्ष करि चलि अर्जुन बर बीर॥तज्यो द्वार मग तब गयो मानिक पुर रण धीर॥४०॥सोरठा॥त्रिय बाहु बर बाहु जीत्यो छिति मंडल घनो॥राजैं तहं नरनाह सकल जगत को काम तरु॥४१॥दोहा॥ताके दुहिता

इंदु मुखि चित्रांगदा सु नाम॥ रूप बढ़ि क्रम उरब
सी बिज्जुल तासी बाम॥ ४२॥ सोरठा॥ कनक बरण
तन ज्योति लसत नील पट ओट ज्यों॥ जगर मगर
दुति होति मानो घन में दामिनी ॥४३॥ नाहि निमिष
इक ताकि बिकल सकल जिय कल नहीं॥ रहीपार्थ
मनि थाकि करी बसीठी बंदि जन॥ ४४॥ गीतिकाछंद
जाय नृपको तब जनायो ब्याह अर्जुन को भयो॥
मन दंती दिये बाजी द्रव्य बहु कंचन दयो॥ चारि
बर्षहि रहे ताथल पुत्र इक अर्जुन लह्यो॥ जाहुं तौ
रथ जात को नर नाह सों जिनि थोंकह्यो॥ ४५॥ नाय-
माथो भूप को चलि द्वारका नगरी गयो॥ पाय सुधि
आये कृपा निधि दुःख सब के उर भयो॥ रुक्मिनी है
आदि सब त्रिय ताहि भेटन आइयो॥ चली कौतिक
हित सुभद्रा निरखि बहु सुख पाइयो॥ ४६॥ सोरठा॥
चंचल नैननि ताकि मांने पट चहुं दिसि लखिन॥-
रही पार्थ गति थाकि परि फंदा उर फैसफर॥ ४७॥
दोहा॥ नख सिख सकल बनी ठनी करै सकल सिं
गार॥ धीर रही नहि पार्थ उर व्याकुल तन न सम्हा
र॥ ४८॥ चौपाई॥ सबहि सुभद्रा अर्जुन देख्यौ॥ अ
पनो पति करि उर में लेख्यौ॥ प्रिय सेवा को यह सब
सार॥ दीजो मोहि पार्थ भरतार॥ ४९॥ यह सब-
बिधि श्रीहरि पहि चानी॥ तब यह अपने उर में
आनी॥ गर्भ सुभद्रा को यह भयो॥ जठर बासु अ
हि दानव लयो॥ ५०॥ दीजै पार्थहि मिटै कलंक॥
श्री हरि आनी यह बुधि अंक॥ बोलि पार्थ सों यह

तब कही ॥ बसि तुम मन हैं सुभद्रा रही ॥ मैं आज्ञा दीनी हरि लेहु ॥ पाछे ह्वैहै अधिक सनेहु ॥ हरी कुमरि अर्जुन सुख पाय ॥ भई सुद्ध अंतहपुर जाय ॥ ॥५२॥ दोहा ॥ कोप भयो बलभद्र को अब अर्जुन कित जाय ॥ लाऊं गहिं कै द्वारिका छांडौं भीखमंगाय ॥ ५३ ॥ कोपि चल्यौ सजि सैन बहु बरजे श्री हरि आइ ॥ को पारथ के सरस है क्यौं रण जीत्यौ जाइ ॥ ५४ ॥ हारे होय कलंक कुल जीते हू जस नाहि ॥ ताते कोपहि परि हरो चलौ द्वारिका जाहि ॥ ५५ ॥ बल भद्र उवाच ॥ तेरी यह कर तूति सब कछू नजानी जाय ॥ फेरि नकछु उद्यम कियो बैठि रहे अरगाय ॥ ॥५६॥ आये अर्जुन इंद्र पथ भूपति बहु सुख पाइ ॥ लई सुभद्रा गेह में मंगल चार कराइ ॥ ५७ ॥ पुत्र बधू कुंती लखी बहु विधि करि आनंद ॥ शुभ लक्षण गुन आगरी मुख दुति राका चंद ॥ ५८ ॥ चौपाई ॥ यह बिचार श्री हरि जू कस्यो ॥ सबही सों ऐसे अनु सरयो ॥ चलौ इंद्र पथ जइये भाई ॥ जाय पार्थ कों करैं सगाई ॥ ५९ लीनि गज रथ तुरी तुषार ॥ जात रूप भूषन भंडार ॥ हरि हलधर सब संग लिवाई ॥ पहुंचे बेगि इंद्र-पथ आई ॥ ६० ॥ पार्थहि बिहंसि सुभद्रा दई ॥ भामरि पारि रीति सब ठई ॥ हस्ती हय रथ भूषण दीने ॥ जाचक सबै अजाची कीने ॥ ६१ ॥ दोहा ॥ करी बिदा बल भद्र की नगर द्वारिका हेत ॥ आपु कृपा करि हरि रहे भूपति के संकेत ॥ ६२ ॥ गर्भ सुभद्रा को भयो पुत्र कला जनु चंद ॥ नाम धरो अभिमन्यु तब की

न्द परम आनंद ॥६३॥ द्रुपद सुताके पंच सुत एगाद भये सुख कारि ॥ मात एक पितु पांच तें पांच हुं की अनुहारि ॥६४॥ दुरजोधन संप्राय कियो रची कहा करतार ॥ हते अकेले पंच वे अब बाढ्यो परिवार ॥६५॥ इति श्री महा भारत पुराणे बिजय मुक्तावल्यां कबि छत्र सिंह बिरचितायां सुभद्रा बिवाह बर्णनो नाम द्वादशोऽध्यायः॥१२॥

॥सोरठा॥ खेलत पासे सार अर्जुन कृस्न अनंद सों ॥ डारत दांव हंकारि अपनो अपनो भाषि कै ॥१॥ भुजंग प्रयात छंद ॥ धसो बिप्रको रूप यों अग्गिनि आने दुखी दीन ह्वैकै महा रोग छाये ॥ तहां आयके दीन बानी बखानी ॥ हरो पीर मेरी महा दुख्ख दानी ॥२॥ कहे अग्नि मोको छुधा नेक नाहीं ॥ दया आप की जै महा जीव माहीं ॥ किते यत्न करि इंद्र को बिप्र जारयो ॥ महा कोपि कै नीर सों बोरि मारयो ॥३॥ स बै औरको मैं भखो सो नसायो ॥ चल्यो हौं अबै रावरे पास आयो ॥ चरों काननै इंद्र को बीर जैसो ॥ महा रोग नासै करो काज तैसो ॥४॥ चले कृस्न जू पार्थ-को संग लीने ॥ बनै जारिबे को सबै काज कीने ॥ त बै अग्नि सों पार्थ बानी बखानी ॥ धनुर्बान नाहीं सुनो सुख दानी ॥५॥ दोहा ॥ अछय तून दीनो अगिनि आप काज पहिचानि ॥ दियो धनुष गांडीव तब नंद घोष रथ आनि ॥६॥ साजि दयो रथ अर्जुनहि तबही श्री जदु राय ॥ पूरब दिशि पठयो सुभट पावक साथे जाय ॥७॥ आप रहे पश्चिम दिशा छाइ लई दिशि या

न॥जीव जंतु ता बिपन में भाजि न पावैं जान॥८॥पूरब तैं साजी अगिनि अर्जुन परम प्रचंड॥दीन शब्द रोवै सबै सावज्ज पंछि अखंड॥९॥जीव पुकारैं दीन रट-सुनि सुरपति सुख दाय॥तुव बन जारैं अगिनि यह-यह कत तोहि सुहाय॥१०॥ प्रलय काल के मेघ जे ते-बोले सुर राइ॥ कोटि छानवैं एक संग बरसहु बन पर जाय॥११॥

उनै आये मेघ नभ तम चारों दिशि छाय ॥ बरसौ हलखि पार्थ तब लीनो धनुष चढ़ाय॥ १२॥ सवैया ॥ धाय के पार्थ चढ़ाय लयो धनु छाड़ लयो बर अंबर बाणन॥ दौरि दवा गिनि लागि उठी द्रुम जारत साख समूल सपानन ॥ कोपि महा मघवा बरस्यो कहूं एकहु बूंदन भीजत कानन ॥ व्योम बिलोकत अद्भुत कौतुक किन्नर यक्ष चढ़े सुबिमानन ॥ १३॥ दोहा ॥ द्वादश जोजन लौं बिपिन करैं बूंद नहिं एक ॥ कोटि छयानवें जलद मिलिउद्यम किये अनेक ॥ १४ ॥ ससे स्यार साबर सुवर सेही सिंह संकोच ॥ सारे सुक सोना सबै सकल सिवा ननि सोच॥ ॥१५॥ चिरा चील्ह चिमगादरें चातक चक्र चकोर ॥ रजत नउबरत जीव सब बचत नकाहू ओर ॥ १६॥ दंडक छंद धाय धाय मेघ बार छाय छाय छिति पर बरसि बरसि - हरि भागे भहराय के ॥ झरपि झरपि झर तरपि तरपितहां जित तित नीर गये ढरि ढहराय के ॥ तरु तरु लगि आगि बरत न उबरत भागि भागि पंछी पशु बचे न पराय के ॥ छन बलवंत बीर पार्थ को अनंत बल अगिनि - तृपत कियो कानन जराय के ॥ १७॥ दोहा ॥ सुनि सुनि बन की यह दशा तब कोप्यो सुर राय ॥ हन्यो बज्र - बाण बली टूटि परी खंड राय ॥ १८॥ चौपाई ॥ अर्जुन - बाण लये फिरि छाई ॥ बूंद न परत कहूं बन आई ॥ सर पंजर तोरयो दस बार ॥ जोरै पार्थ बड़े आकार इहि बिधि बन खांडवहि जरायो ॥ भाग्यो मया सुर दानव आयो ॥ राखु सरनि यह असुर पुकारै ॥ मोहि अगिनि यह जारै मारै ॥ २०॥ दई दिलासा राख्यो

सोइ ॥ छांड़ि त्रास तोहतै न कोइ ॥ असुर कहै सुनि पार्थ सयाने ॥ तेरे करम नजाय बखाने ॥ २१ ॥ मायासुरउवाच ॥ दोहा ॥ जितने त्रिभुवन में असुर हौं तिनको श्रुति धार ॥ जब चाहै तब आइहौं करों काज सब सार ॥ २२ ॥ बिदा करी अर्जुन सुभट असुर चल्यो सो धाम ॥ एरई पावक कानना सब बिधि के गुण-ग्राम ॥ २३ ॥ आये सुरपति पुहुमि में बिग्रह सकल नसाई ॥ सुतहि देखि कछु सुख भयो कछु मन में पछि ताइ ॥ २४ ॥ इंद्र सिधाये सुर पुरी चले पार्थ-गृह आपु ॥ चले इंद्र पथ हरस जू जिनको अमित प्रताप ॥ २५ ॥ निरखि युधिष्ठिर भूप तब कही परम सुख पाइ ॥ श्री जदु नाथ प्रताप ते तैं जीत्यो सुर राइ ॥ २६ ॥ गहि है कोऊ धनुष नहि तोको-सुनि बल बंड ॥ पूरि सुजस धर पर रह्यो सप्त दीप नव खंड ॥ २७ ॥ हास्तिनापुर बति को तब गये बिदा भये जदु नाथ ॥ इस भूपति के निकट ही सोभित बंधव साथ ॥ २८ ॥ राजा युधिष्ठिर उवाच ॥ सोरठा ॥ रचिये धाम बनाय उत्तम दीसे दूरि ते ॥ बहु बिधि चित्र कराय धवल नवल कीनी सभा ॥ २९ ॥ अर्जुन उवाच ॥ चौपाई ॥ जो तुम भूपति आयसु पाऊं ॥ नाम मया सुर बेगि बुलाऊं ॥ राजाउवाच ॥ बेगहिं बंधव ताहि हंकारो ॥ उत्तम उत्तम धाम संवारो ॥ ३० ॥ सुधि मया सुर की उर आनी ॥ आय गयो तबही सुख दानी ॥ आवत ही तिन भूपति देखे ॥ धर्म धुरं-धर चित्र बिसरखे ॥ ३१ ॥ इति श्री महा भारत पुराणे

बिजय मुक्ता वल्यां कवि छत्र विरचिता यां इंद्र वन खां डीव दहनो नाम त्रयो दशो ऽध्यायः ॥ १३ ॥ ॥ ॥

इति आदि पर्ब्ब समाप्तं अथ सभा पर्ब्ब कथनं ॥ दोहा ॥

धर्म धुरंधर तिहि छिनक धर्म सुवन भुव भूप ॥ कही मया सुर असुर सों कीजे सभा अनूप ॥ १ ॥ नगसरूपिनी छंद ॥ नवाय सीस बेगि कै ॥ चल्यो सु बीर चित्ति कै ॥ समुद्र पास सो गयो ॥ सुधाम सीस कै लयो ॥ २ ॥ दोहा ॥ हरना कुप्प को सदन सो लीनो तिन धरि सीस ॥ लै आयो सो इंद्र पथ लखि फूले अवनीस ॥ ३ ॥ सवैया सुंदर लीले रंगीले खरे अरु पीरे हरे रचि धाम बनाये ॥ मानिक लाल निके बहु जाल प्रबाल नि के खचि थंभ सुहाये ॥ स्वच्छ सिला जनु दीसत नीर बने वकवा जनु पैरत धाये ॥ है अमरावति तें अति अद्भुत सुंदर सदन सबै छबि छाये ॥ ४ ॥ दंडक छंद ॥ सोभा ही के सार तहां फाटक किवार बने के ते द्वार द्वार जिनैं देखे बुधि भरमें ॥ दिये है कि दिने है बिचारत ही भूलि रहे जानि ये सनीर पै नीर नाहीं सरमें ॥ धामनि के बीच नि धरी बनि मरीचि कानि राजति है नीलमनि छत्र घर घरमें ॥ भूप की सभा की आभा कौन सों बखानि कहे ऐसी दुति नाहीं कहूं इंद्र के नगर में ॥ ५ ॥ दोहा ॥ पट होने से देखिये दिये नपत तिहि द्वार ॥ जे सर बर है नीर जुत पृथ्वी के आकार ॥ ६ ॥ मन भायो है के सबै गयो मया सुर गेह ॥ भूपति बैठे तिहि सभा बंधुनि सहित सनेह ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ ऋषि नारद भूपति पै

आये॥ निरखि सभा बहु विधि गुन गाये॥ ऐसी सभा न मैं
कहुं देखी॥ सब ठामनि में उत्तम लेखी॥ ८॥ रिषिरुवाच
सवैया॥ किन्नर जक्ष पुरी अवलोकत धर्म पुरी अव
लोकत फीकी॥ भोगावती अवलोकि सबै सुबिलोकि
सुरेश पुरी सुरधी की॥ भूपति भूपन के धन धाम बि
लोकि फिरो नभई रुचि जीकी॥ और सभा न सभा
सम लागति रावरी आहि सभा अति नीकी॥ ९॥
राजाउवाच॥ दोहा॥ तीन भुवन की बात सब जानत
हौ रिषि राय॥ सुद्धि कहो नृप पंडु की मोसो सक
ल सुनाय॥ १०॥ रिषिरुवाच॥ चौपाई॥ सुनि नरधनी
पति बहु सुख दाई॥ एक बात पै कही नजाई॥ -
निरखत पंडुहि भयो ससोकू॥ भई कुमृत्यु गयो -
जम लोकू॥ ११॥ जज्ञ करौ मिटिहै सब दोष॥ पंडु
मही पति पावै मोष॥ बिलखै भूपति बहु दुख पाइ
दै उपदेश चले रिषि राइ॥ १२॥ जज्ञ राज सू भूपति
कीजै॥ भूप जीति जग मैं जस लीजै॥ जज्ञ बिधा
न सकल अनुसरै॥ एक राय ते रक्षा करै॥ १३॥
चंदन गारे छिति पति एक॥ एक ते लावै समिध-
अनेक॥ सहस्र धेनु सुबरन जुत देहु॥ पितु को -
तारि जगत जसु लेहु॥ १४॥ भूपति के मन चिंता
आई॥ जिनके श्री हरि सदा सहाई॥ यह कहि
नारद स्वर्ग सिधाए॥ सुनिकै भूपति श्री हरि
आए॥ १५॥ रिषि उपदेश महीप सुनायो॥ जज्ञ
करौ उन मोहि बतायो॥ श्री हरि कह्यो मतो
यह कीजै॥ जीतहि जग सब जस लीजै॥ १६॥

तिन नर मेध यज्ञ है ना धौ ॥ ता हित भूपति को गन बांधौ
॥ एक घाटि सौ अधि पति रोके ॥ परे बंदितें मह ससोके
॥ १७ ॥ मारि ताहि हौं बंदि मिलाऊं ॥ सोक वंत सब
भूप छुटाऊं ॥ भीम सेन अर्जुन संग लाए ॥ रूप क
परिया के तिन ठये ॥ १८ ॥ नगर राज गिरि चलि ते ग-
ये ॥ दुर्गम ठाम बिलोकत भये ॥ मध्य नगर के लागे
जान ॥ बाजनं बाजे हने निसान ॥ १९ ॥ जज्ञ थली -
भूपति हो जहां ॥ लागे जान सबै मिलि तहां ॥ रक्षक
हुतौ मल्ल तिहिं द्वार ॥ बिन बूझें क्यौं चले अगार
॥ २० ॥ दोहा ॥ तिन कर पकरो भीम को दाहन क्यौं
हूं जान ॥ तुम सों कछु सर बर नहीं कहत न बनई
आन ॥ २१ ॥ भिरो मल्ल सो भीम सों कीनो अद्भुत
जुद्ध ॥ पवन पुत्र के उर हन्यो मुदगर बहु करि
क्रुद्ध ॥ २२ ॥ लरखराय भूतल गिरो पार्थ पछारो
आइ ॥ चेति भीम करि क्रोध अति हन्यो गुरज -
उर धाइ ॥ २३ ॥ फेरि बली बर बाहु बल डारी भुजा
उखारि ॥ करो दुष्ट सो प्राण बिनु फटिक सिला
सों मारि ॥ २४ ॥ करो प्रणाम महीप को जज्ञ -
थली में जाइ ॥ देखत ही संदेह करि यों बोल्यो -
भुव राय ॥ २५ ॥ आय तपी के भेष तुम देखत बहु
बल वंड ॥ मांगो जो मन कामना सोई देहुं अखं
ड ॥ २६ ॥ श्री कृष्ण उवाच ॥ दोधक छंद ॥ मांगत जु
द्ध मही पति दीजे ॥ जी मह और बिचार न कीजे
। तीनहं में जो आयसु पावैं ॥ सोई तुम सों जूझ
न आवै ॥ २७ ॥ भूपति कृष्ण तहीं पहि चानें ॥ बैन

तबै यहि भांति बखानै ॥ सो संग बार अठारह ला-
स्यो ॥ मैं फिर तू तब देख्यो भाग्यो ॥२८॥ अब नजु
ह मंडो संग तोही ॥ तू रण पीठि दिखावहि मोही ॥
कोमल गात धनं जय देख्यो ॥ जुद्ध न भौ मद्ध चित्त
हि लेख्यो ॥२९॥ भीम घड़ी एक युद्ध हि सैहै ॥
फेर जुरो कतया पै जैहै ॥ भूपति रोस महा-
उर आन्यो ॥ कोपित भीम चह्यो सुख धान्यो ॥
॥३०॥ सोरठा ॥ जुरे जुद्ध दोउ बीर मानहु गज-
माते फिरत ॥ सूर समर रण धीर मनहु दुवि
र दोउ शैल के ॥३१॥ दोहा ॥ भिरत गदा लै
हाथ ही दोऊ समर प्रबीन ॥ लट पटाहु गिरि गि
रि उठत दोऊ रोस नलीन ॥३२॥ हनी भीम भू-
पाल सिर भई गदा द्वै खंड ॥ जरा संध तब क्रो
ध करि गह्यो सुभट बल बंड ॥३३॥ फेरयो गहि
कै चरण बिबि तीनि बार भुव पाल ॥ फिरि गदा
कर में लई प्रगट्यो बचन कराल ॥३४॥ चौपाई ॥
तू जानै कौरव सो भाई ॥ मोसों तेरी कहा बसा
ई ॥ कै अब समर छांडि भजि जाउ ॥ बज्र पा-
त को ओड़ो घाउ ॥३५॥ यों सुनि पार्थ हि चिंता
भई ॥ कहा होइ जहां कृस्न सहाई ॥ फिरि रण-
कोपे दोऊ बीर ॥ रण में उद्धत कोप गंभीर ॥३६॥
जरा संध बहु बरु करि धाइ ॥ लता हन्यो पवन
सुत आइ ॥ सप्त पौंड पै परयो सुजाइ ॥ रही बि
कल ता सुख पै छाइ ॥ ३७ ॥ जय जय करि कै उठ्यौ
सम्हारि ॥ हरि को सुरत निरख्यो सुख कारि ॥ दुबै

कै कहा दई मनसैन भीमसेन और जरासंध का युद्ध ॥

भीमसेन जरासंध श्रीकृष्णजी अर्जुन
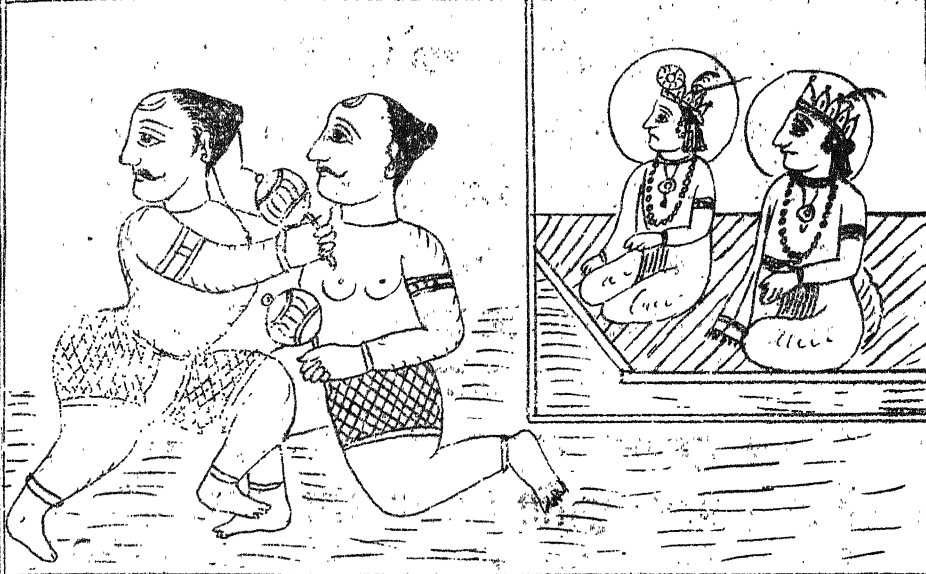
तिनुका फारो देखत नैन ॥ ३८ ॥ समुझि सैन कोप्यो बलबीर ॥ दूनो ह्वै गयो फूलि शरीर ॥ जरासंध भुव पटकि पकारि ॥ कीनो फांक बीच ते फारि ॥ ३९ ॥ सोरठा ॥ सबरे राजा राय मुकराये तब बंदि तें ॥ छूटि चले सुख पाय जो पंछी पिंजरानि ते ॥ ४० ॥ छंद ॥ राजा उवाच ॥ जय जय नंद नंदन दुष्ट निकंदन जय जग बंदन गरुड़ासन ॥ भव भय मोचन जन मन रोचन दुखविमोचन [illegible] ॥ सज्जन मन रंजन दुष्ट निकंदन परम निरंजन जग करता ॥ बहु विस्तारो दुष्ट संहारो मारो लोकनि के हरता ॥ ४१ ॥ दोहा ॥ हरि गुण गावत भूप सब गये आपने धाम ॥ जरासंध सुत बोलि कै सुत संध वहि नाम ॥ ४२ ॥ नगर राज गिरि को तिलक कीनो ताके सीस ॥ अर्जुन भीमहि संग लै चले तिहूं पुर ईश ॥ ४३ ॥ दुरा

संधु उवाच ॥ छप्पै ॥ कैटभ मधु मुर हरण धरन नरव आग्र -
शैल बर ॥ हिरना कुश हिरनाक्ष हरण प्रभु रदन धरणि
धर ॥ संरवा सुर संहरण हरण हरि आधक बंधहि ॥ रवर
दूरवन नपु भंजि गंजि भंजन दश कंधहि ॥ गज राजका
ज प्रहलाद धुव दया सिंधु असरण शरण ॥ नमो नमो
कबि छत्र कहि सुनारायण जग उद्धरण ॥ ४४ ॥ दोहा ॥
चलि हरि आये इंद्र पथ ताको दैके राज ॥ भूप युधिष्टि
र सुरव भयो भये सकल मन काज ॥ ४५ ॥ श्री कृस्नउ
बाच ॥ पठयो बंधव आपने जीतिहि चहुं दिशा देश ॥
गये कृस्न तब द्वारिका यह कहि कै उपदेश ॥ ४६ ॥ ॐ
इति श्री महा भारत पुराणे विजय मुक्ता वल्यां कबिछ
त्र बिरचितायां जरा संध युद्ध बर्णनो नाम चतुर्दशो

ऽध्यायः॥१४॥

॥ दोहा ॥ करी कृपा चारों अनुज भूपति लये बुलाय ॥
कह्यो करो सब दिग बिजय दिश दिश जीतहु जाय
॥ १ ॥ भीम सेन पूरब गये उत्तर पार्थ सुजान ॥ सहदे
व दक्षिण गये पश्चिम नकुल पयान ॥ २ ॥ दिश दिशजी
ते जाय सब आने बांधि महीप ॥ कीरति सो छाई ध-
रा थल थल जंबू दीप ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ सब बंधव नृप
अंक मिलाए ॥ सम दे नकुल द्वारिका धाए ॥ करी बि
नय कृस्नहि लै आये ॥ नगर इंद्र पथ भये वधाये ॥
॥ ४ ॥ आये दुरजोधन गुण ग्राम ॥ अतुल रूप ताको
संग्राम ॥ कीने सकल जज्ञ के साज ॥ बोले तहां स
कल रिषि राज ॥ ५ ॥ छप्पै ॥ आये गौतम व्यास अ
त्रि पारासर आए ॥ बिश्वा मित्र बशिष्ठ गर्ग शृंगी रिषि

धाये॥ बालमीकि दुर्बास जासु मति पारुन लहिये॥बहु
रि सुभट्टक द्रोण और नारद मुनि कहिये॥ कवि छत्र-
अठासी सहस रिषि सकल जुरे भूपति भवन॥जज्ञस्थ
ल लागे सबै बेद ध्वनि द्विज उच्चरन॥६॥ सोरठा॥भूपति
के चित चाउ रक्षक कीने सब न्रपति॥दुरजोधन भुव-
राउ भंडारी सोभित तहां॥७॥दोहा॥जहां चाहिये एक
तहं द्वै दुरजोधन दानि॥ऐसौ होइ भंडार ज्यों सो राजैं।
मनजानि॥८॥ जितो लुटावै भूप धन दूनो दूनो होइ॥
देखि भरो भंडार तब भूलि रह्यो सब कोइ॥९॥चौपाई॥
कीनो गर्ब जुधिष्ठिर राइ॥ कौन आजु मेरी सर आइ॥
धनि हों जाको भरो भंडार॥ यहै सकल बस्तुनि में सार॥
॥१०॥कीनो गर्ब कृस्न जब जान्यो॥ यह बिचार आपने
उर आन्यो॥ कर्ण राय भंडारी कीनो॥बेगि द्रब्य ह्वै ग
यो जो हीनो॥११॥ सोरठा॥ चिंता करि नर नाह बिस्वं-
बर सों यों कही॥सुनिये त्रिभुवन नाह ऐसौ भयो-
भंडार सब॥१२॥ श्री कृस्न उवाच॥ दोहा॥ तैं कत
कीनो गर्ब मन कमल हस्त कुरु राइ॥ घटै घटावै
द्रब्य नहिं जो वह देइ लुटाइ॥१३॥ दंत करण के
कंपि उठे संके गिरि वर मेर॥है कुरु राजहि करण
को इतनोई न्रप फेर॥१४॥ अज्ञा अर्जुन को दई
लंका को तुम जाउ॥जीति लंक पति को सुभट ब
हु सुबरण लै आउ॥१५॥ सवैया॥ धाय कै जाय-
चढ़ाय लयो धनु सागर बाण नि छाय लयोई॥को
रव मैं बहु बाहु परा क्रम मारग लंक को बीर कि
योई॥ माइ कै गर्ब निसाचर नाथ को घोर अहंक्रनि

शिशुपाल
मंडप
राजायुधिष्ठिर

मी हुती हस्स जहां मर जाद हुतें बढ़ि भाखी॥ चक्र हन्यो - शिशु पाल के सीस सभा महं रंचक कानि न राखी॥ २६॥ दोहा॥ सब के उर संका भई सब कंपे भुव राय॥ जय जय जय भाषत भये जय जय त्रिभुवन राय॥ २७॥ प्रथम तिलक हरि सिर कयो फिरि भूपनि के सीस॥ विधि सों सब पहि राय के कीने विदा छितीस॥ २८॥ इति श्री महाभारत पुराणे विजय मुक्ता वल्यां कवि छत्र सिंह विरचितायां शिशु पाल बधन बर्णनो नाम पंचदशोऽध्याय:

॥१५॥ सोरठा॥

दुर जोधन भुव राय न्योति बुलाये इंद्र पथ॥ कर्ण सहित। सुख पाय आदर कीनो धर्म सुत॥१॥ सुंदर मंदिर - चाहि भूलि रहे कौर व सकल॥ जनु अमरावति आहि आखंडल सो धर्म सुत॥२॥ दोहा॥ जब भीतर को नृप चले सर बर सों चित चाहि॥ जानत अमित अगाध जल पै तहं नीर न आहि॥३॥ दोहा॥ बसन उठाये आप नृप भयो फटिक के ताल॥ गयो गर्ब सो सदन लखि भयो बिकल बेहाल॥४॥ आगे सर वर बावरी नीर न परै लखाय॥ जानि भूमि धोखो पस्यो जल अगाध में - जाइ॥५॥ दर वाजे दीने हुते उज्जल फटिक कपाट॥ तिहि मारग अवलोकि कै लीनी सोई बाट॥६॥ तासा रग कुरु राज के लागी चोट लिलाट॥ तब आगे सहदेव है नृपहि सहाई बाट॥७॥ निरखि भूप की यह दशा पंच बीर मुसिकाइ॥ अरु हंसि द्रुपद सुता गई रह्यो नृपति मुरझाइ॥ हिम कर हत जैसे नलिन त्यों भूपति मुख देखि॥ उतराये भीजे बसन आद

र कियो बिशेषनि ॥ ९ ॥ बैठारे भूपति सभा धर्म पुत्र तिहि काल ॥ रच्यौ अखारो नृत्य को बोलि गुनिन के जाल ॥ १० ॥ आनी अर्जुन जीति कै उत्तर तें जे बाल ॥ भीम जीति - पूरब लई तें आई तिहि काल ॥ ११ ॥ जीति नकुल सहदेव बर आनी हीं जे नारि ॥ नृत्य हेत आगे नृपति ते सब लई हंकारि ॥ १२ ॥ सोरठा ॥ नृत्यत त्रिय बहु भाय सुरपति रति उलथा सहित ॥ उपमा दीजे काहि मानहुं रंभा उर बसी ॥ १३ ॥ दोहा ॥ इंद्र पुरी सम सो सभा धर्म पुत्र सुरराय ॥ नृतत त्रिया मनु मेनका तिलोत्तमा छबि छाय ॥ १४ चौपाई ॥ देखि सभा आए ज्यौं नार ॥ जेवत षटरस भोजन सार ॥ भांति भांति के व्यंजन आने ॥ नामी कहां लगि कौन बखाने ॥ १५ ॥ जेइ उठे तब दीनो पान ॥ गये गेह तब बुद्धि निधान ॥ महा मलिन मन कछु न सुहाइ ॥ सब बंधुन सों कह्यो बुलाइ ॥ पंडु सुतन को कहु मत कीजे ॥ कहो तो देश निकारो दीजे ॥ मारत सब बिधि मेरो - मान ॥ देश तजैं सो करो सयान ॥ १७ ॥ चलि धृत राष्ट्र भूप पै गये ॥ पंडु सुतन बहु धा दुख दये ॥ तब जेठे पितु मोर अंदेश ॥ पांचों बीरनि छूटे देश ॥ १८ ॥ धृत राष्ट्र बाच ॥ दोहा ॥ जब पांचों [illegible] हते दीने देश निकारि ॥ भ्रमत फिरे बन बीथि कानि रखो सहाइ मुरारि ॥ १९ ॥ मन न बिचारो दुष्ट ता कारज भलो न एहु ॥ कह्यो मान मेरो उन्हे जीव दान किन देहु ॥ २० ॥ यों सुनि कै उत्तरे नृपति आये आपने गेह ॥ सकुनि दुसासन कर्ण तहां बोले सहित सनेह ॥ २१ ॥ दुष्ट चौकरी जुरि तहां कहे बिचारि बिचारि ॥ सो कीजे पांचो अनुज

दीजे देश निकारि ॥ २२ ॥ सकुनि उवाच ॥ मंत्र बिचारो एक मैं आपु मानि मन लेहु ॥ भूप सुयोधन भूप में देश निकारो देहु ॥ २३ ॥ जो बिरोध जाको करै यदि श्री कृष्ण नि सहाउ ॥ भूप जीति हौ आउवे लहे नवधौं हूं लाउ ॥ ॥ २४ ॥ दोधक छंद ॥ मंत्र महीपति के मन आन्यो ॥ सत्य-यही अपने उर आन्यो ॥ भीषम कर्ण तहां तब बोले ॥ बुद्धि कपाट हृदय के खोले ॥ २५ ॥ द्रोणादि आदि सबै चलि आये ॥ भेद सबै तिनको समुझाये ॥ ऐसो मंत्र कछू प्रति धारो ॥ भूप जुधिष्ठिर देश निकारो ॥ २६ ॥ बिदुर उवाच ॥ दोहा ॥ जौ लगि उन को भूप सुनि त्रिभुवन नाथ सहाइ ॥ तौ लगि काहू की कछू कैसे हू न बसाइ ॥ २७ ॥ द्रोण उवाच ॥ दंडक छंद ॥ देखि कै परायो कछू कीजिये न अनरायो दाबे बिना दायो किये हूहै महा हानिये ॥ ऐसो अबिबेकी है कुटेव टेव टेकी जिहि नेक हू तो त्रास हरि जूको उर आनिये ॥ साजत है काज तू कसाई अघ दाई कैसो हूहै है अपजस यह नीके उर आनिये ॥ बंधुन सो कीजै कोह द्रोह उर कोह छांडौं कीरति कलित जाते भूप तो बखानिये ॥ ॥ २८ ॥ दोहा ॥ पर द्रोही और कृत घनी ते अंतक बस होत ॥ दीजत नर्क अघोर में जिते संघारत गोत ॥ २९ ॥ सुनि नृप माहि उत्तर दियो बचन कह्यो गुरु घोर ॥ मन लै लाग्यो चित्त में चितये भीषम-ओर ॥ ३० ॥ भीषम उवाच ॥ खेल कपट को नास जो हे है मूल बिनास ॥ बाढ़े बंधु बिरोध अति हूहै जगमग हास ॥ ३१ ॥ छप्पै ॥ जिनसे सोइ धर्म जहां

पाखंडहि कीजे ॥ बिनसै सोई प्रीति जहां हांसी मन दीजै ॥ बिनसै सोई पुत्र लाड माता पितु मंडहि ॥ बिनसै सोई वंश आप कुल करनी छंडहि ॥ बिनसै सो धन वेगही धन होते जो रिन करै ॥ सुन सुमति मारग चलो कुमति कलह नृप परि हरै ॥ ३२॥ बिनसै सोई बिप्र जो न षट कर्महि साजै ॥ बिनसै मंदिर बेगि निकट राबर के राजै ॥ बिनसै सोई कथा जौन तामंह मन दीजै ॥ बिनसै सोई काज जहां पर आसा कीजै ॥ बिनसै सोई नारि प्रचंड गृह साकल कुमति गति परिहरो ॥ सिख सीख भूप भीषम कहै सुनृप नाहि मंडल करौ ॥ ३३॥ बिनसै सोई बधिक दया जाके उर आवै ॥ बिनसै तस्कर बेगि भेद आपनो जतावै ॥ बिनसै सोई नेह कपट जो उरमें धरिये ॥ बिनसै सोइ ब्योहार नीच सो जो कछु करिये ॥ बिनसै द्विज सेवा करत बिनसै द्रुम सरिता निकट ॥ इहि भांति सीख भीषम कहै [illegible] भूपति आन घट ॥ ३४॥ दोहा ॥ तजो जूआ को [illegible] सब [illegible] कहै संसार ॥ है है कलह कुरंग में रखि राखी करतार ॥ ३५॥ धर्म पुत्र को भूप जी आयसु देहु बुलाइ ॥ बचन न मेटै रावरो जुठि कानन को जाइ ॥ ३६॥ भीषम के यों बचन सुनि भूपति गयो अवास ॥ आप बुलाये अनुज सब हित कै अपने पास ॥ ३७॥ पास रजाय सु शकुनि तब रच्यौ कपट को जूप ॥ निरखि करन रबि पुत्र को यों बोल्यो तब भूप ॥ ३८॥ आनहु बोलि जुधिष्ठिरहि यों बोल्यौ सुख पाइ ॥ कपट जूप मे खेलि कै लेहौं सबहि हराइ ॥ ३९॥ करण गयो चलि इंद्र पथ कह्यो

भूप सो जाइ ॥ बोलत खेलन जूप सों दुरजोधन सुख पाइ ॥ ॥४॥ चले भूप यह बात सुनि भीम सेन सुधि पाइ ॥ जाइ हस्तिना पुर नहीं कही न्रपति सों जाइ ॥४१॥ जुधिष्टिर उवाच ॥ चौपाई ॥ जुवा जुद्ध को सबी भागे ॥ ताको भुव अपजस बहु लागै ॥ कह्यो भीम सो कस्यो नकान ॥ चले भूप तब बुद्धि निधान ॥४२॥ चलो अनुज सब कसि किरबार ॥ चली द्रोपदी लिये भंडार ॥ साहन लै परि ग्रेह सिधाये ॥ नगर हस्तिना पुर चलि आये ॥४३॥ कोस एक आगे ह्वै लिये ॥ आदर भाव-अमित बिधि किये ॥ हित्त कुरि लिये सभा में आये ॥ निरखत बिदुर महा दुख पाये ॥४४॥ तब आरंभ जूप को कीनो बोलि सकुनि दुःशासन लीनो ॥ भीषम बिदुर भाव यह-जान्यो ॥ कपट खेल अपने उर आन्यो ॥ ४५॥ भूप जुधिष्टिर को तब देखि ॥ दावें रदन करज सबि शेखि ॥ चकत भये च हूं घा ताकें ॥ भूपति डर कछु काढ़ि नहि साकें ॥४६॥ कपट खेल को कियो बिचार ॥ कौरव जीत्यो सब भंडार ॥ राज पाट आपन पो हारो ॥ बिलख बदन भये बंधव चारौ ॥४
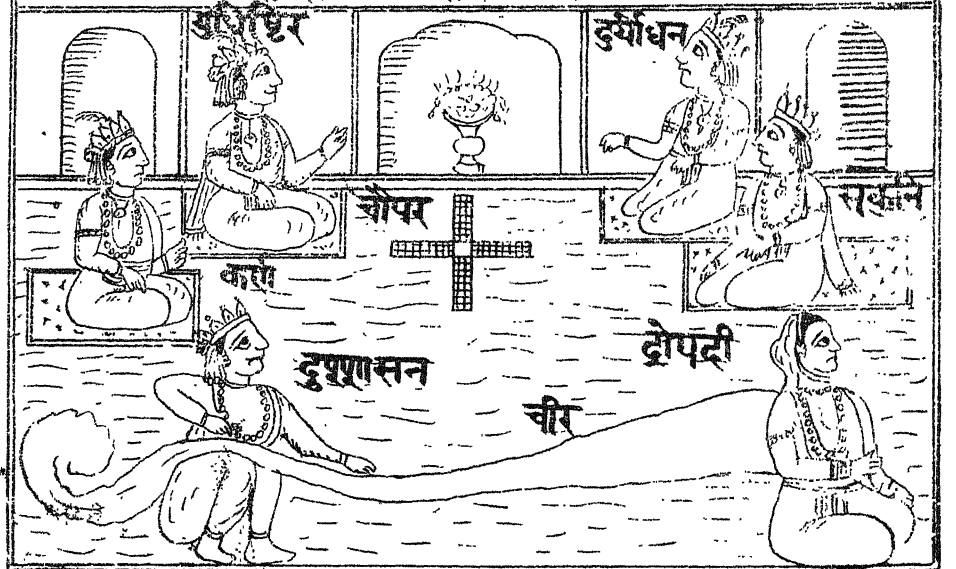
फूल्यो दुरजोधन भुव राइ ॥ लयो दुसासन निकट बुलाइ ॥ तुरत जाहु नहि लागै बार ॥ ल्याव द्रोपदी सभा मझार ॥४८॥ इतनी बात कहत उठि धायो ॥ तुरत दुपद तनया ढिग आयो ॥ अजुगत बात आय कै भाखी ॥ ताकी नेक कानि नहि राखी ॥ ४६ ॥ दूसासनउवाच ॥ दोहा ॥ जीत्यौ कौरव जूप में पुरी जुधिष्टिर हारि ॥ तू दुरजोधन मन बसी चलि मेरे संग नारि ॥ दुपदी उवाच ॥ दंडक छंद ॥ सत्त धर्म पुत्रके असत्त कहूं देखिये न जाके सत्त तेज छित छोरै लौं मढ़ितिहै ॥ तामें तू अधर्म कहि भाषतुहै दूसासनकी रति नसत अप कीरति बढति है ॥ कर को करज दारि दंतनि में बार बार मींडि मींडि हाथ ऐसे द्रोपदी रटति है ॥ मात के समान जेठे बंधु की बधू सो अब ऐसी क्यों अनैसी तेरे मुखते कढति है ॥ ५१ ॥ दोहा ॥ दूसासन फिरि तहं गयो कह्यौ नृपति सौं जाइ ॥ दुपद सुता की बिनय बहु रही गेह भुव राइ ॥ ५२ ॥ दुरजोधनउवाच दूसासन जिय मारि हौं लाउ द्रोपदी बाल ॥ पकरि केश नहि कानि करि आनि सभा उताल ॥ ५३ ॥ जाय गहे कर केश तिन कीनी कछू नकानि ॥ सभा मांझ आनी पकरि आई मन नगलानि ॥ ५४ ॥ दुरजोधनउवाच ॥ बैठि त्रिया मो जंघ पर मन मानी तू नारि ॥ मैं तुम हित सबरी तजी निज तरुनी सुख कारि ॥ ५५ ॥ द्रोपदी उवाच ॥ पापी बोलि न दुष्टता कहि न अबूझत बैन ॥ राज पाट मिटि जाय गो इहि बिधि कछू रहै न ॥ ५६ ॥ झुकि भूपति तब यों कह्यौ लेहु दुकूल उतारि ॥ सुनि दूसासन मो निकट आइ नगयो बहु नारि ॥ ५७ ॥

चौपाई ॥ दूसासन कर पकस्यो चीर ॥ भीम सेन धर हस्यो शरीर ॥
कही जुधिष्ठिर सों अकुलाइ ॥ आयसु दे जिय लेहुं छुटाइ
॥५८॥ राजा उत्तर कछू नदीनो ॥ तब दूसासन उद्यम कीनो ॥ पंचाली सुमिरे अकुलाइ ॥ दीन बंधु किन करो सहाइ ॥ ५९ ॥ द्रोपदी उवाच ॥ दंडक छंद ॥ जिन की पत्नी-की तिन पतिन की तुम पति स्रवावत पतित गति कैसे-के कसाई की ॥ रानी अकुलाइ कही फाटि हू नजाय मही कैसे जाति सही दुष्ट दुसासन्दाई की ॥ कीनी करुण कानि नहीं द्रोण न गिलानि करी तजी पहिचानि बानि-भीषम भलाई की ॥ जैसे प्रहलाद काज कीनो है इलाज-त्योंहि कीजै महा राज आज लाज पुर नाई की ॥ ६० ॥
सवैया ॥ काहू की बार सह्यो गिरि भार सुकाहू की बार-अंगार चबाए ॥ काहू कीबार बिदारि अदेव सुकाहू-की बार पयादेइ धाये ॥ काहू की बार को पाहन फारि कढ़े नरसिंह के रूपहि आए ॥ दीन के नाथ कहाइ-के वे गुण बार हमारी कहां बिसराए ॥ ६१ ॥ दंडक छंद ॥ मेटी कुलरीति मानों जानि पहिचानि नहीं द्रोपदी सभा में छोर गह्यो आनि चीर को ॥ रानी अकुलाय कही फाटि हू नजाय मही हूजिये सहाय धस्यो ध्यान जदु बीर को ॥ दीनन की लाज राखि लीजे महा राज आप और कहौं कासों कोऊ हीर को नपीर को ॥ जोर-साथ दूसासन हाथ थाके पाथर ज्यौं छूट्यो नहीं क्यौंहूं-पट रंचक शरीर को ॥ ६२ ॥ साहस सहित बल बाहु सबिलाइ गये भीषम समेत कोऊ बोलत नतट को ॥ व्याल से बिशाल काल दंड ते कराल बाहु ऐंचि साको पट-

दूसासन भट को॥आस छांडि पाले की निरास वासदेरे हरि करुणानिधान प्राय सुन्यो दीन रटको॥देह तें कढ़ो है पट-कोटिन मढ़ो है छत्र द्रोपदी दुकूल बढ़ो जैसे सूत नट को॥६३॥भीम सेन भीर तजी पारथ हू पीर तजी धीर तजी-धर्म उन सत्त में दृढ़ाइ कै भीषम हू बानि तजी द्रोण पहिचानि तजी कर्ण तजी निरखो बिदुर बराय कै॥बुद्धिकुरुराज तजी दूसासन लाज तजी ऐंचि ऐंचि हारो पट खेद खिसाइ कै॥चार नाल गाइ करी द्रोपदी की भाई त-हां संकरे सहाई जदुराई भये आइ कै॥६४॥खेंचत-पिसनी बांहैं कीनी जुन्ननक आहैं दोऊ कर मीडि मीडि दूसासन दयातु है॥भोडर के कत्ता भोज पत्तर के पत्ता लौं पट उघरत जातु पैन उघरत गातु है॥दुर्जन दूसासन-छिमान गहतु छिन छीजतु बसन पैन उघरतु गातु है॥द्रुपद सुता कोचीर पुजवत जादौं बीर अंगते तरंग सों अंबर-होत जातु है॥६५॥दोहा॥पट खैंचत भट की नहीं भुज-बल भये अनाथ॥आपुन लीनो प्यार हीं बसन रूप ज-दुनाथ॥६६॥ऐंचि ऐंचि हारो पटहि दूसासन अकुलाइ॥थाकि रह्यो करि बल घनो रह्यो सभा अरगाइ॥६७॥

भीम सेन उवाच॥दंडक छंद॥मारि डारों रण में निकारि डारों गर्व सर्व मूल तें उखारि डारें बाहु दूसासन-के॥तोरि डारों जानु जंघ दुष्ट दुरजोधन के तनक करो दुष्टन के तनके॥चाहै मुख नृपति युधिष्ठिर जू भीम कहै आयसु जो देहु तो नो सारों काज मन को॥हमहिं अछत खल चीर ऐंचो द्रोपदी को धम कत हिये मांफ जैसे घाउ घन को॥६८॥दोहा॥द्रुपद

सुताको इन गह्यो जिहि कर दुष्ट दुकूल ॥ हौं वर बाहु उखा-
रि हौं तेइ भुजा समूल ॥६९॥ द्रुपद सुतहि अन्हवाय-
हौं ताके रुधिर मझार ॥ भीम पैज बोली यहै इहि विधि
बारं बार ॥७०॥ भीष्मउवाच ॥ सांचहू जाये अंध के अ-
छत दृगनि जे अंध ॥ चले कहा धौं एक की वैसेही
सब बंध ॥७१॥ महिमा करुणा सिंधु की देखत है-
खल नैन ॥ भये लट पटे मूढ़ भुज ऐंचत पट उबरैन ॥
॥७२॥ श्राप देहि त्रिय क्रोध करि सभा भस्म ह्वै जाइ
होनी होइ सो क्यों मिटै देखि देखि पछिताइ ॥७३॥
सुनी सकल धृत राष्ट्र यह तत छिन ही अकुलाइ ॥
धर्म पुत्र जुत द्रोपदी लीने निकट बुलाइ ॥७४॥ सम-
धान सतोष करि दीन्हे गेह पठाइ ॥ पहुंचे त्रियजु-
त इंद्र पथ पांचों बांधव आइ ॥७५॥ इति श्री महा
भारत पुराणे बिजय मुक्ता वल्यां कबि छत्र विरचिता
यां द्रोपदी अक्षय दुकूल वर्णनो नाम षोड़शो ऽध्या
य ॥१६॥ चौपाई ॥

दुरजोधन सब अनुज बुलाइ ॥ तिनि सो कही बात अकुला-
इ ॥ कहा हमारे जीति होइ ॥ वै सुख बिलसत है सब कोइ
॥१॥ ऐसो मंत्र कछु अब कीजै ॥ उन की सकल-
संपदा छीजै ॥ पांचो अनुजनि देश निकासि ॥ तब-
ह्वै है सुख की बहु रासि ॥२॥ पठयो करण इंद्र पथ-
गयो ॥ खेलन जूप सदेसो दयो ॥ चलन जुधिष्टिर-
भूपति कह्यो ॥ न्योत पठाये जाइ नरह्यो ॥३॥ खेल-
कपट को ते सब जानै ॥ कही भीम की चित्त न आ-
नै ॥ चलिकै नर पति पहुचे जाइ ॥ आदर कीनो कौ-

रव राड़ु ॥४॥ खेल कपट को तब तिन ठन्यो ॥ कपट म
हा अपने चित आन्यो ॥ अभय कीजिये बचन दिढ़ाय
जो हारै सो बन को जाय ॥५॥ बाचा बंध दुहू मिलि की
नो ॥ जूप खेल में तब मन दीनो ॥ हारौ राज युधिष्ठिर
भूप ॥ हारौ साहन पाट अनूप ॥६॥ हारौ देश सहि
त भंडार ॥ हारौ गज बाजिन को दार ॥ प्रफुलित है दु
रजोधन कही ॥ राज पाट सब हारी सही ॥७॥ बारह ब
र्ष जाय बन रहो ॥ गिरि गह्वर के सब दुख सहो ॥
॥८॥ दोहा ॥ बरष तेरही जाय दुरि जौ हम लेहिं निहा
रि ॥ फिर करि द्वादश बर्ष को दैहैं तुम्हें निकारि ॥
॥९॥ भीम सेन उवाच ॥ कपट जूप छल खेलि कै
कानन दीनो बास ॥ पाय रजायसु हौं करौं कौरव
कुल को नास ॥१०॥ नृपता लेहुं छिड़ाय कै करौं रा
ज भुव ईस ॥ करै सकल जग बंदना छत्र धरौं
किन सीस ॥११॥ राजा उवाच ॥ नलद मयंती की
कथा भूप कही समुझाय ॥ द्वादश बर्ष बिपत रहि
राज करैंगे आय ॥१२॥ अर्जुन उवाच ॥ मोको आ
यसु देहु जो राज छांड़ि सब लेहुं ॥ संकट ऐसो
जाय मिटि नृपता बिप्रनि देहु ॥१३॥ मिटै ऐसो
चित्त को दूजे ह्वैहै धर्म ॥ आयसु देहु कृपाल है
यह करौं हौं कर्म ॥१४॥ राजा उवाच ॥ छप्पै ॥ धन्य
धन्य नृ पार्थ खंड खंडनि जस कीनो ॥ धन्य धन्य
भुज दंड कसौ सुरपति बल हीनो ॥ धन्य धन्य
तुव पानि कोपि धनु करत जक्त सर ॥ धन्य धनु
धर धीर दियो बिधना तो कहें बर ॥ कै क्षत्र नती

जै गेव मन तुव सर बरि कहु को करहि ॥ सैक त दृगा
ह्रिग पात धर मुधर थर थर हर हि ॥ १५ ॥ दोहा ॥ वि-
प्रनि को यह दान नहि देहु पंथ बलि चंड ॥ बारह बर्ष वि
तीत करि करि हैं राज अखंड ॥ १६ ॥ सहदेव उवाच ॥
हतौं अंध सुत अनुज सब यह मेरे जिय आज ॥ आप
बचन प्रति पारिये बनहि चलो महराज ॥ १७ ॥ राज
सिंहासन द्रव्य सब साहन अरु भंडार ॥ रख वारो
है राखि हौं कीजै यही विचार ॥ १८ ॥ बिपिन दुखी जिनि
होहु नृप मोसों सेवक पाइ ॥ अन्न द्रव्य जुत भूषणन दे-
हौं बन पहु चाइ ॥ १९ ॥ राजा उवाच ॥ चौपाई ॥ तेरो पौरुष
हौं सब जानो ॥ अतिहि सूर तनु कहा बखानो ॥ पै निजु
बचन हमारो मानि । फेरि राज करि हैं हम आनि ॥
॥ २० ॥ नकुल पर जसो यों हठि भाखै ॥ कौरव मारों को
अब राखै ॥ आज्ञा देहु भूमि भर तार ॥ हतौं अनुज
सब लगै न बार ॥ २१ ॥ हारी पहुमि मुनीचे धरों ॥
नर की धरती ऊपर करों ॥ तापर बैठि राज नृप कीजै
सकल अरिन ऊपर पगु दीजै ॥ २२ ॥ दोहा ॥ नकुल नि-
वारयो नृपति तब यों कहि बारंबार ॥ तोसो बलीन और भुव
जानै सब संसार ॥ २३ ॥ गहि होदी नर नाथ तब लघु-
बंधव समुदाय ॥ तबै इंद्र पथ धाम में पहुंचे सब
जन आय ॥ २४ ॥ राजा उवाच ॥ तेरह बर्षै बिपिन ब
सि फेरि आय हैं धाम ॥ क्रोध नहीं कोऊ करो म
ना बाचा काम ॥ २५ ॥ इति श्री महा भारत पुराणे नि
जन मुक्ता वल्यां कवि छत्र बिरचिता यां राजा युधि
र दुरजोधन जूप बर्नो नो नाम सप्तदशो ऽध्यायः ॥ १७

इति सभा पर्व्व समाप्तं ॥ अथ बन पर्व्व कथनं ॥ ४ ॥ ५ ॥॥ मोतिका छंद ॥ राज चिन्ह तजे जुधिष्टिर भूप सब बनको चले ॥ चतुर भ्राता संग लीने हुते सूर भले भले ॥ मातु राखी बिदुर के गृह हेत बहु बिधि जानि कै ॥ राखी सुभद्रा-पुत्र जुत पुर द्वारिका में आनि कै ॥ १ ॥ द्रोपदी के पंच-सुत नृप द्रुपद ढिग ते राखि यो ॥ पंच बंधव द्रुपद त-नया सहित बन अभिलाखि यो ॥ छत्र पाट धरे सिंहा सन सदन में सुख पाइ कै ॥ भूप रथ चढ़ि बंधु जुत कानन चले अकुलाइ कै ॥ २ ॥ चलत ही इक असुर मारग बिपिन को तब रोकि यो ॥ बिकट घट अति रदन दीरघ भीम सेन बिलो कि यो ॥ गदा जुद्ध हि छांडि कै बल वंत रथ तजि धाइ कै ॥ मल्ल-जुद्ध कियो बली बहु दुष्ट अंकहि लाइ कै ॥ ३ ॥

भूमि गहि संहारि राकस बिपिन को तब पगु धरौ ॥ लख्यो वन अति सघन द्रुम बहु भांति के बहु फल-फरो ॥ ललित ललित लवंग लति का कलित करना-सोहिये ॥ बेलि बल्ली बहु चमेली जुही जुत मन - मोहिये ॥ ४ ॥ छप्पै ॥ सोहत तरवर ताल केलि कर-नार अमृत फल ॥ सोहत कंजनि जुक्त किते सरवर जल निर्मल ॥ सोहति निर्झर झरत सुथल्ल थल सरित-अखंडित ॥ सोहत लतिका फूल भव्वर गुंजनि सुख-मंडित ॥ शीतल मंद सुगंध तहं बहत पवन अति-सुखद गति ॥ कबि छत्र रम्य अवनी सुथल निर खत होत प्रसन्न मति ॥ ५ ॥ भुजंग प्रयात छंद ॥ तहां आप ही की कुटी भूप कीनी ॥ बिलोकी बनी ताथली की नवीनी ॥ छहूं काल के वृक्ष फूले फले हैं ॥ तहां कोकिला आदि पंछी भले हैं ॥ ६ ॥ तपी बिप्र केते तहां चित्त मोहैं ॥ मनो देव देवपुर लोके पुर सोहैं ॥ मयूरी चहूं ओर तें नृत्य साजैं ॥ कहूं-हंसिनी हंसनीके बिराजैं ॥ ७ ॥ दोहा ॥ तपसी मर्क-ट देखि रिषि कीने नृपति प्रणाम ॥ भांति भांति-करि बंदना कही नृपति गुण ग्राम ॥ ८ ॥ मोकहं होहु प्रसन्न रिषि देउ कछू उप देश ॥ दीनो सूरज मंत्र तब सुनि सुख भयो नरेश ॥ ९ ॥ जाप्यो भूप तुरंतही प्रगट भयो भू भानु ॥ कही भूप सो मंत्र को सुनिये सकल बिधान ॥ १० ॥ प्रात न्हाइ-कै भूप तुम जपियो मंत्रहि नित्त ॥ षट रस भोजन दीस प्रति पढ़ं चाऊं तुव हित्त ॥ ११ ॥ चौपाई

इहि विधि भोजन दिन प्रति पावैं ॥ आपनु जैमें -
रिषि नि जिमावैं ॥ रिषि सब भूपति को समुझावैं ॥ तिहि-
बन रहत नकछु दुखपावैं ॥ १२ ॥ करि दुष्टता जयद्रथ-
आयो ॥ हरण द्रुपद तनया को धायो ॥ सक्यो न नेक जु-
द्धि को कांधि ॥ लीनो भीम सेन सो बांधि ॥ भीम सेन उ-
वाच ॥ आज्ञा मोहि गुसांई दीजै ॥ बांधि दुष्ट अबही मा-
रीजै ॥ भूप कहैं ऐसी नहिं कीजै ॥ बांधि मारि अपज-
स क्यों लीजै ॥ १४ ॥ पाइ रजायसु सो मुकरायो ॥ लज्जित-
है गृह को चलि आयो ॥ करी तपस्या शिव की जाइ ॥ के-
ती बर्षै तन मन लाइ ॥ १५ ॥ दोहा ॥ बहु दिन बीते करत तप -
भये महेस उदार ॥ मांगि मांगि तोकहं दयो सोई बर सुख
कार ॥ १६ ॥ जयद्रथ उवाच ॥ भीम धनंजय धर्म सुत स-
हदेव नकुल कुमार ॥ मीचुल है मो हाथ ते यह इच्छा मो सार
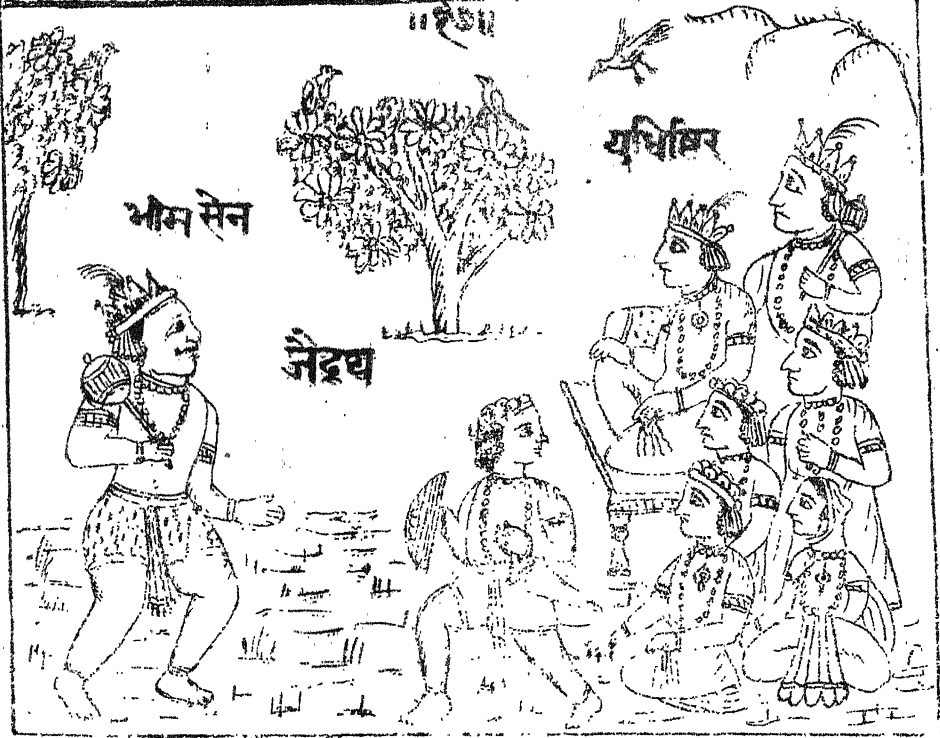
शिव उवाच ॥ बिसु भक्त वे पंच जन तिन सों कह्यो बख्श हु ॥ एक दीस वे पंडु सुत जीतिजाय दृथ जाइ ॥१८॥ चौपाई जबही जय दृथ यह बर पायो ॥ चलि दुर्जोधन के ढिग आयो ॥ आप परा जय सब अनुसरी ॥ तब मैं शिवकी सेवा करी ॥१९॥ एक दिवस दीनो शिव मोहि ॥ जीति जाइ मैं दीनो तोहि ॥ सुनिकै दुरजोधन बहु लाज्यौ ॥ दुःख भयो मन आनंद भाज्यौ ॥२०॥ दोहा ॥ धर्म धुरंधर धर्म सुत बिहरत बन में जानि ॥ भेटौ चाहत पुत्र को धर्म-राज सुख दानि ॥२१॥ लहे अकेलो पुत्र नहि तब दानव-बपु साजि ॥ सिर आकाश पगु धरणि सो देखि उह्यो-गल गाजि ॥२२॥ ऊपर लैगायो नृपति को बान धनंजय तानि ॥ घालत नहि तादुष्ट को कौनि भूप उर-आनि ॥२३॥ सिंह नाद लौ भीम तहँ गरजि उह्यो-किल कारि ॥ गिस्यो असुर भुव आय कै ज्यौं मुर-हत्यौ मुरारि ॥२४॥ सोरठा ॥ कह्यौ ब्यास रिषि राय-अर्जुन सो उपदेस तब ॥ सेवो ईश्वर जाय मन-बच काइक नेम सो ॥ २५॥ दोहा ॥ रुद्र बाण लहि रुद्र पै कहे पार्थ सति भाउ ॥ त्रिभुवन सांई करि कृपा-अमर पुरी दर साउ ॥२६॥ तब ईश्वर आज्ञा दई-कुसुम बिमान चढ़ाइ ॥ दरसायो सब अमर पुर-भेटौ तहँ सुर राइ ॥ २७॥ चित्र सेन गंधर्व सों-प्रीति बढ़ी बहु भाइ ॥ नृत्य नाद तन अर्जुनै बिद्या दई सिखाइ ॥२८॥ पार्थ रिझायो इंद्र बहु सातों-स्वर तब गाइ ॥ नृत्यकियो सुर तरुनि तब बाजन बिदित बजाइ ॥ २९ ॥ सुंदरी छंद ॥ अरजुनकी

बहु धा हरषी मति ॥ तासहु देव प्रसन्न भयो अति॥ईश्वर को -
सब धामदिखावत ॥देखत पार्थ महा सुख पावत ॥ ३०॥ बि-
ष्णु पुरी आवलो कि सबै तहां॥देखी जाय बिरंचि पुरीजहं॥
इंद्र पुरी महं मंदिर राजत ॥सुंदर रूप नि युक्त बिराजत॥
॥३१॥ सवैया ॥सुंदर मंदिर कंचन के मणि नील कं गूरनि सों॥
छबि छाए ॥ लाल मनोहर माणिक जाल खचे सित खंभबि
चित्र सुहाए ॥ बिद्रुम मुक्त अमोलिक सो प्रति द्वारनि
बंदन वारबंधाए ॥ सूरप्रभासी अभा कबि छत्र बिलोकि
के पार्थ हिये सुख पाए ॥३२॥ चौपाई ॥ कहि गंधर्व अ
चंभो एह ॥काहे ते सूनो यह गेह ॥ किहि पुर मंदिर
रच्यो बनाइ ॥ किहि हित तज्यो सुकहि समुझाइ ॥
॥३३॥ चित्र सेन गंधर्व उवाच ॥ताल बरण दानव हरिकिन-
म॥ तिहि सुरजीत्यो यह संग्राम ॥ वाके त्रास धाम य-
ह तज्यौ ॥ आखंडल दूजो गृह सज्यो ॥ सुनि कै पार्थ
हि चिंता भई ॥ सहस नैन पै आज्ञा लई ॥ नीको -
रण दानव सों जाई ॥ वह रण जुरयो घोर दल लाई
॥३५॥ सोरठा ॥ कहौ कहां लगि जुद्ध को बाढै कथा -
अपार ॥ ताल बरण की सब चमू मारत लगी न बार
॥ ३६ ॥ छप्पै ॥ करत अमित गति जुद्ध लरत दानव
बल जान्यो ॥ इंद्र पुत्र शिव बाण कोपि कै तब संधा-
न्यो ॥ रुंड मुंड कटि बांह जानु जंघा कर टूटे ॥ एक
हि बाण निदान सर्ब सेना बल छूटे ॥ भय भीत भय
हति असुर सब तजि रण बन दुरि गए ॥ जय -
जुद्ध पार्थ करि बाहु बल मन प्रसन्न आनंद है -
॥३७॥ दोहा ॥ इंद्रहि सुबस बसाइ कै सुनि ते -

करि तिहि धाम ॥ तहि आज्ञा आयो पहुमि जीति अ
सुर संग्राम ॥ ३८ ॥ चौपाई ॥ आइ जुधिष्टिर के पग-
बंदे ॥ बंधव सुनत सकल आनंदे ॥ राजाउवाच ॥ तो
सों तुही काल्हि सरी दीजै ॥ सुर नर कौन बराबरि की
जै ॥ ३९ ॥ इति श्री महा भारत पुराणे बिजय मुक्ता-
वल्यां कवि छत्र बिरचितायां अर्जुन बिजय बर्णनो-
नाम अष्टादशोऽध्याय: ॥ १८ ॥

नाराच छंद ॥ नबै नरेस धर्म पुत्र संग बंधुलै भले ॥ निके
तनारि द्रौपदी महा अरण्य में चले ॥ लखे तहाँ अनेक पु-
ष्प स्वर्ण बर्ण देखि कै ॥ सबै सुगंध फूल मैं नबीन हैं -
बिशेखि कै ॥ १ ॥ उठाइ द्रौपदी लये सराहि ताहि यौं -
कहै ॥ मंगाइ देहु भीम सेन पुष्प ये जहां लहै ॥ भीम
सेन उवाच ॥ उड़ाय पौन ह्यां परे कहां सुनारि पाइये
न जानि ये दिशा सु कौन कौन ओर धाइये ॥ २ ॥ द्रौ
पदी उवाच ॥ बिलोकि देह आपनी बिचार क्यौं न तू
कहै ॥ बिना अनेक जतन नैन सूर कोइ यों लहै ॥ कहां
प्रसून हेत मैं बिचार चित्त में कियो ॥ न देहि मांहि-
आनि सो कठोर है महा हियो ॥ ३ ॥ दोहा ॥ गदा लई
तब भीम कर आन बोले अकुलाइ ॥ उत्तर दिशि -
गिरि कंदरनि कानन पहुंच्यो जाइ ॥ ४ ॥ बैठि बीर गि-
रि शिखर पर उठो महा गल गाजि ॥ पावस घन ग-
रज्यो मनो चले सिंह सुनि भाजि ॥ ५ ॥ गिरि ग-
ह्वर मग सघन द्रुम ढंढे गुहा पहार ॥ सुनत नाद
हनुमंत तब आइ गयो तिहि बार ॥ ६ ॥ किये
वृद्ध कपि रूप तब पसौ तहां बिच आइ ॥ अवलोक्यो सो

भीम तब सबै नबाट छुटाइ ॥७॥ चौपाई ॥ तारी दै दै
भीम डरावै ॥ बानर के मन कछू न आवै ॥ झुकि झुकि
कै वह तिन लत कारो॥ छुटै न मारग पचि पचि हारो॥
॥८॥ भीम सेन उवाच॥ मारग छांडि कहतु हौं तोहि।
लांघत जीवहि लज्जा मोहि॥ मेरे बचन परो जो -
रहै ॥ आपुन कियो आपुही लहै॥ ९॥ हनु मंत उ
वाच॥ हौं अशक्त बहु भांति निहारो॥ तुम समर्थ इत
उत गहि डारो॥ भीम सेन बल करि करि हारो॥ मर्क
ट हलो न कौं हूं टारो॥ १०॥ तब तिनि बहु बिधि अस्तु
ति लाई ॥ सत्य कहौ तुम को हौ भाई ॥ असुर सुरेश
कि गंध्रब कोई॥ सांची बात कहौ तुम सोई ॥ ११॥
गर्व हमारो सब बिधि भाग्यो ॥ दौरि भीम तब चर
णन लाग्यो ॥ अब जिनि कपट हिये में राखो ॥ आप
नो भेद सकल बिधि भाखो॥ १२॥ हनु मंत उवाच॥
हनू मान है मेरो नाम ॥ चहैं सु पुजऊं तुव मनकाम
सुनतहि भीम उठो अकुलाइ ॥ चरण कमल तिनि
बंदे जाइ ॥ १३॥ दोहा॥ भूलि गर्ब मन में कयो क्षमि
यो मो अपराधु॥ सदा चूक तिनि की क्षमै जो जन
साधु असाधु ॥१४॥ लीनी लंका रूप जिहि सो बपुदे
दरसाइ ॥ कही युधिष्टिर भूप सों जिन के मन पतियाइ
॥१५॥ मूंदत आखें भीम के कीनो रूप कराल ॥ प
ग धरती आकाश सिर निरखत भीम बिहाल ॥
॥१६॥ भीम सेन उवाच ॥ देख सकौ यह बपु नहीं
बिकल होत मम देह॥ तातें दरसावो वहै निज शरी
र करि नेह॥ १७॥ निज मूरत्ति हनुमंत की दरसाई सो
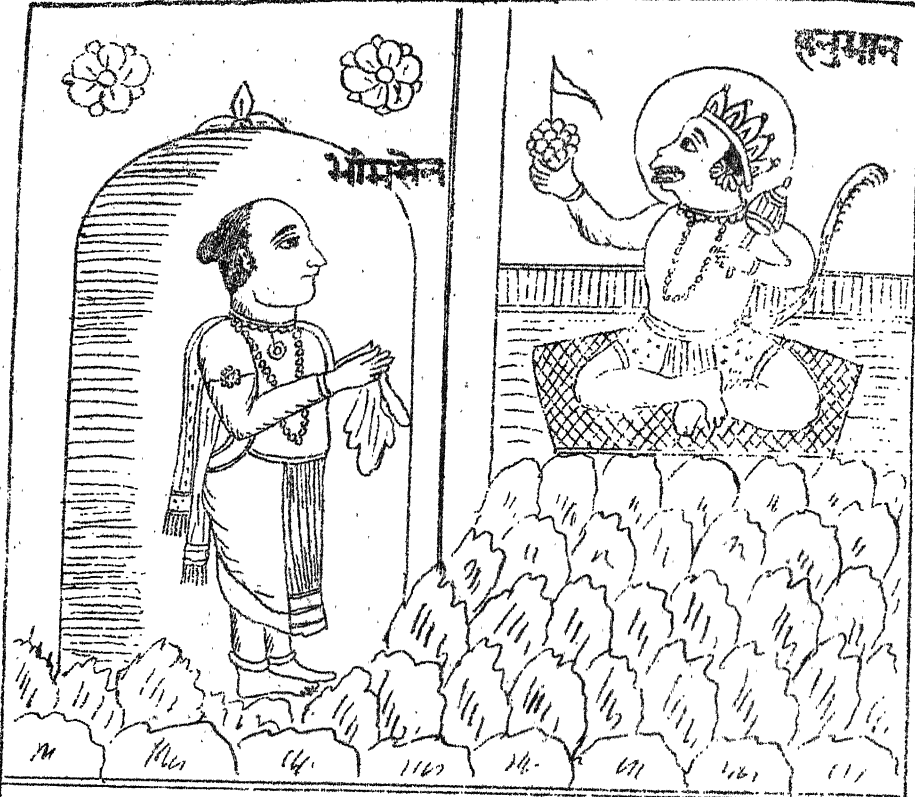
बाट॥ पठयो हित करि कै तहां कुंत कुमार जिहि घाट॥
॥१९॥ भीमसेन उवाच॥ दुर्योधन करि दुष्टता लीने नृप
हराइ॥ द्वादश बर्षै बन लह्यो पहुँचे इह थल आइ॥१९
दोधक छंद॥ जुद्ध महा उन सों अब ह्वै है॥ जीतिहि
सो धरणी अब पैहै॥ आप कृपा करि कै चलि आवैं
बैठि धुजा गल गाजन सुनावैं॥२०॥ होय सहायक जुद्ध
हिं कीजै॥ तौ बर जीति सबै धन लीजै॥ बैन सुन्यो
हित जबै जबै जू॥ बांह दई हनुमंत तबै जू॥२१॥
नाय चल्यो सिर सो सर देख्यो॥ उत्तम कंचन जुक्त
बिशेख्यो॥ गंधर्व रक्षक देखि घनेजू॥ सों तिन सों
तब भीम भनेजू॥२२॥ दोहा॥ आज्ञा देहु कृपाल
है लहौं प्रसूननि धाइ॥ कुकि गंधर्व कही

लिय रो जाइ ॥ २३॥ बर बट सर बर पैठि कै लीनो बीड़ा बां
धि ॥ यक्षक दौरे धनुष गहि तीक्षण बाणनि संधि ॥ २४॥
कमल फूल द्रुम तर धरे सिर तैं तरे उतारि ॥ कोपि -
गदा सों एक संग गयो कौरिक मारि ॥ २५॥ सुन्दर -
फरसा गहि सर भागे किन्नर हारि ॥ आनि कमल दी-
ने सकल प्रिया पानि सुख कारि ॥ २६॥ जुधिष्ठिर उवाच
तोसों जुरैन जुद्ध में किन्नर यक्षक कोइ ॥ तोही ते मन
कामना सब विधि पूरण होइ ॥ २७॥ तोटक छंद ॥ कौ
जब ही बहु द्यौस बितीत भये ॥ बन मांहि द्वारिवदक भी
म गये ॥ पुनि दीरघ पन्नग आइ कल सो ॥ तिनि दौरि तबै
पगु आइ गह्यौ ॥ २८॥ दोधक छंद ॥ भीम बली नकुलादिक
कूरौ ॥ हारि रह्यौ बल दीरघ पूरौ ॥ मारि गदा अहि कौ
सिर तोरी ॥ ताकहं नेक [illegible] नहिं मोरी ॥ २९॥ बीति
गये दश [illegible] ताही ॥ आट तहां लगि भूपति चाही ॥
बंधुन सों मिलि कानन देख्यो ॥ सर्प [illegible] नकु भीम -
बिसेख्यौ ॥ अर्जुन सों अहि बाणनि मारौ ॥ दौरि कै -
सहदेव खड्ग प्रहारौ ॥ भूप कह्यो कत पन्नग मारो ॥ देव
को अवतार बिचारो ॥ ३१॥ नाग घोष नृप को संताप ॥
सर्प भयो सुनि बिप्रन श्राप ॥ ऐसो जंतु अहि यह कोइ
तासों याहि प्रहारन होइ ॥ ३२॥ भीम सेन बल करि कारि
हार्यो ॥ सो कत भरत तुम्हारो मार्यो ॥ कीनो पन्नग जय
जय कार ॥ जान्यो भूप धर्म अवतार ॥ ३३॥ सर्प उवाच
दोहा ॥ तब पुरिखाहीं भूप सुनि नाग घोष मो नाम ॥
बिप्र दोष दुरगति भई भयो सर्प गुण ग्राम ॥ ३४ ॥
अपनी नृपता मैं महा मद कीनो अपराध ॥ बिप्रोद्धव

सब द्विजनि को दीनो दंड अगाध ॥ ३५॥ मोकहु दीनो आप तिनि पायो यह अवतार ॥ तब विनयो कर जोरि कै कब पाऊं सुख सार ॥ ३६॥ कही द्विजनि जब पर्बुनि में होइ धर्म अवतार ॥ तब लहि हो सुभ गति नृपति ताहि परसि तिहि बार ॥ ३७॥ चौपाई ॥ छुवत जुधिष्टिर मिटि गयो दोष ॥ पायो नाग घोष नृप मोष ॥ छांडि भीम भयो अंतर ध्यान ॥ आये बंधव निज अस्थान ॥ ३८॥ सबही के मन आनंद भयो ॥ शोक द्रोपदी उर को गयो ॥ पंडु पुत्र बन में यो परहीं ॥ बन फल खाइ अहेरो करहीं ॥ इति श्री महा भारत पुराणे विजय मुक्ता वल्यां कवि छत्र विरचिता यां राजा नाग घोष मोक्ष बर्णनो नाम नवदशमो ऽध्याय: ॥१९॥

॥ दोहा ॥

दुर्जोधन बैठो सभा बंधु सहित सुख पाइ ॥ पांडु पुत्र पांचों तबै हियरा कर के आइ ॥ १॥ करण दुसासन सकुनि तब बोलि लिये सुख पाइ ॥ मो मन आई सो करों अब रन कछू उपाइ ॥ २॥ सवैया ॥ बूझत हैं सबही दुरजोधन बुद्धि उठी यह मो उर हीतें ॥ सुद्धि लहै नपिता महं भीषम जाइ जुधिष्टिर भूपहि जीतें ॥ लेहि गे वे सब देस भंडार सबै धन आलय औधि बितीते ॥ साजि चले चतुरंग चमूं सब बंधुनि जीति न कुंज कुटीते ॥ ३॥ दोहा ॥ मांनि रजायसु तास तिन साजे दल चतुरंग ॥ चले भूप करि दुष्टता करण दुसासन संग ॥ ४॥ गिरि गह्वर मग देखि कै लख्यो घोर बन जाइ ॥ चित्र

सेन गंधर्व तब रोषित पहुं च्यौ आइ ॥ ५ ॥ बांधे बिधि-
की पांस सो दुरजोधन भुव पाल ॥ मन बच क्रम बहु -
करण नृप कीनो कोप कराल ॥ ६ ॥ सुंदरी छंद ॥ करण-
मही पति को पकसौ बर ॥ पूरि लयो बर बाणनि सं-
बर ॥ गंधर्ब बोलि उठो तिनि सो हँसि ॥ कौन कुदाव-
हि भूप लयो ग्रसि ॥ ७ ॥ गंधर्व उवाच ॥ देवनि सो रण-
तू कत ठानहि ॥ मानव जुद्ध नहीं उर आनहि ॥ गा-
जत करण सुबाणनि छंडतु ॥ होतु कछू नहिं पौरुष-
मंडनु ॥ ८ ॥ दोहा ॥ श्रवण कुलाहल पार्थ सुनि आये-
सर धनु साजि ॥ निरखि बंधे दुरजोधने बली उठो-
रण गाजि ॥ ९ ॥ अरजुन उवाच ॥ चौपाई ॥ जो बांधौ
दुरजोधन राज ॥ कहै पार्थ तौ हम को लाज ॥ जद्यपि
हम को मारन आयो ॥ अपनो कियो आप फल पायो ॥
॥ १० ॥ तबहि पार्थ बिन वै गल गाजि ॥ तू मोपै कत उ

बरै आजि ॥ छांड़ि राय जो चाहै जियो ॥ नातरु बेधतु हौं तो हियो ॥ ११॥ गंधर्व उवाच ॥ दोहा ॥ दुरजोधन करि दुष्टता आयो तुव बध काज ॥ अबल अकेले जानि बन उर कछु धरी नलाज ॥ १२॥ मित्र भाव उर में धर्यौ तो बांध्यो भुव राय ॥ खोलि पांस सौंप्यो नृपति अर्जुनवर सुख पाय ॥ १३॥ छूटौ मृग ज्यौं बधिक नें यों भूपति उर जानि ॥ दियो रजायसु धर्म सुत बिदा करहु सुख मानि ॥ १४॥ अर्जुनउवाच ॥ आजु भये तुम तेउरिन यों कहि समदे राय ॥ बिलष बदन जुत करण तब चले सदन दुख पाय ॥ १५॥ चौपाई ॥ जैसी करै सु तैसी पावै ॥ ओछो ताकै ओछी आवै ॥ परहित कूप जो खोदै कोई ॥ निश्चय गिरि है तामें सोई ॥ १६॥ दोहा ॥ मलिन भूप आये सदन निस दिन कछु नसुहाय ॥ लखि लखि पुरबासी सबै यों तब करत चवाय ॥ १७॥ पुरबासीउवाच ॥ गये बिपिन करि दुष्टता धर्म पुत्र बध काज बाधि लये गंधर्व नृप उपजी दल उर लाज ॥ ॥ १८॥ कुसहि कलंक बिचारि के पार्थ उह्यौ अकुलाइ त्रास दिखायो गंधर्वै लीनो भूप छुटाइ ॥ १९॥ गये ताकि हे दुष्टता गई जीव की आस ॥ पार्थ छुड़ाये जानि के बैठ मलिन अवास ॥ २० हुते जहां नृप धर्म सुत धर्म राज तहां आइ ॥ देखत सत्या कर दयो माया मृग सुकराइ ॥ २१॥ आपु बिप्र को रूप धरि आयो भूपति पास ॥ कह्यो देहु मृग पकरि के यह पुज औ मो आस ॥ ॥ २२॥ तुम छत्री हौ बिप्र हौं यह टारो मों आरि ॥ तौ सी जै मो काज सब सिंह जाइ गो मारि ॥ २३॥ दोधक

छंद ॥ वचव पाच तबै उठि धाये ॥ कानन मैं मृगके २ ढिग आये ॥ दूरि कहूं कहुं लखत नेरो ॥ हाथ चढ़ि न २ घिरै कहुं घेरो ॥ २४ ॥ लागि तृसा बल थाकि रहे हैं लो श भये नहि जात कहे हैं ॥ पर्वत पै चढ़ि कै तब हेरैं ॥ देखत लख परयो जल नेरें ॥ २५ ॥ दोहा ॥ नकुल गयेतहं अवहित लीनो भरि करि नीर ॥ भइ अकाश वानी तहां चकित भयो सुनि धीर ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ मेरे बूझे उत्तर देहि ॥ जवत नीर आपु कर लेहि ॥ कह्यो न ताको इन कछु मान्यो ॥ नकुल नीर तब बाहिर आन्यो ॥ प्रानन तजि गये ताकी काया ॥ चिंता करी जुधिष्ठिर राय ॥ सहदेव धाइ नीर हित गयो ॥ विधि वाही तिनि हूं जी दयो ॥ २७ ॥ अर्जुन भीम गये जल पास ॥ लयो अंबु भरि कै सुविलास ॥ फिरि सो २ शब्द अकाशहि भयो ॥ उत्तर ताहिन तिनहूं दयो ॥ २८ ॥ मृतक परे ता जल की पारि ॥ गये जुधिष्ठिर भूप विचारि ॥ नीर जहां भरि अंजुल लयो ॥ सोई शब्द अकाशहि भयो ॥ २९ ॥ आकाश वाणी उवाच ॥ मैं बूझों तू उत्तर देहि ॥ पाछे देव नीर भरि लेहि ॥ धर्म विवाद सकल तिन ठयो ॥ भूप सत्य तब उत्तर दयो ॥ ३१ ॥ सवैया ॥ लाभ कहा गुणवंतन के संग हानि कहा जु समैं वित येते ॥ दुःख कहा जड़ मूढ़ की संगति सुःख कहा बुधिवंत भयेते ॥ ज्ञान कहा भव लोकैन आतम ध्यान कहा विषयान चहेते ॥ प्रीतम को पति आहिं सबै त्रिय सील व्रती नित कै चित येते ॥ ३२ ॥ चौपाई ॥ कह्यो धर्म हौं रीझ्यो तोहि ॥ प्रीति भई उर अंतर मो

हि ॥ अव तेरे जो मन में आवै ॥ वर मांगौ सो मोपै पावै ॥
॥ ३३ ॥ राजा उवाच ॥ दोहा ॥ चारौ वीर मरे परे ते अव दे
हु जिवाइ ॥ और कछू नहिं कामना यहै करौ सुख दाइ ॥
॥ ३४ ॥ धर्म उवाच ॥ दोहा ॥ जोइ चाहे च्यारि में सोई देहुं
जिवाइ ॥ और न जीवै तीन में निश्चय जानौ राइ ॥ ३५ ॥
चौपाई ॥ सोई अव कीजे सति भाव ॥ कही भूप सहदे
व जिवाव ॥ फेरि भई अरध में वानी ॥ तात भूप तुम मि
थ्या मानी ॥ अर्जुन भीम वीर मा जाए ॥ कहि काहे ते वे
न वताए ॥ राजा उवाच ॥ निज वीरन की पकरौं वांह ॥ अ
जस होय अतिथरनीमांह ॥ ३६ ॥ ताते सहदेव देउ जिवा
इ ॥ मिथ्या वचन न भाख्यो जाइ ॥ रीझौ धर्म देह धरि
आयौ ॥ सत्य वंत भूपति उर लायौ ॥ ३७ ॥ तेरो पिता ध
र्म हौ आइ ॥ अवे देउ हौं सवे जिवाइ ॥ जल सों छिरक
जिवाये चारि ॥ कही सुनौ सुत सव सुख कारि ॥ ३८ ॥
वारह वर्ष गई वन वीति ॥ चलियो व्यास कही जिहि
रीति ॥ धर्म राइ कहि स्वर्ग सिधाये ॥ पांचौ वंधु कुटी म
हं आये ॥ ३९ ॥ इति श्री महा भारत पुराणे विजय मु
क्ता वल्यां कवि॰ भीम राजा दुरजोधन मान भंग वर्ण
नो नाम विंशो ध्याय: २० इति वन पर्व्व समाप्तम् ॥ अ
थ विराट पर्व्व कथ नम् ॥ दोहा ॥ धर्म सुवन भुव भूप त
व सुमिरे श्री ऋषि व्यास ॥ आय गये तिहि ठामही ९
करण सकल दुख नास ॥ राजोवाच ॥ चामर छंद ॥
वुद्धि दे ऋषी स मोहि जाय कैं कहा रहैं ॥ सुःख सौं स
हैं जहां समूह वस्तु को लहैं ॥ सोध ग्रंथ पत्र सुधि १
रंच कौन पावही ॥ ठाम सो हमैं ऋ षीस करि कृपा व

गाव ही ॥ २॥ व्यास कहे वानी ॥ और तो छिमान मह मबर दू-
र नहीं ॥ जा कर विराट देस सुःख पाइहो तहीं ॥ चा-
रि बरस के हिये तहां सदा दया रहे ॥ गुप्त होउ जाड़
के ऋषीश वात यों कहे ॥ ३ ॥ दोहा ॥ तव ऋषीश को
वचन सुनि कीनो नृप पर वान ॥ तव विचार कीनो
यहे सव गुरु ज्ञान निधान ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ जे ऋषिर
नाम भूप को भाख्यो ॥ नाम जयंत भीम को राख्यो ॥
विजय विहन्नल अर्जुन नाम ॥ सहदेव ग्वाल भ-
यो गुन ग्राम ॥ ५ ॥ वाहुक अश्वनि नकुल कुमार ॥
यों कहि के ऋषि किये विचार ॥ छांडि गर्व सेवक
ज्यों सेव ॥ कीजो मन मारे तुम देव ॥ ६ ॥ व्यास की र
शिक्षा ॥ सवैया ॥ क्रोध तजो हो विरोध तजो अरु गर्व
तजो तुम धाम परा ये ॥ [illegible] करो सव धाय
सु जाय रहो सव आप दुराय ॥ ऊंचो उ नीचो कहे कोउ
आयके सोउ सुने रहियो सिर नाये ॥ सांच विमोचन
राजिव नैंन सदा रहियो तिनि सों चित लाये ॥ ७ ॥ सो-
रठा ॥ चलियो तेही छांह जव जैसो समयो लखो ॥ गर्व
नहीं मनं मांह नेकहु भूप विचारिये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ यह
विधि के वहु सीख दे गये व्यास ऋषि धाम ॥ सोइ मनु हि
रदे लखो मनसा वाचा काम ॥ ९ ॥ पाइ सीख भव पात
तव वनतें भये उत्पात ॥ पांचों वंधव करि छिमा आये
नगर विराट ॥ १० ॥ मृतक पुरुष सों वंगिहो आयुध वां
धे धाय ॥ नगर निकट तर वर समी ता पर राख्यो जाय
॥ ११ ॥ निरखि ग्वाल ता थल काहो याहि छवे जो आइ ॥
वरस दिवस लों मृतक यह ताकहुं रवे है धाइ ॥ १२ ॥

॥ चौपाई ॥ यह कहि कें स्यार्लीन बौराई ॥ आप नुचलेनगा
र कों राई ॥ पैठत नगर सगुन भये घने ॥ सह देव सों
भूपति यों भने ॥ १३ ॥ राजा उवाच ॥ कैसे सगुन होत
सुख कारि ॥ सोंतुम बंधव कहो विचारि ॥ ऐसे लच्छण
में पहिच्यांने ॥ हूहें काज सकल मन माने ॥ १४ ॥ सह दे
व उवाच ॥ सवैया ॥ बाल खिला वहि बालक कों सुत २
अस्तन पान करे सुर भी कों ॥ सब में दीस सिरा वहु
ग सब होयगो काज मही पति जीको ॥ लील गयो दि
स वाम चिकारि कछू यह मो उर लागत फीको ॥ केति
क काल वितीत भये तब सोच उठे कछु विग्रह हीको
॥ १५ ॥ चौपाई ॥ पुर में बंधव च्यारो रहे ॥ राज सभा च
लि भूपति गहे ॥ द्विज के रूप करो ती लिये ॥ सोहत द्वा
दश तिलकानि दिये ॥ १६ ॥ उठि विराट निरखत सिर
नायो ॥ कोन विप्र कहा तें आयो ॥ दै असीस यों विन
वैराय ॥ धर्म सुवन को वह वा आय ॥ गिरि गहूर वे द्
रि गये पांचो ॥ मोसों बैन काह्यो यह सांचो ॥ जादु विरा
ट मही पति पास ॥ रहियो तहां सुखी सवि लास ॥ १८ ॥
धर्म पुत्र तुव पास पठायो ॥ तातें निकट तुम्हारे आयो
सुनि भूपति कीनो सन मान ॥ बैठो गुण मुनि ज्ञान नि
धान ॥ १९ ॥ राजा उवाच ॥ जैमुधि नाम व्यास मुनि भा
ख्यो ॥ सुनि छिति पति बहु आदर राख्यो ॥ अर्द्ध सन
बैठो तब भूप ॥ सिर पर तान्यो छत्र अनूप ॥ २० ॥ २
फिरिकें आयो भीम कुमार ॥ आय भूप को कियो जु
हार ॥ दीरघ तन दीरघ भुज दंड ॥ निरखत बौनक भ
यो अखंड ॥ २१ ॥ राजा विराट उवाच ॥ दोहा ॥ कितने २

आय कौन तुम काहा लिह्यो नाम॥कौन जाति किहि हेतु तुम आये मेरे धाम॥२२॥भीम सेन उवाच॥गीतिका छंद व्यास नाम जयंत भाख्यो पंडु सुत को स्वार हौं॥सर्वदा २ करतो तहां वहु भीम को जु अहार हौं॥दया करते रचत भोजन हौं सलोनो अति घने॥अतिहि सुगंधित स्वच्छ विंजन सकल षट रस सो सने॥२३॥रीझि रीझि नरेश दिन प्रति देत पट भूषण घने॥रखवते वहु मान मेरो अनुजसर वर मागने॥हे विराट उदार हित करि वचन अंमृत भाखियो॥हेत सों वहु मान करिके निकट अपने राखियो २४॥निरख्यो सब करि भीम की भूपति ताको देह॥वैसो २ वली विचारिके ढिग राख्यो करि नेह॥२५॥फिरि अर्जुन नट राज है कीनो तिय को रूप॥कंकन किंकिनि आदि दै सजि आभरण अनूप॥२६॥सिंदुर सीमंत मार मुख २ मंहदी जुत सुभ पानि॥जावक चरण मृदंग की धुनि कीनी तिहि आनि॥२७॥सुनि भीतर बोले नृपति सब वूझ्यो व्योहार॥सकल ज्ञान संगीत लखि कला चौगुनी चार॥२८॥अर्जुन उवाच॥गीतिका छंद॥२ हौं तो आगारे धर्म सुत के रहत वहु सुख पाइ कै॥ भांति भांति रिझाव तो करि नृत्य गीत सुनाइ कै॥ कौन अपनो गुण कहे सब वूझि जैसोषि वोलि कै॥२ देहि सकल सुनाइ कै सब कहें विद्या खोलि कै॥२ ॥२९॥दोहा॥पारथ को हौं सारथी विजै विहं नल नाम॥जीवन आस रावरे गेह लियो विश्राम॥३०॥चौपाई॥धर्म पुत्र करि कै वहु नेह॥पठये इहां जानि कै गेह॥अब आभार हमारो लेहु॥वस्त्र अन्न चरम

द्रौपदी
रानी
रानियां
उत्तराकुमारी
पाण्डव राजा बिराट के यहां आये गुप्त रूप से
युधिष्ठिर बिराट

भरि देहु ॥ ३१॥ लघु कन्या बालक हि पढाऊं ॥ विद्या दै
जगमें जस पाऊं ॥ भूप सुता उत्तरा कुवारि ॥ सौंपी पठन
जोग सुख कारि ॥ ३२॥ फिरि सहदेव पहूंच्यौ आइ ॥ स
द्धि करी भूपति सो जाइ ॥ सहदेव उवाच ॥ हौं तो धर्म पुत्र
को ग्वाल ॥ करतो महा कृपा भुव पाल ॥ ३३॥ वितो दूरि
वन वीथिन गये ॥ दै उपदेस पैठ ह्यां दये ॥ करि जानो गा
वुय को सार ॥ अरु सब विधि करि सकौं दुध्यार ॥ ३४॥ र
मो देखत धनु को कहै गैरो ॥ को रुग जुरि सो समता कौरे
नाम सैनि यह दृत्ति हमारी ॥ यह जीविका सुचित्त बिचारी
॥ ३५॥ अरु जयंत जैन्नृषि मोहि जाने ॥ उनै बूझि भूपति र
सन मानै ॥ सुनि तिन जान्यो वुद्धि विशाल ॥ सौंपी सुरभी
कीनो ग्वाल ॥ ३६॥ दोहा ॥ फेर नकुल आयो तहां लिये
जात मोहाय ॥ देखि रूप की राशि तब चकित भये नर
नाथ ॥ ३७॥ विराट उवाच ॥ कौन जाति को आ हौ कहा तिह
रो नाम ॥ किहि कारण कवि छत्र कहि देख्यो मेरो धाम ॥
३८॥ नकुल उवाच ॥ दोधक छंद ॥ वाहु कु भूप जुधिष्ठिर र
केरो ॥ राखत मान सवै विधि मेरो ॥ वे दुरि कै वन माहिं
सिधारे ॥ दै सब तें हम कों दुख भारे ॥ ३९॥ वाहुर कूदत अ
श्व चलाऊं ॥ जोजन सौ इक वासर धाऊं ॥ बूझ हु जैन्नृषि कों
गुण मेरो ॥ मैं वसु नाम सुन्यो नृप तेरो ॥ ४०॥ मो कह सों
पिय वाहन जेतौ ॥ जानहुंगे गुण मों महं तेतौ ॥ यों सुनि
भूप उदार भयो चित ॥ हेत करौ वसुध्या तिलही नित र
॥ ४१॥ दोहा ॥ सौंप्यो साहन नकुल कर है भुव पाल उदार
॥ वहुरो आई द्रौपदी भूपति सदन मझार ॥ ४२॥ देखी
भूपति तरुनि जब संभ्रम वढ्यो अपार ॥ सची कि धौं र

रति मेनका रंभा ते सुकु मार ॥४४॥ नगी पन्नगी काम-
ल जो भुव आई धरि देह ॥सब रनि वास चकोर सों श-
शि ज्यों आई गेह॥ रानी उवाच॥ कहौ कौन की कुल व-
धू आई धौं किहि काम॥ कौन जाति बरणौं सकल सब
विधि के गुण ग्राम ॥४५॥ द्रौपदी उवाच॥ पंडु पुत्र गृह र
द्रौपदी रानी परम उदार॥ ताकी दासी मोहि गिन आई हौं
तुम द्वार ॥४६॥ सुंदरी छंद॥ वे बन में पति संग गई दुरि
मो सों बैन कह्यो हँसि के मुरि॥ आहु विराट मही पति के
घर॥ काटहु काल तहां दुहि औसर ॥४७॥ दोहा॥ आई
तुम सेवा करन मोहि सुजानी नाम॥ आज्ञा देउ कृपाल
हैं करौं इहां विश्राम॥४८॥ रानी उवाच॥ कौन सेव उ-
त्तम कहा करि जानो कहि बाल॥ चंद्र वदन सों वेगि क-
हि सोइ सौंप्यो इहि काल॥४९॥ द्रौपदी उवाच॥ दंडकर
छंद॥ मंजन कराऊं आछे भूषण बनाऊं चुनि चीर पहि
राऊं औ भोजन संजो इहौं॥ दर्पन दिखाऊं दरसाऊं
महा नीकी दुति कुंकुम सुगं ध्य चन्दन सार उर लाइहौं॥
बीजना डुलाऊं जल सीतल पिलाऊं अरु सेज हू वि-
छाऊं नक रागी काज दोइ हौं॥ ऐसे के सुजानी कहै जा-
नो नीके मेरी रानी झूठो होन रवै हौं और पाइ हौं न थोइ
हौं॥५०॥ रानी उवाच॥ चौपाई॥ सत्य वचन तैं कहे सुजा-
नी॥ मैं तुम निज पंडौ की जानी॥ तन या मन मेरे गृह र-
हिये॥ मोसों मन की बातें कहिये॥ हल की भारी जो कोउ
भाखै॥ त्य जिन ताको आदर राखै॥ थोरे हू कीजे सन्तोष
॥ निस दिन करि हौं तुम पर दोष॥५१॥ सुजानी उवाच॥
गीतिका छंद॥ करत रक्षा पांच गंधर्व अंत रिक्ष सदा व

तैं ॥विक्रमी बल वंत बहु विधि घोर रूप महा लसैं ॥दोहि २
ना कों दुःख जो वे आय ताहि संघारि हैं ॥ देवको नर देव २
को छिति देव कौन विचारि हैं ॥५३॥ पाप दृष्टि जु मोहि २
देखै प्राण गत सो जानियो ॥ मो पंच रक्षक वे सदां यह स-
त्य उरमें राखियो ॥ निकट तिनि राखी सुजानी परम जि-
य सुख पाइ कै ॥ देत शिक्षा रहत सब सिंगार रच्यौ ति ब-
नाइ कै ॥५४॥ दोहा ॥ इहि विधि पांचौं पंडु सुत और द्रौ-
पदी वामा काल छेप तिन के वासें छत्र सकल गुण ग्राम
॥५५॥ चौपाई ॥ होहिं एक संग काल हि पाई ॥ सकल अ-
वस्था वरनै जाई ॥ जब नृप पति हि ओर रन आवैं ॥ प्र-
थमहि जैऋषि को सिर नावैं ॥५६॥ इति श्री महा भारत
पुराणे विजय मुक्तावल्यां कवि छत्र विरचितायां पां-
डव अज्ञात वास वर्णनो नाम एक विंशो ऽध्यायः ॥२१॥
॥दोहा॥ अपनी दुहिता को रच्यो नृपति विराट विवाह
॥ छत्र सकल पुरमें भयो बहु बहु भांति उछाह ॥१॥ छि-
ति के किते छितीस सब आये तिनि के धाम ॥ शक्र २
समान पराक्रमी उत्तमें जिनि के नाम ॥२॥ सोरठा ॥
सभा रची तिहि काल भूमि राव ति सौ जग मगी ॥ आप-
नु ज्यौं नर पाल भूमि देव सब देव से ॥३॥ भुजंग प्रया-
त छंद ॥ कहूं नृत्य का तान को रूप सोहैं ॥ कहूं राग की
तान सौं चित्त मोहैं ॥ कहूं वांचनी लै मृदंगी नचावैं ॥
लसैं उर्वसी सी सबै मान पावैं ॥४॥ कहूं मल्ल माते भि-
रैं भीम भारे ॥ कहूं मेष लरै डुलै डारे ॥ कहूं मत्त मा-
तंग ते धार घूमैं ॥ लखि पुत्र के हर्षितं चाव भूमैं ॥५॥
दोहा ॥ मल्ल एक आयो तहां बालो दांधे जाल ॥ ...

बैठो उर पीत पट बोलि उठो उत्ताल ॥६॥ सभा मांझ नर नाह सब चारि वरण की भीर ॥ बंड़ धनु धर साहसी देखत हों सब वीर ॥७॥ मोसों मल्ल जुरै नहि कोऊ काहूं देश ॥ है कोऊ मोसो जुरै आज्ञा देहु नरेश ॥८॥ छप्पै ॥ मरहठ सोरठ जीति जीति सारंग तिलंगी ॥ जीति विदर्भी मल्ल सकाल भूधर के संगी ॥ मगध जीति मेवार मद्र धर जीति चंदेरी ॥ बंदर वारिधि घाट जीति कर नाट कहेरी ॥ कवि छत्र जीति अंगद नगर नहि कोऊ सर वरि करि सके ॥ भुज वरणहु सभा तिहि सूरके जो करि वरसो सन्मुख तके ॥९॥ चौपाई ॥ सुनि सुनि सभा न बोले कोई ॥ मन साहस काहूं नहि होई ॥ नृपति विराटहि सुधि है आई ॥ लीनो सार जयंत बुलाई ॥१०॥ विराट उवाच ॥ सुनि जयंत तू आयसु मानि ॥ मल्ल युद्ध तू यासों ठानि ॥ जो हारे तो लाज न होइ ॥ जीते द्रव्य देहिं सब कोइ ॥११॥ दोहा ॥ तब जयंत यह मल्ल सों कही बात हर खाइ ॥ हम तुम रस सों खेलिहैं लीजे सभा रिझाइ ॥१२॥ तू जो आने रोष मन डारै भुजा उपारि ॥ हम पर देसी न्याय ही देहैं भूप निकारि ॥१३॥ मल्ल उवाच ॥ तन दीरघ दीरघ भुजा वचन कहत कात दीन ॥ यों सोऊं नहिं उचरै होइ जतन को हीन ॥१४॥ चौपाई ॥ मल्ल युद्ध दोउ मिलि करें ॥ लट पटाइ धरती थकि परें ॥ फिरि फिरि वल करि उठत संभारि ॥ कोउन मानत है में हारि ॥१५॥ जबहि जयंत भुजा बल कियो ॥ मल्ल उठाइ पहुमि तें लियो ॥ करि बहु क्रोध सु भूतल डारो ॥ जनु सुर वज्र धाय गिरि पारो ॥१६॥ संम्हारि उठो ए वचन सुनाय ॥ अब

मारों तू खल कित जाय ॥ लेतव गुरुज उठो अकुलाई ॥ हन्यो जयंत नासिका आई ॥ १७ ॥ बिषम चोट थर हरौ शरीर ॥ मूर्छित पहुमि गिरौ रण धीर ॥ निरखत जे रिषि और सुजानी ॥ हैहैहै करिकै अकुलानी ॥ चेति जयंत उठौ गल गाजि ॥ जानन पायो सो खल भाजि ॥ भूमहिं रसात वार धरि मारौ ॥ गहरो गर्व्व दुष्ट को गारौ ॥ १८ ॥ सो फिरि जसेन करि वल जोरि ॥ दो वर कीनो मल्ल मरोरि ॥ देखत सभा सकल नर हरषे ॥ वसन रजत मनि मानिक बरषे ॥ २० ॥ मृतक दियो सुर सरी वहाई ॥ तव सव सम देराजा गई ॥ जव सव नृपति विदाह्वै गये ॥ २
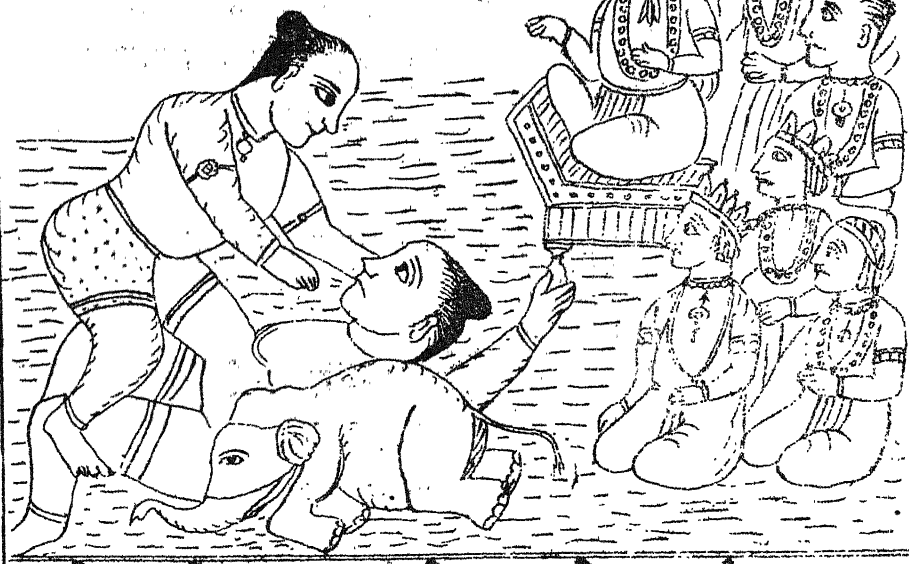
अपने अपने गृह सुख लये ॥ २१ ॥ दोधक छंद ॥ मल गयंद हुतो इक ऐसो ॥ अंजन को भुव धूमर जैसो ॥ नीरज के तन छोरि चलायो ॥ गर्जत धाम नि डारतु आयो

॥२२॥कानि माहा वत कीनि कौरे सो॥प्राण तजे दिग आ
वत हैं सो॥सुंदर मंदिर डार दयेजू॥भीतर सव नर नारि
भरे जू॥२३॥भूपति सौं सव लोग पुकारे॥हैं कुंजर नर
केतिक मारे॥ता छिन के तिक लोग पलाये॥वाघहु या
को भाषत आए॥२४॥चौपाई॥कोऊ निकट सकै नहि
जाई॥भूपति सौं सव कही सुनाई॥क्यौंहू हाथन कुंज
र आवै॥कौं उपाय जो भूप वतावै॥२५॥राजा उवाच
॥कै सव मिलिकै वांधो जाई॥कै अव शस्त्र गहौ कि
न जाई॥वोलि जयंत हि आज्ञा दई॥या गयंद तें चिं
ता भई॥२६॥केवल वांधि कै लावहु याहि॥पुर को कं
टक वेगि निकारि॥कहै जयंत जु मारौ याहि॥कुंजर
को जिनि पकरौ ताहि॥२७॥सिंह नाद गाज्यो वल वीर
॥तव गयंद पर हल्यौ शरीर॥पूछ पकरि रुक रोक्यो से
सौं॥दावत मृग कों चीतो जैसौं॥२८॥पकरि रदन ले प
हुंच्यो थान॥ज्यौं अजया गहि लीजे कान॥वांधि ताहि
भूपहि सिर नायौ॥तव जयंत वस नंनि पहि रायो॥२९
॥दोहा॥इहि विधि वीते मास दश नृप विराट के तीर॥
काल छेप इहि विधि करैं पंडु पुत्र वर वीर॥३०॥इति
श्री महा भारत पुराणे विजय मुक्ता वल्यां कवि छत्र
विर चितायां भीमसेन विजय गज वध वर्ण नो नाम
द्वाविंशो ऽध्यायः॥२२॥

सोरठा॥नृप तरु नी को वंधु कीचक वली विशाल तन
जोवन मद अति अंध सहस दुरद सम ताहि वल॥१
चौपाई॥सत वंधव कीचक अति वली॥वर अव गा
हत वन अस्थली॥सोहत एक मात के जाए॥ऐसे सु-

भट महा पति पाए ॥२॥ गीतिका छंद ॥ इक दोस कीच-
क मोहि कै निज महल भूपति कै गयो ॥ कीनो प्रणा-
म अनूप भगनी देखि कै आसन दयो ॥ पवन ताक-
हं हौरे सुजानी नृपति त्रिय भोजन करै ॥ रूप दासी
को विलोकत देह की चक थर हरै ॥३॥ बात भगि-
नी सों कहै चित अटकि दासी सों रह्यो ॥ काल घेरो
मूढ यह हंसि कै सुजानी यों कह्यो ॥ हैं पंच रक्षक मो-
हि गंधर्व सुत ताहि संघारि हैं ॥ यह वली होउ कि हो-
हु निर्वल काछन चित्त विचारि हैं ॥४॥ काम अंध
भयो सु आतुर तुरत भगिनी सों कहै ॥ देहु दासी मो-
हि मोरो इच्छा मो उर मैं रहै ॥ देहु वदले सहस दासी
एक यह मोहि दीजिये ॥ छांडि लज्जा कही तोसों
कह्यो मेरो कीजिये ॥५॥ रानी उवाच ॥ आहि दासी द्र-
ोपदी की कहो किहि विधि दीजिये ॥ रहै मेरे उदर
सम लोभ चित्तन कीजिये ॥ जीविका हित आइ वि-
रमी कहो किहि विधि पाइये ॥ रहै नायन वीर मोपै
आप धाम सिधाइये ॥६॥ कीचक उवाच ॥ काहि कै-
से तू राखिहै दासी वल करि लेहुं ॥ राज पाट सब छी-
निकै कोटि कोटि दुख देहुं ॥७॥ चौपाई ॥ चेरी लागि न
साहिव राजा ॥ तेरो कहा सुधरि है काजा ॥ अति वल-
वंत वीर है मेरो ॥ राखि लेहु को ऐसो तेरो ॥८॥ रानी
उवाच ॥ पर तरुनी रत जे नर भये ॥ अपनी करनी ते
मिटि गये जो चाहै अपनी कुशलात ॥ फेर कहौ जि-
नि याकी वात ॥९॥ सवैया ॥ अंध महा रूप कीचक हौ
सिय राघव को सवता उर आन्यो शत्रुहि शाप दयो

मुनि गौतम जानि कुकर्म के कर्मनि करयो श्रुभनि श्रुभ हेत तरुनी श्ररु तारहि लागि वध्यो वरवाल्यो यों समुझ मनमें शठहू किनि कोन गयो पर वाम को पाल्यो ॥१०॥दोहा॥भगिनी मुख ये वचन सुनि उठि सुधि ध्यायो ध्याम॥विकाल महा जिय काल नहीं घरी महूरत जाम॥११॥चौपाई॥कीचक कों सुधि वुधि नहिं रही॥सूने सदन सुजानी लही॥काम अंध अंचल तव गह्यो॥आतुर ह्वै या विधि सों कह्यो॥१२॥चित मेरो तोसों अव लाग्यो॥भौ आशक सु धीरज भाग्यो॥मेरें तरुनी शशि उन हारी॥सव पर होउ सुहा गिल नारी॥१३॥उत्तम भूषण वसन रवनाऊं।श्ररु दासी को नाम मिटाऊं॥काहे जोवन र जनम गंमावे॥तू तौ मो उरमें अति भावे॥१४॥सुजानी उवाच॥गंधर्व पंच मोहि रख वारे॥दीरघ र तन वल विक्रम भारे॥मोहि छुवत वे तुरतहि आवें॥कीचक तेरे प्राण नसावें॥१५॥तोहि मेरे मो र आप जम ह्वै हैं॥मोही दोष सकल जग दैहैं॥यह सुनि कीचक वहु भय मानी॥हरत गयो मुक राय र सुजानी॥१६॥निस दिन ताकहँ नींद न आवे॥धन संपति घर वार न भावे॥दूती वोलि सु कहि विधि वाही॥कह दासी मो चित वसि रही॥१७॥भौरे धाम सुजानी आवे मो मन इच्छा पुजवे सवे॥१ वहु वातन दूती समुझावे॥चित्त सुजानी कछू न लावे॥१८॥यह विचारि नहिं वोले सोइ॥आजु कालि काहू काल हन होइ॥कीचक आतुर ह्वै उठि धा

हिये लखै कछु नहिं कोइ ॥ ३१ ॥ चौपाई ॥ अवधि विंते कीचक संघारौं ॥ तव नहिं और विचार विचारौं ॥ कै तौ लगि रहिये मन मारि कै वन वास करा बहि ना- रि ॥ ३२ ॥ विलखि वदन त्रिय पहुंची तहां ॥ हुते बिहं नल अर्जुन जहां ॥ वरनी कीचक की अघि काई ॥ भूपति के मन कछू न आई ॥ मेरो कह्यो गसाई कीजे ॥ हनि कीचक को जग जस लीजे ॥ तुमहि अछ- त कीचक दुख दयो ॥ पौरुष तहां तुम्हारो गयो ॥ ३३ ॥ अर्जुन उवाच ॥ जो भूपति कौ आयस पाऊं ॥ तौ कीचक को मारि दिखाऊं ॥ नृपकी कानि न तोरी जाइ ॥ तातें कछू न करौं उपाइ ॥ दोहा ॥ गई नकुल सहदेव पै विलखि वदन वर नारि ॥ अघि काई ता दुष्ट की सव विधि कही विचारि ॥ ३४ ॥ सुजानी उवाच ॥ चौपाई ॥ कीचक वांह हमारी गही ॥ तुम में कहो कहा पति रही ॥ मेरे जियकी परिहरु सारी कौं नहिं अपने अरि को मारौ ॥ ३६ ॥ सहदेव न- कुल उवाच ॥ सुनि सुनि तेरे वचन ये वाढ्यौ क्रो- ध अपार ॥ मेटो जाइ न नृप वचन विनयौ वारं वार ॥ ३७ ॥ मारें कीचक छिनक में भूपति आयस पाइ ॥ करै अवज्ञा नारि अव को कहि नर कै जा- इ ॥ ३८ ॥ चौपाई ॥ मास एक तू और निवारि सव र- न किहैं कीचक को मारि ॥ दुनहू तें त्रिय भई नि- रास ॥ पहुंची भीमसेन के पास ॥ ३९ ॥ सजल नैन भरि आंसू डारे ॥ मींडत नैन भये रत नारे ॥ पव- न पुत्र तव यह विधि जानी ॥ विलखी ठाढ़ी द्वार र-

लजानी ॥४०॥ आयो द्वार लखी त्रिय जैन ॥ लोल लोल की-
हे नैं बैन ॥ बोली बिलखी अस्रु बनि मोह ॥ कीचक
दुष्ट गही मो बांह ॥४१॥ पंडु सुत नि पै फिरी पुकारि
बन गुह्यारि लगी कोउ चारि ॥ अब जो सोई तू सहि र-
रैहै ॥ गहि सो दुष्ट मोहि ले जैहै ॥४२॥ सवैया ॥ रोष च-
ढ्यो विषसो सब अंग लखी त्रिय के मुख पै मलिना-
ई ॥ बूझत उत्तर फेरन देत गये भरि के मुख बातन र-
आई ॥ कीचक को सुनि ता मुख नाम सुदेरि रही दृ-
ग में अरु नाई ॥ देखत ही वधि हों छिन में यह पै-
न युधिष्ठिर भूप दुहाई ॥४३॥ पै हथि मीचु बुला-
इ लई तिन स्यार वराइ कै सिंह सों खेल्यो ॥ दादुर
धाइ जसो अहि सों सुक पोत किधौं वर बाज सों र-
केल्यो ॥ मूषक जइ मंजारहि सों पग पील को चाहत
गहि भेठल्यो ॥ ऐसो है काल कराल सोई वार जाय भु-
जंगम के मुख मे ल्यो ॥४४॥ दोहा ॥ काल सर्प सों ख-
ल डस्यो काम लहरि अकुलाइ ॥ पूंछ मरोरी सिंह की
अब जीवत कित जाइ ॥४५॥ जो नहिं मारो छिनक
में आवै कुंतिहि लाज ॥ जो बैरी बल करि रहै जीवन
कछून काज ॥४६॥ द्रौपदी उवाच ॥ चौपाई ॥ तुम दे-
खत सब पंचनि मांह ॥ दुसासन पकरी मो बांह ॥
दुर जोधन तब छीने चीर ॥ हुते अछत तहँ पां-
चो वीर ॥४७॥ बिपिन जाय दृथछल कै हरी ॥ बां-
ध्यो दुष्ट कानि नहिं करी ॥ दुख दै कीचक फारो र
चीर ॥ तातैं व्याकुल भयो शरीर ॥४८॥ दोहा ॥ सभा
मांझ सुनि कीचकै भीम चल्यो अकुलाइ ॥ अबकी

मारें दुष्टों अवधौं सको कचाइ ॥५१॥ द्रौपदी उवाच ॥ अब न उक्त बल कीजिये जाने काल कचाइ ॥ दुष्टहि मारौ रैनिमें रहे अखार आइ ॥५०॥ मैं सहेट तासों वदी आवे तहां निसंक ॥ ताहि तहां संघारि यो करिये त्यान अंक ॥५१॥ पूरो मतो स्तु कीजिये आवे जामें जीति ॥ नहीं उतावलि कीजिये यहे स्यान की रीति ॥ ५२॥ चौपाई ॥ भीम सेन तरुनी वपु कीने ॥ दृग अंजन सिर सिंदुर दीने ॥ पट भूषन आ भरन सम्हारे ॥ कटि किंकिनि नूपुर रुन कारे ॥ ५३॥ करि तरुनी वपु पहुंचे तहां ॥ वदी सहेट अखार जहां ॥ वैठि रह्यो ता ग्रह में जाय ॥ कीचक काल पहूंचो आय ॥ ५४॥ दोहा ॥ होन हार सो नहिं मिटे भावी महा वलिष्ट ॥ कीचक मन सिज सिंधु में वोल्यो वली अदिष्ट ॥५५॥ दोधक छंद ॥ रैनि भये सुख कीचक पायो ॥ वाम सहेट वदी तहं आयो ॥ देखि त्रिया वपु यों तु सिभाख्यो ॥ तू धनि है अपनो पन राख्यो ॥ ५६॥ आवत ही करता वांहे मेल्यो ॥ मान कियो वहु वार न ठेल्यो ॥ नेक जही वल कीचक कीनो ॥ दुष्ट ढकोलि त्रिया तव दीनो ॥ ५७॥ जानि गयो यह वामन होई ॥ है वर वीरनि में वह कोई ॥ ताकहं मारि सुजानी लाऊं ॥ जोनत यौं द्विज दोष निपाऊं ॥ ५८॥ सोरठा ॥ भिरे कोपि दोउ वीर लर पटास लोटल लिपटि ॥ सुर समर रत वीर मधुर जनु भूतल भिरत ॥ ५९॥ चौपाई ॥ है मैं हारि न कोऊ मानें ॥ कोप अमित गति जुद्धहि ठानें ॥ अति वल भीम सेन तव कि-

किरिया कीजे ॥ ले कुप्प ताहि तिलां जलि दीजे ॥ ७० ॥
लखि कुंत वालहि बोले राउ ॥ परजा लोग नि वेगि
बुलाउ ॥ लै कीचक को घाटहि जाउ ॥ विधि सों सव
किरिया कर वाउ ॥ ७१ ॥ गीतिका छंद ॥ कहे जे ऋषि
नीच लोगनि नहिं अंग छुवाइये ॥ वरण उत्तम होय
जाइ ताहि वेगि बुलाइये ॥ सुद्धि आई भूप को तव
ले जयंत बुलाइके ॥ वारं है दूक राज आज्ञा तिहि द-
ई तव टारि कै ॥ ७२ ॥ फेरि आयो पवन को सुत भूप
तासों यों कहे ॥ वचन मेरा मेटि के कहि वेग मूढ
कहा रहे ॥ पंडु सुत की कानि राखों क्रोध हू के सै
हनो ॥ तू तो रहे सन मान सों वहु अनुज सरि वर
हों गनो ॥ ७३ ॥ जयंत उवाच ॥ दोहा ॥ मोसा कीचक
मैं कहा कत कीजत है क्रोध ॥ मैं दुख पायो वादि भूप
अंत हि लीजे शोध ॥ ७४ ॥ भोजन भाजन छाडिके हों
नहिं अंतहि जाउं ॥ मनसा वाचा कर्मना तुम को महा
डराउं ॥ ७५ ॥ सोरठा ॥ करी कृपा नर नाह इहि विधि क-
ही जयंत सों ॥ ले कीचक को जाहु दूरि नगर तें काल
करो ॥ ७६ ॥ जयंत उवाच ॥ वंधु कुटुंव जु होइ सोई
मृतक हि काढि है ॥ कहा परी है मोहि ऐसे कामनि
हों करों ॥ ७७ ॥ दोधक छंद ॥ भूपति को फिरि आय-
सु पायो ॥ यों नर नाथ हि वैन सुनायो ॥ जो अव भो
जन सों कछु पाऊं ॥ लै कीचक को घाट सिधाऊं
॥ ७८ ॥ भोजन को भुव पाल मंगायो ॥ वैठि जयंत
तहां सव खायो ॥ राखहि कीचक के सव भाई जम
ता सों नहिं नेक अघाई ॥ ७९ ॥ दोहा ॥ करि भोजन

लागि गुहारि तहां चलि ऐहैं ॥ भूपति संग चमू सब दीनी॥ वेगि विदा तिहि औसर कीनी ॥८॥ तोटक छंद ॥ नर नाह चमू सब साजि चले॥ चतुरंग बने सब सैन भले ॥ दिशि उत्तर आपु महीप गये ॥ वन वीथिन सब पूरि लिये ॥९॥ दोहा ॥ कोपि सुशर्मा तब गयो दिशि दक्षिण उत्ताल ॥ तत छिन नृपति विराट के हरे धेनु के जाल ॥१०॥ भुजंग प्रयात छंद ॥ किते ग्वाल बांधे सुशर्मा जहांतें ॥ किते जीव लैके भगे हैं तहां तें ॥ किते आयकै भूपही पै पुकारे ॥ किते धेनु के वृन्द लीने निहारे ॥११॥ चले सैन लै वीर यों आपु भाखें॥ किधौं आपही जायकै धेनु राखें॥ तबै भूप सोचै कहा मंत्र कीजै ॥ रहे आपनो दास सो बोलि दीजै ॥१२॥ दोहा ॥ कीचक कों सुमिरै नृपति यह कहि वार वार ॥ वा बिनु सुरभी वेंडिये को कहि लगे पुकार ॥१३॥ हरि ने बोल्यो भूप तब सैन पलानो जाइ ॥ धाय सुशर्मा वीर तें सुरभी लेहु छुडाइ ॥१४॥ नग स्वरूपिणी छन्द ॥ नरेश साजि कै चले ॥ अनेक सूर लै भले ॥ कुरंग ज्यों तुरंग हैं ॥ करी समूह संग हैं ॥१५॥ महा कराल क्रोध में ॥ चले सु धेनु सोधमें ॥ न अस्त्र सों कहूं मुरें ॥ सुवर्म लै तहां जुरें ॥१६॥ दोहा ॥ विजय विहन्नल गृह रह्यो पंडु पुत्र ते चारि ॥ देखत कौतुक जुद्ध को सके न कोऊ हारि ॥१७॥ चौपाई ॥ तब रण सुभट सुशर्मा कोप्यो ॥ भूप विराट नहीं पग रोप्यो ॥ भागत जानि बांधि रथ घेरो ॥ लैकरि ताहि पयानो करे

१८।।दोहा।।सहदेव वपु ग्वाल को जे ऋषि को सिर नाइ।।टेरि सुशर्मा हांक दै पोर्यो तत छिन जाइ
१९।।मत्त करी दल तासु को अंकुश लै फिरि धाइ फेर्यो वल करि सिंह ज्यों गह्यो कोपि धसि जाइ
२०।।चौपाई।।सवै सुशर्मा वल करि हार्यो।।पंडु पुत्र सों ध्वरिग पछार्यो।।मल्ल जुद्ध करि दल विच रायो।।छोरि विराट दल मेलायो।।२१।।जे ऋषि कों तिनि माथो नायो ताकी सेना वहु सुख पायो।।लै सुरभी तन मन सुख पाइ।।चले आप गृह को तव राइ।।२२।।उत्तर दिशि दुरजोधन राइ घेरि लई सुरभी सुख पाइ।।करण दुसासन अरु भगदंत।।किते जूथ लैं चलैं तुरंत।।२३।।दोहा।।भागे ग्वाल पराय कैं वहु विधि करी पुकारि।।उत्तर कों निश्चिंत ह्वै वैठो मदन मझारि।।२४।।छप्पै दुरजोधन इक हरी हरी दूसासन वल करि।।एक करण कुल हरी कोप करि आंग धरि धरि।।हरी हरषि भगदंत किती कपिला अरु धोरी।।लछिमन कुंवर कलिंग हरी के तिव जुग ठोरी।।हरी द्रोण सुरभी किती कौन भवन यह किज्जियं।।सुनि उत्तर उत्तर दिशा सव लै धन लिज्जियं।।२५
चौपाई।।करत कुला हल गिरि गिरि जात।।दीरघ दीरघ ध्वर कहि वात।।ऐसो धिक है जामें जिय।।कासा कुमर स हारें हिये।।२६।।उत्तर उवाच।।कोसें रे किम सारथि होतो।।तोकहि कौरव कोदल केतो।।विन केहर कैरव वाहों।।पैड़ा पातैं नृप को चाहों।।

धरौं जिहि आपनि संकन संक रवीसी ॥ सायर सं-
गाम कौ अब गाहन आप भुजा बल पैज करीसी ॥
बाण सरासन सूर सनैं यह बानि भली कछु मैं न-
हिं दीसी ॥ पौन के गौन हुते अतिलाघव आवनि २
स्फूर्ति अर्जुन कीसी ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ उत्तर सों सारथि
कही करिन कछू भय अंक ॥ सकल निपातौं अरि
चमू रहियै आपनिसंक ॥ ३८ ॥ नगर निकट तरु वर
समी तापर धनु अरु बाण ॥ आनिउत्तर इल मोनि-
कट गंजौं अरि दल प्राण ॥ ३९ ॥ दोधक छंद ॥ बैन
सुन्यो उठि उत्तर धायो बेगिहि तादुम के ढिग आयो ॥
लेत ही पन्नग सादर देख्यो ॥ संभ्रम चित्त महा तिन
लेख्यो ॥ ४० ॥ सारथि कौं फिरि बैन सुनाये ॥ व्याल
भये द्रुम मो कहं धाये ॥ यों सुनिकै तब सो उठि २
धायो ॥ बाण सरासन लै तहं आयो ॥ ४१ ॥ दोहा ॥
निर्गुण धनु गुण वंत करि सूधे कीने बान ॥ काढ़ी
गंग भूमितें बेधै मकर सु प्रान ॥ ४२ ॥ पहिरि कव-
च सिर टोप दै कौ धनुष टंकार ॥ हांको रथ बहु २
सोघ करि पहुंच्यो कटक मकार ॥ ४३ ॥ बीर धनु २
धर धीर के उरमें कछू न संक ॥ भट दुर्धट घट सब
कटक करो महा आतंक ॥ ४४ ॥ चौपाई ॥ देख्यो २
आनि धुजा हनु मंत ॥ जाको बल सो कहत न अंत ॥
पूर्यो शंख धनुष टंकारी ॥ जीतन दुर्जन दल पग
धारो ॥ ४५ ॥ उत्तर उवाच ॥ मो सों कहिन त्रिहं नल
आनि ॥ सत्य कहो कौं आप निदान ॥ अबहुं बात मैं
कछु कहत न आवै ॥ महा निसंक जुद्ध को धावै ॥

४६॥अर्जुन उवाच॥सुनियें उत्तर यह सत भाय॥जै ऋषि भूप जुधिष्ठिर राय॥हौं अर्जुन यह सुनो कुवार॥भीमजयंत तुम्हारो ग्वार॥सह देव सुरभी रखत सैन॥वाहक नकुल मंनो महि मैन॥४७॥दोहा॥वह रानी है द्रूपदी जाहि सुजानी नाम॥वाकुन भय चित कीजियें जीतौं सव संग्राम॥४८॥हमही लगि हरुभी हरी लेत हमारो साथु॥२ अव सुनि वीती अवधि सो तव मैं कीनो आथु॥४९॥फिरि उत्तर लाग्यो चरण सुनि सांई सति भाइ॥दसौं नाम अपने कहौ तो मोमन पति आइ॥५०॥अर्जुन उवाच॥जन्मो कोहर कृष्ण तन अर्जुन पायो नाम॥सित वाहन अत २ फालगुन कहम जिष्णु उर जाम॥५१॥विजय किरीटी २ नाम भो और विभत्सुद्धि जानि॥सव्य सांची अरु धनंजय ये दश नाम वखानि॥५२॥चौपाई॥भीम सेन सव कीचक मारे॥लखि अपराधी ते संघारे॥मार्यो मल्ल कुरुद गहि लायो॥तेरे गृह हम बहु सुख पायो॥तेरें आम विपति हम टारी॥बरस दिवस की अवधि निवारी॥द्वादश वरसें वनमें रहे॥तुम छाया में अति सुख लहे॥५४ उत्तर उवाच॥हलकी भारी जोहम कही॥समरथ आपनु सो सव सही॥जोकछु हमतें भो अपराधु॥सो सव छमियो आपनु साधु॥५५॥दोहा॥वीर धनंजय आंध करि चल्यो सवल रथ हांकि॥अति वल परे तुरंग तव श्रमित रहे तहं थाकि॥५६॥तेज दयो गंधर्व तब फिरि वल भरे तुरंग॥कही द्रोण गुरु पारथ सों कौन करै रण रंग॥५७॥द्रोण उवाच॥सवैया॥आयो धनु धरधीर वली सु कहौ रण सन्मुख को अव रैहै॥जहु जुत्यो

गत सूर नहीं फिरि हेरत ॥ तेगण भूमि थिरे नहिं घेरत ॥
३६ ॥ सवैया ॥ घोर घने घन से घुमडे उमडे दल दीरघ
दीसन लागे ॥ चामर से धुर वाधर ध्यार धुजा चल दा
मिनि की दुति जागे ॥ बुंदनि से वरसें सर जाल सुवी
र सवै रस वीर सों पागे ॥ पीन ज्यों पत्थर उड़ाय दये
भट्ट राय के नीरद से भट भागे ॥ ६९ ॥ अक्षय तूनतें
एक कढ़े सर देखत ही लखिये करपे सों ॥ आवत ही
मृग जूथ नि ऊपर कोपि उठो सुत के हरि कैसो ॥ सेही
करे भट वाधि सवै तिन और कियो वर विक्रम ऐसो ॥
काटि दये ध्वज वेर खचौर विछाद दयो कदली वन
जैसो ॥ ७० ॥ भुजंग प्रयात छंद ॥ जवे पार्थ के क्रोध सों
वान छूटे ॥ किते सैन के जुह के सीस टूटे ॥ गये भागि
के एक पीछे न चाहें ॥ कहै एक ते जानु जे प्रान वाहें
॥ ७१ ॥ महा क्रोध कैके घने वाण साधे ॥ ससोके किते
वीर के जूथ वांधे ॥ छुट्यो मोहिनी वाण सो सर्व मोहे ॥
कहां लों वखानो नमोहैं सु कोहै ॥ ७२ ॥ चौपाई ॥ मोहि
रह्यो दल संभ्रम छाइ ॥ स्यंदन मांहि भीषम राइ ॥ उत्तर
पठ्यो तबै प्रचारि ॥ पट भूषण सब लाउ उतारि ॥ ७३ ॥ र
गीतिका छंद ॥ सीस भूषण सेन के नृप आदि दे सब
के हरे ॥ आनि कै तिहि वार उत्तर पार्थ के आगे धरे ॥ जागि
कै कुरुराज लज्जित वाण धनु कर गहि लियो ॥ धाय
भीषम वरजि राख्यो प्रगट तासों यों कियो ॥ ७४ ॥ ए-
क पार्थ अनेक जानो जुद्ध जीति नहीं सको ॥ लाज है
है वीर भागत चित्तमें यह नातको ॥ विकाल है किस
खात विथ वेरा कछू नहिं मुख ते कहै ॥ व्याल ज्यों
लै स्वास दीरघ वचन घनसे उर सहै ॥ ७५ ॥ दोहा ॥

भीषम आयसु मानिके दललै चल्यो अवास ॥ धाव-
न धाइ गयो तवै नृप विराट के पास ॥ ७६ ॥ दूत उ-
वाच ॥ जीती उत्तर अरि चमू कौरव गये पराइ ॥ सुत
सपूत कीनी विजय भाग तिहारे राइ ॥ ७७ ॥ चौपा-
ई ॥ भूपति खेलत पांसे सारि ॥ संग लिये जैऋषि र
सुख कारि ॥ हरख्यो सुत की कीरति गावै ॥ सव जन म-
न आनंद वढ़ावै ॥ ७८ ॥ जैऋषि उवाच ॥ दोहा ॥ विजै
व्रिहंनल जिहि कटक सो कत जीत्यो जाइ ॥ जुद्ध जु-
रै संग्राम थल जम हूं देइ भगाइ ॥ चौपाई ॥ इतनी र
सुनत भूप पर जरयो ॥ राते दृग करि वहु रिस भर्यो ॥
तत छिन नहिं नर नाथ विराट ॥ पांसे जे ऋषि हये
लिलाट ॥ ८० ॥ छूट्यो रुधिर द्रोपदी धाई अंजलि में
तिनि लीनो जाइ ॥ निरखि भूप उर चिंता मानी ॥ कौं
न कहै यह भेद सुजानी ॥ ८१ ॥ सुजानी उवाच ॥ भूत-
ल रुधिर परे जो एह ॥ द्वादश वरष न वरषे मेह ॥ यों
कहिके भूपति समझायो ॥ भीम सेन के उर दुख आ-
यो ॥ ८२ ॥ दोहा ॥ क्रोध भयो लखि भीम उर धर्म पु-
त्र दै सैन ॥ वरज्यो के दरि छुधित ज्यों जुक्ति कछू य-
ह सैन ॥ ८३ ॥ दोधक छंद ॥ उत्तर गेह तवही चलि आयो ॥
भूपति को यह वैन सुनायो ॥ आजु व्रिहंनल ही दल
जीत्यो ॥ कौरव को वहुधा वल रीत्यो ॥ ८४ ॥ सूर भगाइ र
दये सवरे यों ॥ पौन विड़ारत मेघ घने ज्यों ॥ मौन व्हि भू-
पति काम सिधायो ॥ उत्तर भीतर वोलि पठायो ॥ ८५ ॥
जुद्ध कथा सवरी सुनि लीनी ॥ सारथि को सव जान प्र-
वीनी ॥ अर्जुन दै जिहि कौरव मारे ॥ सो सव ते द्विहि र

ठाम निवारै ॥८६॥ दोहा ॥ धर्म पुत्र नर नाह सौं अर्जु-
न बोल्यौ वैन ॥ जाने हम सव कौर वनि अव कछु
चिंता है न ॥८७॥ तेरह वरष द्यौस दस वीत गये कु
हि ठाम ॥ अव वैठौ सिर छत्र धरि गुप्त करौ कत ना-
म ॥८८॥ सवैया ॥ पाडुके त्रास अवास तजे वन वारा२
जे दुःख सो धना साधी ॥ भूषन प्यास उदास महा गति
जोगके जो गिनि की अव राखी ॥ नेकहु सोच सको-
च कर्यो नहि कानि सवै कुरु नंदन वाखी ॥ आयसु
दीजिये कोपि मही पति लैं हि भुजा वल सौं भुव आ-
धी ॥८९॥ दोहा ॥ प्रात होत सिर छत्र धरि धर्म पुत्र सु-
ख पाइ ॥ दान दये कवि छत्र कहि छिप्रहि विप्र वु-
लाइ ॥९०॥ वंधव चारों जोरि कर ठाढे भये सुजान ॥ का-
रण सव ही काज के कीजे काहि समान ॥९१॥ नाहि-
न वाहन उपन ह्यौ उत्तर सहित विराट ॥ नृपति युधि-
ष्ठिर चरण पर राख्यो आनि लिलाट ॥९२॥ राजा विरा-
ट उवाच ॥ सोरठा ॥ ढिठय भई जो होय सो छमिय क-
रिके कृपा ॥ भूप वडे जे होय चूक न मानत जनन की ॥
९३॥ धोखें तुम पै से क्काई ॥ सो सव चूक कही नहिं
जाई ॥ ओछी पूरी मन नहि धरिये ॥ ईश अनुग्रह ह
म पर करिये ॥९४॥ राजा जुधिष्ठिर उवाच ॥ दोहा ॥ तुम
से तुम हिं न दूसरो जग मंडल में आन ॥ विपति हमा-
री सव हरी राखे पुत्र समान ॥९५॥ चौपाई ॥ तुम पट
तर को दीजे आन ॥ सुर नरन हीं अपने जान ॥ तुम
हम को सव कीनी भली ॥ तव कीरति सव भूतल च-
ली ॥९६॥ नित २ नेह दीसि हैं नये ॥ अव तुम भुजा

हमारी भये ॥ जीति समर सुरभी जे आनी ॥ जितनी २
जाकी जानी ॥ ९७ ॥ ते सब जाकी ताको दीनी ॥ सबकी २
बिदा मही पति कीनी ॥ दुर जोधन संदेस पठायो ॥ भू-
प युधिष्ठिर पै चलि आयो ॥ ९८ ॥ दोहा ॥ प्रगटे भीतर
अवधि तुम फेरि करो वन वास ॥ मिति सो पूरण । की-
जिये तब तुम करो प्रकास ॥ ९९ ॥ कहि सब विधि मल
मास की सम आयो सो दूत ॥ सम दिसाही बैठो तहां २
ज्यों सुर पुर पुर हूत ॥ १०० ॥ इति श्री महा भारत पुराणे
विजय मुक्ता वल्यां कवि छत्र विर चितायां अर्जुन वि-
जय वर्णनो नाम चतु विंशो ऽध्यायः ॥ २४ ॥ दोहा ॥ उत्तर
सो कीनो मतो नृप विराट तिहि बार ॥ दुहि ता दीजे अ-
र्जुनहि करि विवाह शुभ चार ॥ १ ॥ दोधक छंद ॥ अर्जु-
न ताको नृत्य सिखायो ॥ दोलनि सा गुण तासु पठा-
यो ताकहं सो दुहिता अब दीजे ॥ जियमें और विचा-
रन कीजे ॥ २ ॥ यों कहिके तिन दूत पठायो ॥ अर्जुनको
यह बैन सुनायो ॥ तोहि सुता नृप अपनी दीनी ॥ हेत
विवाह सबै विधि कीनी ॥ ३ ॥ अर्जुन उवाच ॥ मैं दुहि-
ता सम जानि पढाई ॥ लाज तुम्हें नहिं आवत आई
मो सुत को दुहिता अब दीजे ॥ आनंद सों सब काज
कीजे ॥ भूपति यों सुनि कै सुख पायो ॥ बूझि महूरत
मंगल गायो ॥ गावत आनंद सों नर नारी ॥ भूप जुधि
ष्ठिर कों सुख भारी ॥ ५ ॥ दोहा ॥ दूत द्वारिका नगर को
पठयो बहु सुख पाइ ॥ वारन लागी वाटमें कही काम
सो जाइ ॥ दूत उवाच ॥ दंडक छंद ॥ दीनन के नेह सो
नेह डोलत हौं गेह गहे द्रोपदी की लाज वहे ऐसी २

कौन बातहो॥तात मात पास प्रहलादहू निरास रहे २
औन होती तेरी आस त्रास कैसे सहतो॥ओक छांड़ि
आपनो सु लोक कियो लोक लोक कौन भांति थिर थो-
क ध्रुव लोक लहतो॥त्रिभुवन राय जो पै होतेन सहाय
आपु कैसें कै धौं मेरो काज और लों निवहतो॥७॥२
दोहा॥करि आये हो करतहो करियो सदां सहाइ॥स-
हित [illegible] अभि मन्यु लै आपु पहूंच्यो आइ॥८॥
चले हास भगिनी सहित लै अभि मन्यु हि साथ॥च
ले [illegible] धर्म सुवन नर नाथ॥९॥मिलि
कै सारंग पानि को लै आये निज गेह॥अस्तुति वंदन
जुत करी मन वच क्रम करि नेह॥१०॥राजा युधिष्ठि-
र उवाच॥छंद॥श्री जदु नंदन मुनि जन वंदन॥का-
लिय हर सब दुष्ट निकंदन॥जग तारण बक वदन २
विदारन॥दुख टारन गज राज उधारन॥११॥जग पा-
वन संतन मन भावन॥व्रज छावन गिर वर नख ला-
वन॥[illegible] भव भय भंजन॥दनुज जन मर्द-
न भव धनु गंजन॥१२॥कंस विना प्रान प्रभु गरु-
डासन॥जदु वंशी अब तस प्रकाशन॥असुर निवा-
रण॥[illegible] कुंज विहारन गनिका तारन
॥१३॥जग धर नग धर पीतां बर धर॥हरि दामो द-
र हल धर सोदर॥सिंधु सुता वर श्री राधा वर॥न-
र कानि हर वर रदन धरनि धर॥१४॥जनक सुता
भूषण भुव भूषन॥सुर रिपु दूषण तल तल पूष-
न॥भक्तनि हित कारी हरि निशि चारी॥भक्ति २
विहारी सब भय हारी॥१५॥दोहा॥करि अस्तुति २

श्री हस्तिन की भूपति पुनि तिन माइ॥नगर कांपिल्ला द्रुपद गढ़ दीनो दूत पठाइ॥१६॥चौपाई॥सुनत संदेसौं फूल्यौ हियो॥भूपति द्रुपद पयानो कियो॥गज रथ वाहन तुरी तुषार॥सब दल जुत साहन भंडार॥१७॥पंचाली सुत पांचौ साथ॥पहुंचे पुर विराट नर नाथ॥विदुर गेह तें कुंती आई॥मिली सुतनि अति आनंद छाई॥१८॥द्रुपद सुतातोके पद वंदे॥सब विधि कै सब जन आनंदे॥वन तें चली घर का आयो॥माया वी माया मग छायो॥१९॥नगर राज गिरि तें चलि आयो॥दुरा संध भूपति मन भायो॥धर्म पुत्र सुर राज समान॥विवुध अनुज सब वुद्धि निधान॥२०॥दोहा॥शुभ घटि का शुभ लग्न गनि शुभ वासर हि सुधाइ॥रच्यो व्याह अभि मन्यु को मंगल चार कराइ॥२१॥दोऊ कुल की रीति ज्यौं करि विवाह सुख दानि॥वाजी गज रथ छत्र कहि दीनो आनंद मानि॥२२॥सुंदरी छंद॥भाट भले विरदावलि गावत॥सिंधुर वाजि निके गन पावत॥नृत्य गुनी जन नर्तन साजत॥ताल पखावज साजत वाजत॥२३॥को वरनै सब आनंद संजुत॥वास रहूं निशि कौतुक अद्भुत॥भांवरि पारत वेद निउच्चरि॥द्विकुल की ऋषि रीति तवै करि॥२४॥दोहा॥२ दै सौ वो समदी सुता हरषे भूप विराट॥धर्म पुत्र सुख पाय कै लसत अनंद हित पाट॥२५॥युधिष्ठिरउवाच सोरठा॥सुनि अर्जुन गुण ग्राम वेगि बुलावो मय सुतहि॥धवल संवारहु धाम रचि रचि रचि रचि जाल मणि॥२६॥त्रोटक छंद॥तब पार्थ मया सुर वोलि लयो॥वहु भांति न के सुख सद्म ठयो॥प्रति धाम नि
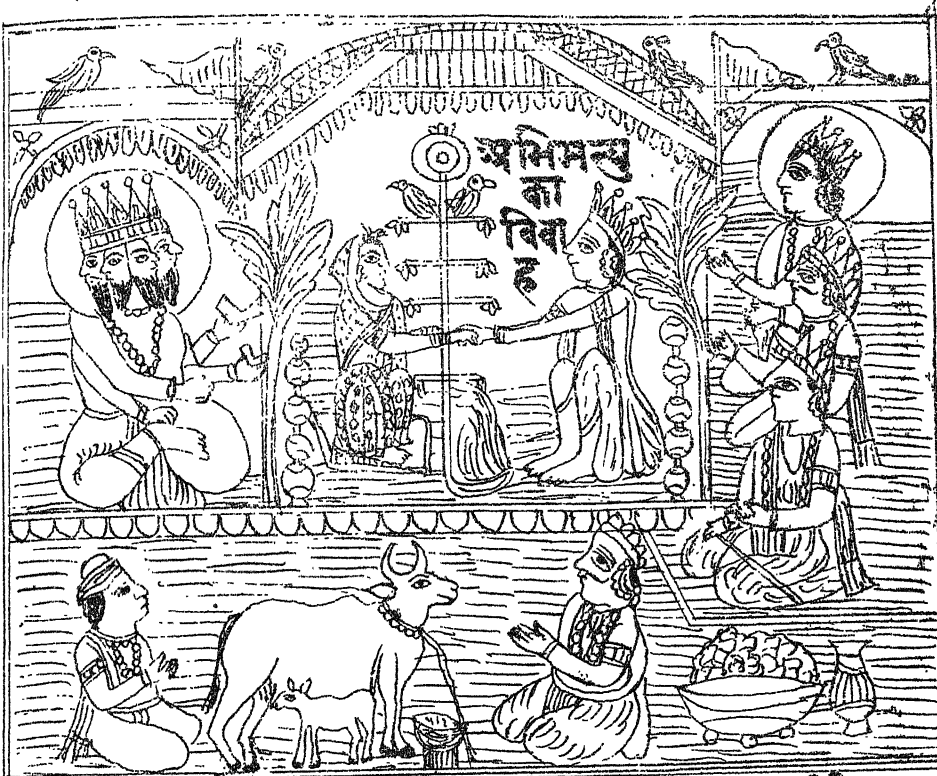
चित्र विचित्र करौ ॥ रंग रंग निही गुरु वान ढरौ ॥ अ-
ति हीसत सुंदर सेत अटा ॥ इक नील वने जनु मेघ र
घटा ॥ उपमा कवि कौन बखानि कहैं ॥ निरखैं नर कौ
तुक भूलि रहैं ॥ २८ ॥ इक अद्भुत वाहिर सोभ सने ॥ नृ-
प के रहि वे कहँ धाम वने ॥ तहं वैठत भूपति नित्य
सभा ॥ अमरावति मोहति देखि प्रभा ॥ २९ ॥ पुर अंत-
र धाम सु शोभ गहैं ॥ रनि वास जहां सब वाम रहैं ॥
हय हीसत वारन गाजत हैं ॥ निशि वासर दुंदुभि बा-
जत हैं ॥ ३० ॥ भुव भूप सभा सुख साजत हैं ॥ द्विज वृंद
तहां वहु राजत हैं ॥ वहु भीर तहां दरबार रहैं ॥ कहि
कौ कवि ताहि बखानि कहैं ॥ ३१ ॥ इति श्री महा भार-
त पुराणे विजय मुक्ता वल्यां कविर
छत्र विरचितायां अभिमन्यु विवा-

इद्वागीनो नाम पंच विंशो ऽध्याय: २५

भुजंग प्रयात छंद ॥ सोम वंस धर्म पुत्र शक्र सो सभा लसै ॥ चारि बंधु देव से विलोकि दुःख भानसै ॥ अंजली-न जोरि जोरि कृष्ण सौं विनै करी ॥ सिंधि को जहां तहां विपत्ति जीव की हरी ॥ अर्द्ध देश पाइये विचार आपसौं करौ ॥ ज्यौं हरै अशेष शोक त्यौं कलेश ये हरौ ॥ देश तें निकारि अंध पुत्र कानि ना करी ॥ धाम ग्राम छीनि छीनि संपदा सबै हरी ॥ १ ॥ दोहा ॥ करि आयें हौ कारत हौ सेवका सदा सहाइ ॥ करी बंदना कृष्ण की धर्म सुवन भुवराइ ॥ २ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ चौपई छंद ॥ कच्छप वपु धरि भाइ रषा हन ॥ मत्स रूप संखा सुर दाहन ॥ बंदर त मुनि जन सनक सनंदन ॥ जै जै जै तुम जै जग बंदन ॥ ॥ ४ ॥ सूकर रूप रदन धरनी धर ॥ वर हिरना क्ष पतित प्राणनि हर ॥ भूतल खल दल दुष्ट निकंदन ॥ जै जै जै तुम जै जग बंदन ॥ ५ ॥ नर हरि वपु धरि भक्त सवारण ॥ हिरना कुश नख उदर विदारण ॥ कोटिक कष्ट हरण जग फंदन ॥ जै जै जै तुम जै जग बंदन ॥ ॥ ६ ॥ छल बल बलि पाताल पठावन ॥ बावन वपु धरि भूतल आवन ॥ काटत सब माया दुख द्वंदन ॥ जै जै जै तुम जै जग बंदन ॥ ७ ॥ परसु पाणि क्षत्रि य मद नाशन ॥ रघु कुल कमल दिनेश प्रकाशन ॥ राम चंद्र दशरथ नृप नंदन ॥ जै जै जै तुम जै जग बंदन ॥ ८ ॥ कंस कठोर असुर भय कारी ॥ केशी मर्दन अजिर बिहारी ॥ पीत वसन तन चर्चित चंदन ॥ जै जै जै तुम जै जग बंदन ॥ बौध सरूप पहुमि पर धारे हौ ॥ कल की है दु

छूनि संधारि हैं ॥ वरनत विदित छत्र वहु वंदन ॥ जै जै जै तुम जै जग वंदन ॥१०॥ दोहा ॥ विनय मानिकैं करि कृपा दुरजोधन पैं जाउ ॥ समझा औ वहु विधिनकै वंचे गोत कौ घाउ ॥११॥ चौपाई ॥ विहंसि व्यास तवही उठि धाये ॥ नगर हस्तिना पुर चलि आये ॥ सुनि कुरु नंदन अनुज पठाये ॥ सभा मध्य श्री व्यासहि लाये ॥१२॥ श्री व्यास उवाच ॥ धर्म पुत्र तुम पास पठाये ॥ गोत विरोध हि मेटन आये ॥ भूपति जग में यह जस लीजै ॥ आधो देश वांटि कै दीजै ॥१३॥ अपने कुलहि कलंक न लावो ॥ कालहु गोतकौ भूप वचावो ॥ दुरजोधन वोल्यो अकुलाई ॥ रिकैसें सकों कलेश वचाई ॥ देश वांटि जो उनको देहों ॥ जोगी ह्वै कपाल कर लैहौं ॥ भूमि वांटि कस मो पैं पावें ॥ जावे नभ भूतल फिरि आवें ॥ श्री व्यास उवाच ॥ और भूमि भूपति जिनि देहु ॥ पंच ग्राम दीजे करि नेहु ॥ तिल पथ नाग इंद्र पथ लीजै ॥ अरु सुनि पथ पानी पथ दीजै ॥ दुरजोधन उवाच ॥ दोहा ॥ सूचि अग्र जितनी कढ़े सो कवहूं नांहि देहुं ॥ पीछे भुव वेई लहें प्रथम जुद्ध करि लेहुं ॥१७ चौपाई ॥ तुम हि कहत यह कैसे आवें ॥ जीवत मोहि को धरनी पावें ॥ सुनि मुनि वचन जरत है गात ॥ जियत सुनें यह अद्भुत वात ॥ श्री व्यास उवाच ॥ सवैया ॥ लोक में शोक समूह विनै अपलोक महा अपने सिर लैहो ॥ केलि सकेलि महा दुख में लिहो यों जस पेलि कै अपजस पैहो ॥ उपाय कै
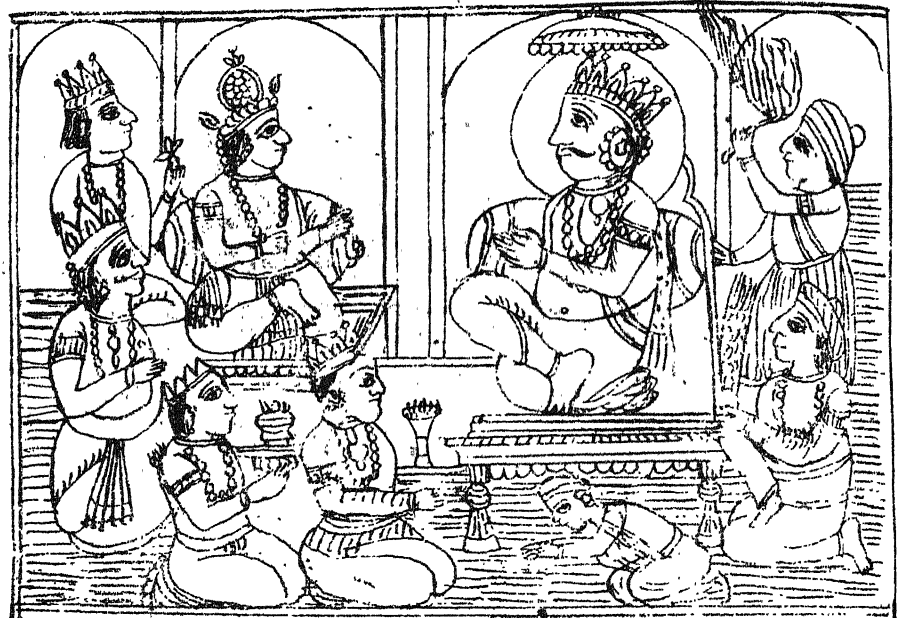
व्याधिन लीजिये रायसु आयपरै ते छिये पछितैहौ॥ सुफि
परी यह कसम कही सब आपु मही सब दैहौ नु दैहौ॥१९॥
पिकै लेहु गदा कर भीम सु पार्थ धनुर्धर बाण नि-
वाहै॥ बंधु समेत तहां सहदेव सुसा दर संगम कौ
अवगाहै॥ बैठि धुजा हनुमंत बली रण गाजि उठै र
यह तू मन चाहै॥ एसोइ भावतु है जिय तोहि सु र
जाने को तेरी कहा मनसा है॥२०॥ दोहा॥ हास उठै
ये वचन कहि तिनि को यह सम भाइ॥ भावी सो कै
से मिटै को कहि सकै वचाइ॥२१॥ नगर हस्तिना
पुर तबै कुंती पहुंची आइ॥ समा चार भीष्म सु र
कहे सकल समुझाइ॥२२॥ दुर्योधन मति परि
हरी देतन पांचो ग्राम॥ देवे की कहि का चली अ
वण सुनत नहिं नाम॥२३॥ एक बात को भय भ
यो क ते हि वाढ्यो गर्व॥ मारि लेहुं यह कहतु है

जीतों भारत सर्व॥२४॥ जाहु आप तुम करण पै लाउ आपने गेह॥कुशल होइ तुम सुत नि को बाढ़े अद्भु त नेह॥२५॥करण पास कुंती गई उनि उठि वंदे पांइ॥ करि आदर आसन दयो बैठे सब सुख पाइ॥कुंती उवाच॥चौपाई॥जेठो सुत तू तेरी राज॥लेहु सकल संग चलिये आजा॥हंस्यो करण माता मुख चाहि॥यह सब बात अबू कित आहि॥२७॥तब तुम राज हमारो टारो॥घालि मंजुषा जलमें डा- रो॥तन पोष्यो दुरजोधन छांह॥ अब कान उप त नर कान मांह॥२८॥कुंती उवाच॥जौन कहो सुत करिकें नेहु॥एक बात तो मांगे देहु॥मो पुत्र न को करिन प्रहार॥यह सब करो दया कौसार॥ ॥२९॥सुनि सुत मेरो वचन विलास॥पांच वा- ण जो तेरे पास॥जननी को करिकें हित देहु॥या में जगत विदित जसु लेहु॥३०॥कर्णउवाच॥चा- रि पुत्र तुव हित परिहरों॥एक पार्थ सों रण करों॥औरनि को नहि घालों घाउ॥अब माता अप ने गृह जाहु॥३१॥दोहा॥दीने पांचों बाण कर कुंती को तिहि काल॥विदा करी पग वंदि कैं तबै करण भुव पाल॥३२॥चौपाई॥यह सुनि कुंती आई तहां॥त्रिभुवन नाथ बासदेव जहां॥कही करणसों बरणि सुनाई॥इहि विधि कै सब निशा सिराई॥ दोहा॥प्रात होत श्री कृस्न जी दुरजोधन के पास गये फेरि हित संधि को छत्र सु बुद्धि अवास॥३ ३॥श्री कृस्न उवाच॥कह्यो हमारो कीजिये पंच

ग्राम किन लेहु॥ वंधु एक सौं पांच सौं निस दिन वढे स-
नेहु॥ ३५॥ दुर्जोधन उवाच॥ नित उठि उस ले साल हीं
कत हि सला वत आनि॥ करों अपांडव भूमि सव करों
न कुल की कानि॥ ३६॥ श्रीव्यास उवाच॥ सवैया॥ कोपि
पि कोपि भीम भुजा रोपि रोपि रन मांह ओपि ओपि
मुख गदा लीने गल गाजि हैं॥ रोस हिय आनि आनि
क्रोध धनु तानि तानि लै कै पार्थ पानि धनु वारा स-
धो साधि हैं॥ अश्विनी कुमार के कुमार निकी हांक
सुनें धीर न धरैं गे वल पौरुष सोभाजि हैं॥ गर्व्व हि
आरूढ मंत्र मूढ तू न जाने कछू चेति हैं तू मूढ जब
गाय मद्ध वाजि हैं॥ ३७॥ दोहा॥ यह सुनि सकुनि सों
ग कै कही नृपति सों जाइ॥ कहाकुनिया की करैं वां-
धि लेहु सुख पाइ॥ ३८॥ सव मिलि कै चाहत कियो व
नें नहीं कछु वात॥ किलरव भीषम विदुर तव विव्हल
ह्वै गयो गात॥ ३९॥ चौपाई॥ भीषम विदुर विलोकत
जानि॥ वदन पसारो सारंग पानि॥ मुख भीतर देख्यो व्र-
ह्मंड॥ संभ्रम पायो चित्त अखंड॥ ४०॥ छप्पै॥ देख्यो ग
गन सु सूर्य्य चंद तारा गन देखे॥ देखी पहुमि सु नीर
भूरि भूधर सु विसेखे॥ देखे सरि ता सलिल सिंधु सर
वर जल संजुत॥ देखे तरु वर विपिन सघन द्रुम उप-
वन अद्भुत॥ मृग राज मत्त मातंग लखि अव लोके रि-
षि राज गन॥ भ्रम भूलि विदुर भीषम रहे सिथिल वि
काल ह्वै सकल तन॥ ४१॥ भीषम उवाच॥ खल दुर्जो-
धन मर्म न जानत॥ सिख त्रिभुवन पति कीनहिं मा-
नत॥ भूल्यो मूरख नृप ता गर्व्व॥ कुल के कर्म तजे ति-

न सर्व्वे ॥५२॥ हैं हैंसो त्रुरची कर तार ॥ भीषम कहत वा-
रही वार ॥ चले व्यास नृप को सम फाइ ॥ पहुंचे धर्म पु-
त्र पै जाइ ॥ ५३ ॥ श्री व्यास उवाच ॥ सहतम माहि तुम कों
नहिं देत ॥ उद्यम लीनो भारत हेत ॥ विना जुद्ध वह क-
छून देहै ॥ जो रण जीतै सो भुव लैहै ॥ ५४ ॥ इति श्री
महा भारत पुराणे विजय मुक्ता वल्यां कवि छत्र विरचि-
तायां श्री व्यास दुर्योधन संवादो नाम षड् विंशो ध्या-
यः २६ इति विराट पर्व्व संपूर्णम अथ उद्योग पर्व्व प्रार-

॥ नं सुंदरी छन्द ॥

वैठि सभा सुत धर्म मही पति ॥ बोलि लये तहां व्यास
महा मति ॥ वंधव चारि विराजत ता थल ॥ कौन वखा-
नि कहै तिनि के वल ॥ १ ॥ राजो वाच ॥ चौपाई ॥ जिहु
वंदै हरि सो कछु कीजै ॥ भूतल मैं वसुधा जसु लीजै-
मांहि महा उर मैं डरु आवत ॥ विग्रह हौं निशि दीस
वचा वत ॥ २ ॥ दोहा ॥ वनि आई सब के मतै लीने दुपद
वुलाइ ॥ संधि काज कुरु राज पै दीनै तुरत पठाइ ॥ ३ ॥
गये दुपद नर नाह तब भूपति कौरव पास ॥ आदर करि
आसन दयो वोल्यो वचन प्रकास ॥ ४ ॥ दुर जोधन उवा-
च ॥ गीतिका छंद ॥ कौन हेत महीप आये सो कहो स
मझाय कै ॥ पावन भये तुम दरश तैं वहु सुःख दीनो
आय कै ॥ दुपद भूपति यों कह्यो जग मैं महा जसु ली-
जिये ॥ नृप जुधिष्ठिर को धरा नृप वांटि कै कछु दीजि-
ये ॥ ५ ॥ नेह करि कुल कलह नासौ लेहु तिन हि वुला-
यकै ॥ सब आपनी मरजाद सौं रहि हैं सदा सुख पाय-
कै ॥ लगी सरसी वात यह सो चित्त नाहिं कछु लावहीं

चाहत विन्दुरण कौन मोपै भूमि रंचक पावहीं ॥ ६ ॥ को-
जुधिष्ठिर भीम कोहै वचन को टन पावहीं ॥ तौनहूं
हौं बरण सुर पति आप आय बचावहीं ॥ द्रुपद सुनि
कै सीस ढोरो रची सोई कै रहे ॥ सोवचाई वों वचे
कुकि क्रोध सों तब यों कहे ॥ ७ ॥ सवैया ॥ लोक में आ
प कछू आप लोकन लीजेन लीजेन लीजियेजू ॥ चाह
त भूमि जुधिष्ठिर सक्षम दीजिये दीजिये दीजियेजू ॥
यों करि राज निकंटक आपन कीजिये कीजिये कीजि-
येजू ॥ छत्र महा हित कै तुम वैन पतीजिये पतीजि-
ये पतीजियेजू ॥ ८ ॥ दीजिये पंच उनै अब गाम नहीं
नृपकी नृपता घटि जैहै ॥ वैठि रहै तिनमें अब जाय
जुधिष्ठिर आप महा सुख पैहैं ॥ जानि अजान प्रमाण
के मान कि भूमि अवै अपने वल लैहैं ॥ बाण की धार
में स्यो परि वा रहि तोहि वहादू धनंजय दैहैं ॥ ९ ॥
दोहा ॥ फिरि आयो तब द्रुपद नृप नृपति जुधिष्ठिर पा-
स ॥ दुरजोधन की कुमति को कीने वचन प्रकास ॥ १०
द्रुपद उवाच ॥ वुधिकै कै बहु चातुरी अरु कै कै उन मा-
न ॥ सम झायो समझे नहीं करि देखे सव स्यान ॥ ११ ॥
हीं धिविराट पठये तहीं नृपति तीसरी बार ॥ समझा ओ
दुरजोधनै वाचे कलह अपार ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ नृप वि-
राट बहु विधि कै कही ॥ सक्षम सो कछु दीजे मही-
वे संतुष्ट वैठि तहां रहैं ॥ फेरि कछू नहिं तुम सों कहैं
१३ ॥ दुरजोधन उवाच ॥ दोहा ॥ हूं है कै जग वावरो मो
गत धरनी आय ॥ हनौं पंडु सुत छिनक में को अब
सकै वचाय ॥ १४ ॥ हम सों रारवौ हेत तुम अतिभावो

धैवेन॥ जौलौ जिय में जीव थर कहौन तिल भरिदैन॥१५
विराट उवाच॥॥सवैया॥ आपु वए वहु गोत को घाउ करै
उनि वारही वार वराई॥ देन कहौ नहि चारिक नाम क
हा मति थौं तुम कों वनि आई॥ होनी जो होइ सो होइ
रहे न मिटै यह भूपति मैं मति पाई॥ नीकी यो ओरु
बुरी बुधिको सवको करता हरता करताई॥१६॥ चौ-
पाई॥ दुन काहि वे मैं कछू नाराखी॥ जो मुख आई त-
सव भाषी॥ कहा कहे काहू के होई॥ होनी मेटन सोक
हि कोई॥१७॥ आपि नृप विराट उठि धाम॥ किये कृस्न
कों अमित प्रनाम॥ कहेन मानतु खल कछु वात
सुनि सुनि वैन जरत हे गात॥१८॥ यह सुनि कृस्न विद
लव भये॥ चलिकै नगर द्वारिका गये॥ नृपति जुधिष्ठि
र मन दुचि ताई॥ वाचत सूझी नहीं लराई॥१९॥ दोहा
उतदुरजोधन अनुज युत कीनो चित्त विचार॥ भीष-
म अरु आये विदुर वैठो सव परिवार॥२०॥ दुरजोध-
न उवाच॥ भुजंग प्रयात छंद॥ वढौ सोच तो आपने
चित्त कीजे॥ मतो होय पूरो पिता मोहि दीजे॥ सदा पंडु
के पुत्र हैं साल मेरे॥ तिन्हैं नास के जत्न कीने घनेरे॥
२१॥ कहो मंत्र जो जासु के चित्त आवे॥ हित होय सोहि
तही की वतावे॥ गई तेरहौं वर्ष यो सुख माही॥ रहे
साल जा को सु जीवै हथाहीं॥२२॥ भीषम विदुर उवा-
च॥ करो मंत्र सोई तुम्हें चित्त आवे॥ हमारो कह्यौ
कों हिये माहि भावे॥ तजो विग्रहै संग्रहो वात ऐसी
सवै भूतली मैं कही वेद जैसी॥२३॥ भीष्म उवाच॥ स
वैया॥ एक सुनै नहि भाषी अनेक सु टेक सवै है कुटव

की टेकी॥ताको भलो न भयो कबहू जिहि पैज तजी न-
हिं आपु कहे की॥यों समझो अपने मनमें हठ कूठकी
नाहिन बानि भलेकी॥छाँड़ि दई कुल की करनी यह
रीतिलई हठिकै अविवेकी॥२४॥चौपाई॥भुअ पै
बहत नदीमैं कोई॥अमर एक जहु अप जहु होई॥
हिरना कुश अरु रावण गयो॥यह धन नहिं काहू को
भयो॥२५॥कत अभिलाष तासु को कीजै॥लोक वि-
लोक अलोकन लीजै॥हानि होइ जीते अरु हारे॥ज-
म रहिहै नित वदन पसारे॥२६॥सुनत वचन नहिं
भूपहि भायो॥तब तिन नियरो सकुनि बुलायो॥सो-
ई कोउनु मंत्र विचारो॥मोउर भावत वचन तिहारो॥
२७॥शकुनि उवाच॥मेरो मतो मही पति कीजै॥नगर
विराट वेगिलै लीजै॥जौलौं उनकों नहीं सहाउ॥लैसब
सेना तिहि थल जाउ॥२८॥पांचौं वंधुन मारो आज
सौंहि जाय तो स्वारै काज॥उपजत ही जो काटिये व्या-
धि॥फिरि कत मरिये औषधि साधि॥२९॥दोहा॥अं-
कुर निरखि कोरछको कपि तोरै तिहि काल॥त्यों अप-
ने अरि मेटिये कुटंव सहित भुव पाल॥३०॥चौपाई॥
सुनि मत मानि भूप दल साजा॥सकल बुलाये भुव के
राजा॥सिमटे दल पहु मीन समाय॥छार भये सब गि-
रि वर जाय॥३१॥आये सोम दत्त भुव राय॥अरु भगा
दत्त सबल दल लाय॥तिन के दल की संख्या नाहीं॥
रथ हय हाथी गनेन जाहीं॥३२॥सेना सल्य कौ हनी
तीन॥कोरुप वाजी गने कवीन॥करी महा रथ संत प-
चान्यो॥अमित नित दल कलिंग तहं आन्यो॥३३॥

ति रथी सूर सुभट सिरमौर ॥५५॥ अथ सोहनी संख्या
दोहा ॥ एका द्विरद रथ एक है तीन अश्व असवार ॥
जमले दश संख्या कहै पायक पांच विचार ॥५६॥ हा-
थी १ रथ १ असवार ३ पयादे ५ जमले १० ॥ दोहा ॥ ती-
न पंक्ति को होय इक सेना मुख ता नाम ॥ अपने अ-
पने बुद्धि बल समझि लेय गुण ग्राम ॥५७॥ हाथी ३
रथ ३ असवार ९ पयादे १५ जमले ३० ॥ इति सेना मु-
खता संख्या ॥ तातें तिगुनी गुल्म इक जानि जानि उ-
र लेहु ॥ ताकी संख्या छत्र कवि बुधि बल सब करि
देहु ॥५८॥ हाथी ९ रथ ९ असवार २७ पयादे ४५ ॥
इति गुल्म संख्या ॥ दोहा ॥ फेरि गुल्म तिगुनी करौ
सो [illegible] होय ॥ छत्र कहै सो वाहिनी कहै ज-
गत सब [illegible] ॥५९॥ हाथी २७ रथ २७ असवार ८१ प-
यादे [illegible] ॥ इति वाहिनी संख्या ॥ दोहा ॥ कीजै तिगुनी
वाहिनी ताही पृतना जानि ॥ सब हाथी पायक रथी १
कहि कवि छत्र बखानि ॥६०॥ हाथी ८१ रथ ८१ अस-
वार २४३ पयादे ४०५ इति पृतना संख्या ॥ ता पृत-
ना जोरि कै एक चमू तब होय ॥ [illegible] अपने चित्त
में समझि लेहु सब कोय ॥६१॥ हाथी २४३ रथ [illegible]
सवार ७२९ पयादे १२१५ इति चमू संख्या ॥ दोहा ॥ ए-
क चमू को जोरि कै तिगुनी करौ जो कोइ ॥ छत्र सक-
ल समझो अबै अनी किनी सो होइ ॥६२॥ हाथी ७२९
रथ ७२९ असवार २१८७ पयादे ३६४५ इति अनी
किनी संख्या ॥ दोहा ॥ अनी किनी सेना सकल तिगु-
नी कीजै ताहि ॥ सोई संख्या छत्र कवि अनी किनी दश

दोनों सेनाओं के मध्य में रथ स्थापित करके श्री कृष्ण अर्जुन को गीता का उपदेश कर रहे हैं

कोपि कोपि जुद्ध वारा कोटि कोटि जो धरे॥लोक पाल जो जुरे तऊन पेज हारिहैं॥आजु ते वुलेवा सूर नित्य नित्य मारिहैं॥५॥पार्थसों जुरे कराल जुद्ध भो महा घनों॥लंक नाथ सों मनु जुद्ध राम चंद्र है मनों॥गंग पुत्र अस्त्र सस्त्र वारा वृष्टि यों करे॥स्वारथी रथी समेत ठौं म ठाम संघरे॥६॥दोहा॥उत्तर मुलो पृथ मही करि वहुध्या संग्राम॥एक अयुत भीषम हने गनेन परई नाम॥७॥जुरे दोऊ सेनके रथी दुवद रमा मांझ॥भीषम पूजयो आपु व्रत वहुरि ह्वै गई सांझ॥८॥रैनि भये सव सूरिमा कियोन सर संथान॥सजे सकल भट सेन के प्रातउगत ही भान॥९॥मार मार दुहु दल भई उठे वीर रण गाजि॥पायक रथी मतंग गन अरु जुरे वहु वाजि॥१०॥मंडली क कीनो धनुष सर र छायो आकाश॥व्रत पाल्यो दश सहस हति करि सेना उरत्रास॥११॥चौपाई॥दिन प्रति दश दश सहस संघारे रथी अति रथी गज रथ मारे॥मारग कस्मा षष्टी भई॥ पंडु पुत्र उर चिंता ठई॥१२॥भीषम अगनित सूर संहारे॥पंडु पुत्र सव ही हिय हारे॥रह्यो जुद्ध तहं निशि ह्वै गई॥पंडु सुतनि के उर मति भई॥१३॥दोहा॥अर्द्ध रैनि जवही गई आये भीषम पास॥वहु विधिकी र अस्तुति करी कीने वचन प्रकास॥१४॥दोधक छंद आजु पिता कछु सोमति दीजै॥जा विधि जीति सवै दल लीजै॥ज्यों कुरु नंदन को दल छीजै॥॥आप सु देहु सुतो अव कीजै॥१५॥भीष्म उवाच॥छप्पै॥जो लगि मोघट प्रान काहो को सर वर पावे॥चिरंजीव

कुरु राज ताहि पद ओछो आवै॥विजय करै को सुर २
मांहि देखत रण माही जो चितवै वृत राज तांहि तो ग्र-
चरज मांही॥सुनि धर्म पुत्र सुख सीव यह सत्य मा
नि चित लीजिये॥नर नाह द्रुपद सुत अग्र करि वि-
जय सकल रण की जिये॥१७॥गीतिका छंद॥मोहि
पितु वर दान दीनो परम उर सुख पायवो॥विना वो
हे काल नियरो कों सके गो आयवो॥मारि हों सुख
मृत्यु लहि हों ना पराजय देखिहों॥बाण जाको साधि
हों गत प्राण ताको लेखि हों॥मोहि कोरण जीति हे वि
धि रुद्र सुर पति रण करें॥जाहि ताके करों प्राणनि
बाण सिर पाल ना परें॥वृद्ध शिशु अरु नारि को छि-
न को धनुष कर नागहों॥भ ये देखिन ताहि मारों
सत्य तोसों हों कहों॥१८॥आपनी जय भूप चाहो तो
कहो सो कीजिये॥द्रुपद नृपको सुत शिखंडी ताहि
आगे दीजिये॥नारितें वह पुरुष भो ताकी कथा सुनि
लीजिये॥तुम जोग शिक्षा हों कहों नर नाथ ताहि प-
ली जिये॥१९॥चौपाई॥कासि राज की सुता दुलारी॥का
री शंभु सेवा तिहि भारी॥तियतें पुरुष भई वर पाई
लीनो जन्म द्रुपद गृह आई॥२०॥आगे दै उप देशों ता-
हि॥पाण निपार्थ वेधिहे मोहि॥भीषम जब इहि वि
धि के कह्यो॥पग वंदे नहि संशय रह्यो॥२१॥अपने
ठाम धर्म सुत आये॥सत्य वचन भीषम के पाए॥
सुनक्सुते भिन सारो भयो॥उद्यम महा जुद्ध को लयो॥
२२॥दोहा॥सुभट शिखंडी अग्र करि पंडु पुत्र बलि
बंड॥छाय लयो सब काल नभ संग्रह कियो अखंड

डा॥२३॥मार मार है दल रहै होत अमित गल गाज॥२
उठत अगिनि असि वर वजत जूझत सुभट समाज॥२४
बीती मारग सप्तमी समर होत अति काल॥रुधिर स-
लिल पूरी पहुमि दीसै ठाम कराल॥२६॥जुद्ध होत
दिन नौ गये को कवि कहै वखानि॥दशमें दिवस क-
राल रण परो भटनि सों आनि॥२७॥बीत्यो असुर
अलाप सों अभि मन्यु हि संग्राम॥२८॥ विकर्ण सा-
सो करो जाहि व्यूह को नाम॥२८॥भीम सेन सों तब
जुरे दुसा सन बल वान॥चित्र सेन सहदेव सों कीनो
कोपि कृपान॥२९॥नकुल सुशर्मा द्रोण सों द्रुपद राय
सों जुद्ध॥धृष्ट द्युमन गुरु द्रोण सुत समर करो है
क्रुद्ध॥३०॥जुरो जुद्ध भूरि श्रवा द्रुपद सुता सुत संग
राउ विराट कलिंग सों कोपि कियो रण रंग॥३१॥२
कृत वर्मा अरु पार्थ सों बाजी अस वर मार॥पायक
हय स्वारथि रथी भये सकल संघार॥३२॥भूप युधिष्ठिर
सों करो संग्रम शल्य अपार॥हते सुभट रण भूमि २
में जुरे एक ही वार॥३३॥सोरठा॥कोपि भीम तिहि
वार हन्यो दुशासन को दुरद॥गिरो पहुमि विकरार
अंजन को सो गिरि परो॥३४॥दोहा॥कृत वर्मा जा-
दों तहां करी वृष्टि सर जाल॥काटयो पंजर पार्थको
कीनो रण विकराल॥३५॥जे सर छांडे पार्थ रण २
ते खंडे उनि वान॥अंधकार अरु उर्ध्व मेंहै ही ग-
यो निदान॥३६॥कौन गने अब पार्थ को भय का-
री संग्राम॥बाणनि सों वे ध्यो कटक वरनि कहै २
कोनाम ३७॥सवैया॥ज्यों मृग जूथनि ऊपरि केह-

अनेक योधाओं द्वंद युद्ध होरहा है और भीमसेनने दुश्शासन के हाथी को गदा मारके गिरा दिया

रि कोपि उठ्यो रण पार्थ वली ॥ वाण चले अस मानहु लौं
सुमनों सलभा उडि व्योम थली ॥ खंड करी ध्वज चौर
पताक भई उपमा यह छत्र भली ॥ मानों उडी तजी शैल
के शृंगनि हंसके वंशनि की अवली ॥ ३८ ॥ दोधक-
छंद ॥ ठांमहि ठांम हि सूर संघारे ॥ कोपि किते हय
सिंधुर मारे ॥ वाण विशाल हयो कृत वर्मा ॥ मोहि गि-
र्यो धर वर्म सुधर्मा ॥ जादव मोहि पर्यो जव देख्यो ॥ से-
न सबै भय काल विशेख्यो ॥ भागत यों भट अर्जुन आगे ॥
पौन त्रिदु रत ज्यों घन भागे ॥ ३९ ॥ दोहा ॥ आयो शकु-
नि सरोष ह्वै कह्यो पार्थ कित जाइ ॥ जादव जाने मो-
हि जिनि डारों गर्व नसाइ ॥ ४० ॥ आयो सन्मुख शक्ति
गहि पार्थ करी द्वै खंड ॥ धाय सरासन वाण कर तव
दीनो वलि वंड ॥ ४१ ॥ सोऊ कीनो खंड द्वै अर्जुन सम-
र प्रवीन ॥ रथ काट्यो सारथि वध्यो करी पताका छीन
४२ ॥ लज्जित खल थल तजि भज्यो तन की नहीं सम्हा-
ल ॥ लखि दुरजोधन आदि सब संशय करो अपार ४३
दोधक छंद ॥ रोस कियो सत बंधव धाये ॥ अर्जुन सों
सब जूझन आये ॥ घेरि लयो जवही रथ ऐसें ॥ घेरत प-
र्वत दुंदहि जैसें ॥ ४४ ॥ त्यों चहुं घां सब कौ रव कोपे
ज्यों मघवा घन सूरहि लोपे ॥ वाणनि सों रथ छाय
लयो है ॥ सम्भ्रम सम्महि चित्त भयो है ॥ ४५ ॥ दोहा ॥ स-
ह देव धाये नकुल भीम धनू का साथ ॥ सोच गहे श-
शि राहु ज्यों धर्म पुत्र नर नाथ ॥ ४६ ॥ चौपाई ॥ अ-
र्जुन वाण दृष्टि जब करी ॥ कुरु नंदन दल धीरन ध-

री॥उड़ी पताका बाराानि साथ॥कटि गये धनुष रहे २
नहि हाथ॥४७॥ज्यौं बड़ु बानल पौनहि पाई॥कौरव
सेना चली पराई॥मारु मारु दोऊ दल गाजैं॥अति ग-
ति स्वर्ग स्वर्ग सों बाजैं॥पवन पुत्र सुत धर्म प्रचारो
लै कर गदा धनुष भुव डारो॥रथ हय हस्ती तिहि द-
ल मारे॥वज्र पात जनु पर्वत फारे॥४९॥छत निछा-
य भट भ्यानक भेस॥जनु सब जनु फूले टेसू॥अ-
द्भुत रण को सकै बखानी॥सिर से परे कहीं भुव आ-
नी॥५०॥दोहा॥जूझे दुरजोधन अनुज हने भीम प-
च्चीस॥कहूं बांहु कहूं जंघ कहूं परे धर सीस॥५१॥
सवैया॥कोपि गदा कर लै तिहि खेत कियोदलदुर्गनदी-
ह संघारो॥जूझे रथी कटि कुंभनि सिंधुर ज्यों गिरि
पूरि प्रवाह प्रचारो॥माह मसुंड दुकूल ध्वजा रुख
चामर कै शशि वार निहारो॥पौन के पूत बली रण
जीति कै सांचहू जद्दु की सिंधु सुधारो॥५२॥दोहा
राखौ भीम कलिंग तहं द्वै घटिका बिरमाय॥धनु-
ष धरे भट राउ तहा भीषम पहुंचे आय॥५३॥बूड़-
त पाई थाह जिमि त्यों दल तिनि कों पाइ॥घरी घरी
साहस बढ़्यो को कवि कहै बनाइ॥५४॥इति श्रीम-
हा भारत पुराणे विजय मुक्ता वल्यां कवि छत्र विर २
चितायां कौरव बध भीम सेन विजय वर्णनोनाम
ऊण त्रिंशो ऽध्यायः॥२९॥०॥०॥

भीष्म उवाच॥

सवैया

आजुही चक्र गदादि के त्रासहि आजु घनो दल २

दुंदु विदारौं॥ आजु महा रथ वंत हतौं सब आजुही कुंजर
वाजि संघारौं॥ आजु अपांडव भूमिकरौं वर आजुही का
ज इते सब सारौं॥ जौन करौं इतनो पुरुषारथ तौं कुल
क्षत्रिय धर्म निहारौं॥१॥ दोहा॥ भीषम कोप्यो देखि कौं
तब अर्जुन गुण ग्राम॥ द्रुपद कुंवर आगे करयो जाहि शि
खंडी नाम॥२॥ भुजंग प्रयात छंद॥ हंस्यो गंग को पु
त्र सो नैन देख्यो॥ तवै आपनो काल जी मांहि लेख्यो॥
महा रोष सों कोपिकै पार्थ धायो॥ दिये वर्म आगे गहें
खर्ग आयो॥३॥ महा कालको काल सो वाण लीनो॥ फ
री खर्ग सों तोरि द्वै खंड कीनो॥ तवै गंग के पुत्र लै शक्ति
ऐसी॥ महा मीच के तेज हू तें अनैसी॥४॥ लखी पार्थ
द्वै खंड लै वान कीनी॥ तवै देखि सेना तवै त्रास भी
नी॥ महा रोष सों गंग को पुत्र छायो॥ धनु वाण लै
सनके सोंह धायो॥५॥ दोहा॥ कोपि हते द्वै अयुत रण रथी अ
ति रथी सूर॥ पायक हय गज छतन छुटि चले द्रोण के पू
र॥६॥ सवैया॥ धीर धीरन चमू चतुरंग सु भागत कोउन
काहू सम्हारे॥ थाकि रहे पुरुषारथ के अति पारथ आपु
हिये बहु हारे॥ अंचि गिरे कहूं वीर गिरे कहूं मत्त गयं
द निको गण डारे॥ भूप जुधिष्ठिर को तृण सो दल को
पको आगिमें भीषम वारो॥७॥ दोहा॥ हनौ पंडु सुत दल
सबल विचारि चल्यो दिशि चारि॥ भीषम सों मन वचन
क्रम सवही मानी हारि॥८॥ जब जानी सेना चली भीष
म सों सब हारि॥ धायो कर धरि चक्र प्रभु रक्षक भक्त
मुरारि॥९॥ सवैया॥ चक्र गह्यो कर कोपि मुरारि नि
हारि तहां अपनो पन टार्यो॥ ज्यों रथ तें धसि॥१०॥

धाये धरा गज जूथनि ऊपर सिंह प्रचारो॥देखत ही
तिल का बलि सीस नहीं चित और विचार विचारो॥
पीठि दई करुणा मय ताहि कृपा करि के जनको प
न पारो॥१०॥अर्जुन उवाच॥दोहा॥सोई हारत पैज
वत जीत्यो यह संग्राम॥द्रुपद पुत्र पहुंचो तहां धृष्ट
द्युम्न तानाम॥११॥चौपाई॥कौरव को दल कोपि संघा
रयो॥यत्र तत्र हति भूतल डारयो॥पार्थ सिखंडी लै तब
धायो॥भीषम के तब सन्मुख आयो॥१२॥देखि सिखं
डी बाण तु गह्यो॥तिनके सन्मुख ठाढो रह्यो॥बाणनि वेधे
पार्थ शरीर॥तब हंसि बोल्यो भीषम वीर॥१३॥अर्जुन
इषु वेधत है मेरे॥बाण न होय शिखंडी तेरे॥द्रुपद पु-
त्र जेते सर हये॥लगे नतन में निरफल गये॥१४॥अ
र्जुन बाणनि मोहि प्रान॥भूमि गिरो यों कहि बलवा
न॥मारग मास अष्टमी भई॥तब भीषम सर सज्या
लई॥१५॥दोहा॥भीषम पौढे सेज सर दशयें दिन व-
र वीर॥पूरब सिर पश्चिम चरण परो पहुमि रण धी
र॥१६॥वरषे सुमन नि स्वर्ग तें सुर सब चढे विमान॥
आई कौतुक सुर ललनि जित तित रूप निधान॥१७
जैसे शब्द अकाश भौ ध्वनि भीषम भट राउ॥कौरव
को अरु शकुनि को मिटो चित्त को चाउ॥१८॥भयो
कुलाहल कटक सब विलख वदन हो संत॥जन जा
न उर आतंक व्है संभ्रम बढ्यो अनंत॥१९॥भीष-
म सरकी सेज लखि लटकत सीसहि जानि॥पट
भूषण कुरु राज तब दये उसी से आनि॥२०॥भी-
ष्म उवाच॥तुम नहिं जानत यह समो लीनो पार्थ र

कुलाइ ॥ वाण वेधि ऊंचो कियो सीस सुभट तह जाइ ॥
२१॥ चौपाई ॥ भीषम कहे तजौं तब प्रान ॥ जब उत्त
र दिशि आवे भान ॥ काढ़ी गंग पार्थ तिहि वान २
छाय रह्यो जल कितो प्रमान ॥ २२ ॥ जहां सर सज्या
भीषम पर्यो ॥ वहुत जतन तहं मंदिर कर्यो ॥ आ
यसु विना मीच नहिं आवे ॥ कौन सुभट भीषम स
रि पावे ॥ २३ ॥ दोहा ॥ समर करण कुरु राज सों पंडु
पुत्र सों रैनि ॥ भयो अमित गति दान वनि सुर पति
वैसी रैनि ॥ २४ ॥ दंडक छंद ॥ नैक हून मानी दुर
जोधन अठान ठानी जाय कौं वखानी उनि भूमि
मांगी थोरीसी ॥ मेहनि को नेह मेटि ते हई की वा
नि लई सुख के पियूष माहि विष मूरि थोरीसी ॥
खोटो अति जी कौन सुभाउ पर्यो नीको कछू आप
नी कहीको संचे कुल कानि तोरीसी ॥ कैधौ हठमढ
भीषमादि सैन सबै सम मूरिख धराय दयो तोरि
तोरि होरीसी ॥ २५ ॥ दोहा ॥ लयो सैन को भार तव २
द्रोण आचारज सीस ॥ तिनहीं की सेवा सबल दल च
ढे सकल अब नीस ॥ २६ ॥ इति श्री महा भारत पु
राणे [illegible] मक्का वल्यां [illegible] विर चितायां २
भीषम पिता मह के मोहनी नाम त्रिंशो
ऽध्याय ॥ ३० ॥
इति श्री भीष्म पर्व्व संपूर्ण ॥ अथ द्रोण पर्व्व कथनं
सोरठा ॥ दल पति द्रोण बनाइ चढ़यो कोपि रण रुद्र
सो ॥ कटक समुद्रहि पाइ सोवत देखत रोषकरि ॥
१ ॥ दोहा ॥ सज्यो सैन कुल पंडु वनि पार्थ चढ़यो रण

कोपि॥निरखत ही मृग राज ज्यों जात करी दललोपि २॥घुमंडे घन कान गाज ज्यों द्वै दल मांहि नि-सान॥चपल पताका दामिनी सिंधुर घटा समान ३॥द्रुपद राय गुरु द्रोणसों भयो जुद्ध अति काल॥ दोऊ वीर समा नहीं वृष्टि करत सर जाल॥४॥प्र-थम धोम रण करि रहे दोऊ वीर समान॥कवच स-ना हवा से मवनि प्रात उगत ही भान॥५॥जुरे वीर दोउ ओर के रज छाई असमान॥भई निशासी छाय तम लसे छपा कर भान॥६॥त्रिभंगी छंद॥सजि च मे सु वर्मा अदूत कर्मा कोपि सुशर्मा आय गयो॥ रण में जस लीजे विर सुन कीजे पार्थहि यह संदेश दयो॥जुरि हमसो न्यारो जुद्ध संवारो अति भारो आ नंद करो॥विर मुन लावहु सन्मुख आवहु धनुष चढ़ावहु वाण धरो॥७॥दोहा॥अर्जुन के उर वीर रस अति वाढ़्यो सुनि वैन॥दोऊ समर प्रवीन अति कीन्ह रण उस रैन॥८॥आयो तहं भग दत्त नृप वल को वाढ़त अंत॥अंजन गिरि पर सूर सो गज ऊपर सोहंत॥९॥ताके सिंधुर के चले को कवि कहीं सुनाइ॥वाह वात के परस ही वार नगन उठि जाइ ॥१०॥दोधका छंद॥भीम वली भग दत्त विलो कयो॥ आवत सो भट कौरव रोकयो॥नेकहु सो वर ज्यो न-हिं मानै॥भांति न भांति न को रण ठानै॥११॥अंकु-श मारि करी तिहि पेल्यो॥भीम वलीन ठिले रण ठे-ल्यो॥पीन के पूत सो मुष्ट प्रहारयो॥सो गज नेक टरै न-हिं टरयो॥१२॥उद्यम को वहु थाकि रह्योई॥जातन

ही मुख बैन कहीजै॥पैन को पूत जितो वल ठांनै॥कुं-
जर सों मन मैंकन आनै॥१४॥दोहा॥चतुर दूत उन२
मत्त वल गरजत भीम हि पाइ॥चाहत लयौ लपेटि
कै अब नहिं कछू बसाइ॥१५॥त्रोटक छंद॥भीमसे-
न वल कीनों सर्व॥सोमन दूटौ भाज्यो गर्व॥कुंजर पै
न हिं पावै जान॥को भग दत्त नरेश समान॥१५॥प
सो शब्द अर्जुन के कान॥वाही दल को छांडे बान॥
को वाहि सकैन साहस रह्यो॥तवहि धाय तिन अ-
र्जुन लह्यो॥१६॥अर्जुन भीम लख्यो तरा तुल्ल॥ल-
ई शक्ति जैसो शिव सल्ल॥रावरा ज्यों लछिमन पै छं-
डी॥वक करि इंदु पूत तव खंडी॥१७॥खंड करी है वा-
रानि काटि॥और लयो दल वारा सिपाटि॥तव भग
दत्त सम्हारो आप॥जाको जगमें बडो प्रताप॥१८॥
पांच वारा करमें तिन्हलये॥तव अर्जुन को उरमें हये॥
लागत उर में सो पर जरो॥विषम वारा लिनि धनु
पर धरो॥१९॥दोहा॥सुवि कुंजर के सिर हयो डारो
सीस विदारि॥पार भयो सर वेधितन कसो फांक
है फारि॥२०॥कुंजर सवल फ का कसो दावि गह्यो भ-
ग दत्त॥गिरजन पावत भूमि में साजत जतन अनंत॥
॥२१॥जीत्यो चाहत पार्थ को पेलत वार वारा पग२
सकत न दुबद सो अंकुश हने अपार॥२२॥सवैया॥
दावि गह्यो जुग जानु में सिंधुर पौरुष को कवि कौन
वखाने॥जुद्ध जुरैन मुरै वर वीर सो भांति अनेक नि
केरण ठाने॥पेलत क्रोध किये भगदत्त न कुंजर नै
कहु अंकुश माने॥निर धन की त्रिय आयसु ज्यों२

अपने पति की कछु चिंत न आने॥२३॥दोहा॥जुगल जंघ मे मृतक गज वार वार एक कोरि॥हारो देदे अंकु शो नहीं सकत अंग मोरि॥२४॥वीते एक महूरते भू मि गिरो गज राज॥प्यादो ह्वै भग दत्त तव धायो भट सिर ताज॥२५॥सोरठा॥कोपि खरग लै धाय क्रोधित अति राते नयन॥मघवा चढ्यो वजाय चपला असि वर जलद तन॥२६॥दोहा॥दो सर लै दोऊ हनी तवही पारथ वाहु॥विन भुज सन मुख पार्थ के चल्यो वलीन र नाहु॥सोरठा॥२७॥पार्थ तीसरो वाण हन्यो सीस मैं क्रोध करि॥मुरछि गिरो वल वान उठि अर्जुन सन्मु ख चल्यो॥२८॥चोपाई॥तव सो पंच पैड चलि गयो॥अर्द्ध चंद्र लै अर्जुन हयो॥काटो जानु जंघ धर परो॥यों भग दत्त भूप संघरो॥२९॥हाहा कार कटक में भयो॥सूरनि मन रवि सम आभयो॥कौरव नृपके दुख अति भारी॥सुख की सकल वासना जारी॥३०॥दोहा॥लीनो अर्जुन लाय उर भूप जुधिष्ठिर आप॥आजु करी संग्राम जय कीनो प्रगट प्रताप॥३१॥इति श्री महा भारत पुराणे विजय मुक्ता वल्यां कवि छत्र विर चितायां भग दत्त वधन वर्णनो

नाम एक त्रिंशो ध्यायः॥३१॥ ॥ ॥

सुंदरी छंद॥ज्ञिति परो भग दत्त लख्यो जव॥कौरव सोदर रोवत हैं सव॥सोच वढ्यो जियमें अति सोच त॥नैनन तें अंसुवा वहु मोचत॥१॥वंदत हैं गुरुकें नृप पायन॥दीन भये वहु भाषत भायन॥आपनु हो सव कारज लायक॥कौं विगरै जहां होउ सहायक॥२

आजु भयो तुम जुद्ध पराजय॥वैरी जीति गये सब निर्भय॥आपु विचार कछू अव ठानहु॥होय विजय मति सोउर आनहु॥दोहा॥३॥रच्यो चक्रव्यूह गुरु सुनि अवनी पति वैन॥दुर्गम दीरघ दुसह ता जान्यो कछू परैन॥४॥द्रोण उवाच॥न्यौति पठावहु पंडु सुत आवहि रण को आज॥कै तू मैं कै व्याहि वन सीकि ओय सब काज॥५॥त्रिभंगी छंद॥सुनि गुरु वानी सो सिर मानी उर आनी तव वुद्धि यहै॥तव दूत वुलायो सो चलि आयो वेगि पठायो जाय कहै॥तव आयसु पायो तुरत सिधायो सीस नवायो भूप जहां सो सवनि जुहारो ले वैठारो वंधव चारो लसत तहां॥६॥दूत उवाच॥सोरठा॥दीनो यह संदेश चक्र व्यूह रच्यो तहां॥रन हित चलहु नरेश कै तजि विग्रह जाहु वन ७॥युधिष्ठिर उवाच॥दोहा॥न्यौति पठाये आयहै वाहो जाय संदेश॥दूत समादे कीनो तहां भूपति उर अंदेश॥८॥चौपाई॥जेते भट हैं या दल माहीं॥चक्र व्यूह हि जानत नाहीं॥अर्जुन श्री हरि संग सिधायो॥तीरथ तें चलि सो नहिं आयो॥ता विन जुद्ध कौन यह करिहै॥चक्र व्यूह वैठि को लरिहै॥अर्जुन विनु जानो दल हीनो॥ताते न्यौतो रण को दीनो॥१०॥तीनो वंधुनि राजा वूझै॥काहो मंत्र जो जाको सूझै॥जो यह जुद्ध नहीं वनि आवै॥राजपाट छिति को को पावै॥११॥प्रथमहि भीमहि वूझे राजा जो रण जीते सीझे काजा॥सुनिकै उत्तर भूप हि दी

नो॥ऐसो सुन्योन मैं रण कीनो॥१२॥छप्पै॥जुरैं असु
द्द गंधर्व सर्व तिन को वल गारों॥किन्नर नर अरु
जक्ष सवल वल दल संघारों॥वज्र पानि जो वज्र
ले हितो चित्तन आनो॥जुद्ध करत दिन रैंन नही
हैं कछु अघानो॥वहु संक अंक नग पन्नगनि
को मो सों सरिवरि करैं॥सुनि भूप मोहि या जुद्ध
की सो न कछू विधि जानी परैं॥१३॥दोहा॥वूझे
नृप सह देव तव जो यह जानहु जुद्ध॥जीति लि-
ये व्है जायगो राज पाट सव सुद्ध॥१४॥सह देव उ
वाच॥जीतों दानव देव हों जुरैं जुद्ध जो आइ॥पै
विधि चक्र व्यूह की कछु न जानी जाइ॥१५॥राजा
उवाच॥करो नकुल संग्राम यह राखि कटक की २
लाज॥ना तरु भूमि गई सवै रण कीनो विनु काज
१७॥नकुल उवाच॥छप्पै॥आजु अमित संग्राम दे
व दान वसों मंडों॥जुरैं जुद्ध जो आय काल दंडहु को
दंडों॥सव अवनी पति जीति गर्व तिन को वर गंजों॥
सकल शत्रु संघारि वाहु वल सव दल भंजों॥सु-
नि भूप पाय तुव आय सैं हौं इतनों संग्राम करों॥
यह सौंह मोहि नृप पंड की सो उलटि पहुमि ऊप
र धरों॥१७॥दोहा॥देख्यो सुन्यो न कान हूं चक्र व्यू-
ह नरेश॥सो न जुद्ध कहु मैं कियो यह जिय में
अंदेश॥१८॥चौपाई॥राजा वहु जिय मे पछिता-
इ॥क्यों जीत्यों अव संगम जाइ॥विना पार्थ वहु
भयो अकाज॥पहुमिन साई वूड़ो राज॥सुर नर
दल सव भीमहि डरैं॥ताहू तें कछु काज न सरैं॥

सहदेव अरु नकुल विचारि ॥ तेऊ गये हिये अव हारि ॥२०॥ वैठो भूपति नाये सीस ॥ नहिं वोलत कोऊ अव नीस ॥ चारो वंधव मनमें सोचें ॥ मन पछि ताये नैन जल मोचें ॥ २१ ॥ सकल कटक में वीत्यो त्रास ॥ अंतह पुर सव परो उपास ॥ यह सव सोधु सु भद्रा सुन्यो ॥ हिये सोच करि माथो धुन्यो ॥ २२ ॥ पति की सुरति चित्त में धरी ॥ नैननि जल देही थर हरी ॥ कृस्न साथ चलि अर्जुन गयो ॥ वहुरो नहीं कहा सो भयो २३ ॥ सुत अभि मन्यु गोद में परो ॥ माता नैननि आंसू ढरो ॥ परो पत्र उर पै तिहि वार ॥ चिंता कीनी चौकि कुमार ॥ २४ ॥ अभि मन्यु वाच ॥ दोहा ॥ कौन हेत तुम मलिन हो कहि धों मो सम काइ ॥ या जग में तो तें सुखी औरन कोऊ आइ ॥ २५ ॥ सवैया ॥ जेठ जुधिष्ठिर भीम वली जहाँ हैं जग वंदन कृस्न सो भाई ॥ धीर धनुद्धर अर्जुन सो पति जुद्ध जुरे जम हू खमिखाई ॥ हे विवि वंधु सहदेव सो देवर की रतिहे सव भूतल छाई ॥ मो सम पुत्र हि पाय के माय कहा कहि धों मुख पै मलि नाई ॥ २६ ॥ दोहा ॥ वरन वरन को या स मैं कहि धों कारण कौन ॥ काहू के उर त्रास नहिं संपति संजुत भौन ॥ २७ ॥ सुभद्रा उवाच ॥ तुम पितु रण हित कृस्न संग गये कसे तन त्रान ॥ आई सुधि नीकी नहीं कहो रहत कों प्रान ॥ २८ ॥ चौपाई ॥ भूप जुधिष्ठिर दुःखनिदान ॥ भोजन कीन्हो खंडो पान ॥ तीनों अनुज रुदन वहु करें ॥ वैन नहीं मुख तें अनुसरें ॥ २९ ॥ नहीं पार्थ की सुधी कछू जोथी ॥ यहै वात

साहस धीर॥सूरनि मनि बेहीर कलित शील सिंधु र
सौवीर॥४९॥राजा उवाच॥नहिं गुरु ढिग विद्या पढी
समर न देख्यौ नैन॥करि साहस वीरा लयौ जानी का
हू पैन॥५०॥मोहि अचंभौ पुत्र सुनि कौरव दानव दे
व॥गंधर्व किन्नर जक्ष तूं कहि सब अपनो भेव॥५१
अभि मन्युरुवाच॥छप्पै॥सेवक सोइ धन्य स्वामि
कारज में सूरो॥धन्य धन्य सोइ पुत्र मात पितु आ
यसु पूरो॥धन्य धन्य वह दास भंग नहिं शासन क
रई॥धन्य धन्य सोइ सूर समर पग उलटि न धरई॥
धनि बोलि सत्य कवि छत्र कहि सुजस सकल जग
लीजिये॥बहु राज काज मन लाज धरि जन्म सुफल
अब कीजिये॥५२॥दोहा॥नहीं भूप संसौ करौ सोच
नसौ बहु चित्त॥करौ विजय भट सब हनौं आजु रा
वरे हित्त॥५३॥इति श्री महा भारत पुराणे विजय
मुक्ता वल्यां कवि छत्र विरचितायां चक्र
व्यूह रचनो नाम द्वा त्रिंशोऽध्यायः॥३२॥
युधिष्ठिर उवाच॥दोहा॥पढ्यौन गुरु ढिगतैं कहूं
लख्यौन नैननि जुद्ध॥कौ कांध्यौ तैं भार सुत सो मोसौं
कहि शुद्ध॥१॥अभि मन्युरुवाच॥सुनि नृप पूरव ज
न्मकी कथा कहौं सत भाव॥मथुरा पुर उत्तम अवर
नि. शोभा वाही न जाव॥२॥सुंदरी छंद॥भार भयौ र
उपजे बहु दानव॥जैन नहीं बहुधा मुनि मानव॥
होम धर्म तप जज्ञ नसावत॥होन नहीं व्रत संजम
पावत॥३॥भारत विप्रनि देखि तपो बल॥दीरघ र
दीरघ दानव को दल॥कै बहु ते बसुधा जिय व्याकु

ल॥ जात भई सब [illegible] पुरी थल॥४॥ तामुख वात सु
नो जग वंदन॥ भ्रमि भये सब [illegible] नंद नंदन॥ भार उ
तारि हने दल दानव ठावहिं ठांव थपे मुनि मानव
॥५॥ सवैया॥ भूतल भार उतारन कों जग में अवतार
मुरारि धस्यो॥ मारि वकी वग को मुख फारि अघा
सुर को वल प्रान हस्यो॥ तोरि लये रद धाय भुशुंडतें
कोपि करी जब आनि अस्यो॥ कंस को हंस विध्वंसि
तहां सव दानव वंश निवंश कस्यो॥६॥ चौपाई॥ तव
श्री कृस्न पैज उर धरी॥ सकल भूमि विनु दानव क
री॥ छोटे वड़े असुर जे भये॥ तवर विक्रम के सव हये
॥७॥ मारे सव वह त्रास दिखाई॥ मैं माता तव वची
पराई॥ गर्भवती पितु देह सो गई॥ ऐसी गति विधि
ना निर्मई॥८॥ ताके गर्भ जन्म मैं लयो॥ कछू ज्ञान
तव मो उर भयो॥ खेलन जाउं शिशुन के संग॥ नाना
विधि सव राचत रंग॥९॥ इक शिशु यों कहि गारी
दई॥ सुनत मोहि वहु लज्जा भई॥ तव उनकेहि न
ज्ञातिन गोत॥ तोहि हनौं तेरो को होत॥१०॥ चलि त
व माता पै हौं आयो॥ तवही सव वृत्तांत वतायो॥ को कु
ल कौन पिता कहि माता॥ कहा कुटुंव वंधु निजु भ्रा
ता॥११॥ माता उवाच॥ पुत्र पिता की जो गति सुनिहौ॥
वहु पछितैहौ माथो धुनिहौ॥ कुटुंव तुम्हारो श्रीहरि
हन्यो॥ वालक वहु तरुण नहिं मन्यो॥१२॥ दोहा॥ कोऊ
उवस्यो असुर नहिं पुरुषन कौऊ वाम॥ कीनी अपुव
स पुहुमि सव निर्भय मथुरा धाम॥१३॥ लाज भई य
ह वात सुनि क्रोध भयो वहु चित्त॥ सुनि पितु कीं वे

सौ दस्ण कियो जतन तांहित ॥१४॥ धूम घूंटिकै कैं धमुख नींद भूख सब साधि ॥ तन मन सब एकां त करि शिव सौं लगी समाधि ॥१५॥ दंडक छंद ॥ २
नीचो राखि मूरध चरण किये ऊरध में धूम घूंटि घूंटि तप कीनो त्रास ना कछै ॥ सूखि गई त्वचा सब आमिष विलाय गयो श्रोन कौ सलिल चल्यो कैतिक वखानि च्वै ॥ एक चित्त साधि कै समाधि २ महा कष्ट साधि कीनो न विराम कवहूं न घटिका हू है ॥ छुन वाहि शंभु नाथ भूत नाथ भव नाथ २ शंकर प्रसन्न भये मो पर दयाल ह्वै ॥१६॥ दोहा ॥
हौं प्रसन्न तो सौं भयो मागि मागि उत्ताल ॥ जो कछु तव मन रहै सो पुरवउं इहि काल ॥१७॥ चौपाई ॥ नवमें तिन सौं विनई सेव ॥ नमो देव देवन के देव ॥
वृत्ति भूमि मो मथुरा गांऊं ॥ तीनहु भवन प्रगट ता नाऊं ॥१८॥ वासुदेव भूतल अव तरयो ॥ दानव कौ कुल तिन संघरयो ॥ लघु वालक काहु रह नन पायो ॥ सो हरि तहं अव नीश कहायो ॥ भागी गर्भवती मो माता ॥ नैहर गई जहां निज भ्राता ॥ ताके गर्भ भयो ता ठाउं ॥ धरो मातु अहि दानव नाउं ॥२०॥ अव स्वामी सो करो उपाउं ॥ अपने कुल को पाऊं दाउं ॥ लगैन आयुध होयन घाउ ॥ दै कछु ऐसो करो सहाउ ॥२१॥ दोहा ॥ जाके वल हरि कौ हतो कुल को वदलो लेहु ॥ लहो विरत वर आपनी जननी को सुख देहु ॥२२॥ दीनो एक म जास तव ह्वै शिव परम दयाल ॥ तव रक्षा कै है २

ममर सव भावेंगे। लिखि कान ॥२३॥ शिउ उवाच॥म
धुभार छंद॥ जव रण जैहै जय जस पैहै॥ अरिकु
ल गंजे॥ पर दल भंजे॥२४॥ जव रण जानें॥ अरि
न परानें॥ वहु वल कीनों॥ करि वल लीनो॥२५॥ दो
हा॥ रहिये बैठ मजूस में कोहिन लखिहै कोइ॥ तु
म तन की रक्षा महा याही तें सव होइ॥२६॥ आयो
गेह मजूष लै वीते कोतिक काल॥ मथुरा पुर कों उ
ठि चल्यो जातन श्री गोपाल॥२७॥ जव कछु चलि मा
रग गयो लये मजूषा सीस॥ विप्र रूप मोकों मिले ती
नि भुवन के ईस॥२८॥ गीतिका छंद॥ जरा युत सव दे
ह निर्वल लकुट कर में लखियें॥ चल्यो आवत कष्ट में
विच वाट कैसो देखियें॥ दया उपजी मोहि देखत
कही यह गति हेरि कै॥ कहां विप्र चले कहां वानी सु
नाई टेरि कै॥२९॥ रदन दावी अंगुली द्विज कही मो
ढिग आय कै॥ सुनत आवें कंस यों कहि क्यों वचै भ
गि जाय कै॥ शब्द ऊंचो क्यों करै स्वर दीन क्यों नहि वो
लई॥ ता विप्र की मुख सुनत वानी मोहि चित चिंता
भई॥३०॥ दोहा॥ मैं विनयो ता विप्र सों कंस हि काहा डु
राउ॥ क्यों वोलै स्वर दीनतर सो कहि मोसों भाउ॥३१॥
विरति भूमि मथुरा पुरी तहं असुरनि को वास॥ कंस
मानि कै वैर चित कीनो सव को नास॥३२॥ हों प्रोहित
तिनको सदा तिन विनु ह्वै गयो हीन॥ नहीं वच्यो ज
न मानें जग अव सव सों आधीन॥३३॥ चौपाई॥ ॥स
संघारे असुर अनेक॥ भागि वची तरुनी तहं एक॥ ग
र्भवती पितु के ग्रह गई॥ ऐसी गति विधिना निर्मई॥३४

ताके पुत्र भयो मैं सुन्यो॥चलि तहँ आउं चित्त में
गुन्यो॥ वह सुत ह्वैहै बहु बलवान॥ अवशि राखि
है मेरो मान॥३५॥ हति कंस हि मथुरा पुर लैहै॥ ग्रा
म ग्राम हम कों लै दैहै॥ यह सुनि कै मेरो मन मान्यो॥
वह मैं निज प्रोहित करि जान्यो॥३६॥ तब मैं सो द्वि
ज निकट बुलायो॥ सब विधि अपनो भेद बतायो॥
तू प्रोहित हौं तुव जज्ज मान॥ रहि मो पास राखिहौं
मान॥३७॥ दोहा॥ फूल्यो द्विज ये वचन सुनि हर्ष
वंत अकुलाइ॥ मोसों हित भाखे वचन कहि क्यों
तू कित जाइ॥३८॥ चौपाई॥ तब मैं अपनो भेद ब
तायो॥ कंस हि हौं जीतन चलि आयो॥ तब फिरि
विप्र कहै अकुलाइ॥ तोपै रिपु क्यों जीत्यो जाइ ३९
दोहा॥ बली नहीं है कंस सों तीनि लोक में कोइ॥ ता
सों तोसों जुद्ध में कैसें सर वर होइ॥४०॥ तोहि देखि
धीरजु भयो जान्यो जीवन आज॥ अब मथुरा जिनि
जाय तू ह्वैहै महा अकाज॥४१॥ तब मैं कह्यो मनु
ष को भेद सबै समझाइ॥ दीनौ शंभु कपाल ह्वै प्रा-
णनि रक्षक आइ॥४२॥ सकल निपालौं और चाणू
कौन सबै रण जीति॥ हारत जानि मनुष मैं पौढ़ि र
हौं यह रीति॥४३॥ सोरह सहस करी लरौ ले सब ले
हु लगाइ॥ मोहि लखै नहिं शंभु बिनु दूजौ कोऊ र
आइ॥४४॥ चित्र पद छंद॥ विप्र कहै तब ऐसे॥ सुर
रण जीति हि कैसे॥ जानत हौं छल कीनौ॥ तो कहं
है यह दीनो॥४५॥ सोन कछू कहि जाई॥ तू काहि मों
सों समुझाई॥ मैं सब बात बताई॥ बात सबै द्विज पाई ४६

दोहा॥सीखि लराई सब लई छलि बारि द्विज रु वपु मंडि॥बैठ्यो मांहि मजूष हो सकल कपट की कुंडि ४७॥चौपाई॥विकट कारी उन सबै लगाई॥रु जे में हुती वाहि समुझाई॥तामें मोहि मूंदि सो गयो॥बुद्धि नसाई परबस भयो॥४८॥धायबो बल सब पौरुष भाग्यो॥कीनों सो काछू का जन लाग्यो॥शिव शिव कहत तजे में प्रान॥फिरि तब प्रगट भये भगवान॥४९॥दोहा॥एक कुपी में मूंदियो श्री हरि मेरे प्रान॥होनी सोई ह्वै रहे जोरा चै भगवान॥५०॥चौवास यै तव सो कुपी दई सुभद्रा हाथ॥बिनु बूझे खोलो न तुम यों बिन यो जदुनाथ॥५१॥चौपाई॥पति के गेह सुभद्रा आई॥तब सो कुपी हाथ ही लाई॥न्हाई रितु वंती ह्वै नारि॥जानि सुगंध सु लखी उघारि॥५२॥संघत ताको बहु सुख पायो॥ताके उदर पैठि हो आयो॥दिन दिन बाढ़त विकट शरीर॥विथा सुभद्रहि थर रिन थीर॥५३॥दसें द्वार की रुंधी स्वास ताहि गई जीवन की आस॥सहसबाहु अहि दानव भयो॥सह्यो न भार मात पै गयो॥५४॥दोहा॥दिन दिन देही पर हरी कृशा ह्वै रह्यो शरीर॥देखन आये सुनि विथा भगनी को जदुवीर॥५५॥श्रीकृष्ण उवाच॥कहा तोहि मन कामना कहा बसै तुव चित्त॥सो मो सों समझाइ कहि आनों तेरे हित्त॥५६॥सुभद्रा उवाच॥पैरों रुधिर प्रवाह में यह भावै चित मोहि॥नित्य निसदु हि विधि करों अथवा मारों तोहि॥५७॥त्रोटक छंद॥भ्रम श्री हरि चित्त भयो त

वुड़ी ॥ भगिनी मुख बैन सुन्यो जवही ॥ वहु संभ्रम चित्त
हि छाय रह्यो ॥ कछु जाय नही मुख वैन कह्यो ॥ ५८ ॥
जव सूर छिप्यो कछु रैनि गई ॥ तव व्याकुलता भ
गिनीहिभ ई ॥ हरि सों यह वैन विचारि कह्यो ॥ कहि
एक कथा वसि चित्त रह्यो ॥ ५९ ॥ दोहा ॥ श्रीहरि च
त्र व्यूह की कीनी कथा प्रकाश ॥ छिमा भई सुनिकै
कछू मिट्यो कछू मन त्रास ॥ ६० ॥ चौपाई ॥ इहि विधि
कथा तहां सुनि लई ॥ सुनत सुनत आधी निशिग
ई ॥ रैत नहूं का निद्रा छई ॥ कछू छिमा ताके उर भ
ई ॥ ६१ ॥ कथा रही यह मो चित आई ॥ हूं कां दै तव
कथा कहाई ॥ तव ही हरि भाषा पहिचानी ॥ काही
न तव सों फेरि कहानी ॥ ६२ ॥ कुंडलिया ॥ कीनो सं
भ्रम चित्त में कास कमल दल नैन ॥ उत्तर काहू
असुरको नरकी भाषा हैन ॥ नरकी भाषा हैन उदर मैं
हो तिनि जान्यो ॥ सहस वाहु को शत्रु आपनो तव प
हिचान्यो ॥ पहिचान्यो तिहि वार सज्यो तव जतन
नवीनो ॥ को कवि सकै वखानि चित्त जेतो भ्रम कीनो ॥ ६३ ॥ दोहा ॥ सहस वाहु को कास तव प्रतरा र्च्यो
वनाइ ॥ कर कुशलै अभिषेक करि मंत्र जप्यो अ
कुलाइ ॥ ६४ ॥ तासों सकल भुजा नसीं द्वै भुज रही
शरीर ॥ तव ह्वौ प्रगट्यो भूमि पर भई सुभद्रहि धीर
६५ ॥ चत्र व्यूह कथा सुनी सुन्यो गेंद को भाउ ॥ भी
म पैज करि ताहि वर तोरिलेइ करि चाउ ॥ ६६ ॥ जि
ती कथा सव मैं सुनी सो वरनी तो जाइ ॥ रह्यो सुनै
विनु भीम सो तोरि देहि सुनि राइ ॥ ६७ ॥ छप्पै ॥ भी

म सेन की पैजवारत कौ संकन करई॥मुनि गन तज
त समाधि शंभु को आसन टरई॥भूतल व्योम पता
ल लंक पति कांपत थर थर॥गदा लेत कर कोपि अं
क आतंक सकल नर॥कोन कांपहि कवि छत्र कहि
डरि डरि करि वर परिहरत॥क्षोभ होत सुर असुर को
सु पवन पुत्र क्रोधहि करत॥६८॥दोहा॥जीत्यो चक्र
व्यूह रण कौन सकै अब राखि॥नहि नरेंद्र चिंता क
रो वचन कहे हमि भाखि॥६९॥दंडवा छंद॥दूह दल
पारों रोरि सुभट संघारों टोरि पोरि पोरि गर्व सब सू
रनि के गारिहों॥श्रो नहूं मैं वीरों द्रोण रथते विरथ
करों काहू विकर्ण हूं को आजु रण मारिहों॥सा
सन दुश्शासन को चैन दह वैन हू को भूधरसे दुर्य
र को भूतल पछारिहौं॥वाणनि की वायुसों उड़ाय
देहुं सकुनि हि क्रोध दुर्जोधन के सीस ही सों मारिहों
७०॥दोहा॥कै सुचित्त वीरा दयो धर्म सुवन नर नाह॥
पंच छोहनी सकल दल दीनो करि उत साह॥७१॥स
हदेव अरु नकुल संग चले द्रुपद नर नाथ॥चले वि
राट चमू लिये और घरुका साथ॥७२॥भूपति को
सिर नाय कै चल्यौ निसान वजाय॥गेह आय जन
नी चरण वन्दे बहु सुख पाय॥७३॥इति श्री महा
भारत पुराणे विजय मुक्ता वल्यां कवि छत्र विरचि
तायां अभि मन्यु उत्साह वर्णनो॥

नाम त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः

३३॥सुभद्रा उवाच॥चौपाई॥देखत तो को मनु गा
ह बस्यो॥धनि धनि कृष्ण मो अब लस्यो॥अपने कु

लको राख्यो पान्यो॥धन्य धन्य सुत मैं पहिचान्यो॥१॥
दोहा॥मुक्ता चौका पराय कैं वेद उचारत विप्र॥चल्यो
वीर रस सों सुभट शत्रु हिं जीतन छिप्र॥२॥मंगल गा
ये सखिन मिलि बाजन विदित बजाइ॥नौछावरि
मणि मुक्ता करि नीरज चीर लुटाइ॥३॥वंदिन मिलि
बोल्यो विरद रथ आरूढ़ कुमार॥चल्यो सवल दल
साजि कै कोपि कस्यो किरवार॥४॥सुंदरी छंद॥कुंज
र पुंजनि पुंजनि सोहत॥वैरख जाल महा मन मोहत॥
देखत यों कवि लाछवि साजत॥ज्यौं उत दामिनि बा
रिद राजत॥५॥चंचल बाजि किधौं खग खंजन॥पी
न कुरंगनि की गति गंजन॥ज्यौं सलभा गण पायक
राजत॥शोभन दीरघ दुंदुभि बाजत॥६॥दोहा॥रज उ
डि लोप्यो व्योम रवि रह्यो धरा तम छाइ॥कमठ कस
मस्यो शेष की लचकि लचकि सिर जाइ॥७॥दंडक
छंद॥छाती होत धर शेष की धरा धरत कूरम कल
मलात भूरि तरु तल तल॥टूटि टूटि द्रुम छिति
छूटि छूटि नीर गये खूंदि खुर तार मूंदे सरिता सक
ल जल॥चहूं ओर चकित चवाइ सस बाइ गये अरि
अवनीश कंपि कंपि उठे हल हल॥सूर अवतंस पंडु
वंस अंश अर्जुन के सेन चले हालि उठे सब भूतल
के थल थल॥८॥दोहा॥चलत कटक पहुंच्यो तहां
जहं विराट को धाम॥दियो सो धुनुक सह चली जगी
उत्तरा बाम॥९॥सखी उवाच॥जीतन चक्र व्यूह को
कोपि चढ़्यो तव कंत॥चढ़्यो वीर रस कटक में हर्ष वंत
दीसंत॥१०॥अति आतुर जे वचन सुनि उठी उत्तरा र

चक्र व्यूह निदान॥खबरि भई कुरुराज को पठयो नर सुधि लैन॥२२॥इति श्री महा भारत पुराणे विजय मुक्ता वल्यां कवि छत्र विरचितायां अभिमन्यु पयान वर्णनो नाम चतु स्त्रिंशो ऽध्यायः॥३४॥

अथ दोधक छंद

लैन सुधि नर नाथ पठायो॥नाम लसै विद वन्त सुहायो॥को सजि कै रण को चढ़ि आयो॥सोहहि सैन कितो संग लायो॥१॥जाय वसीठ तहां इमि देख्यो॥ घोर घनो घन सो दल लेख्यो॥ वृष्ण लोगनि को सजि आयो॥भीम युधिष्ठिर रोष निछायो॥२॥कै सहदेव कि अर्जुन सोहै॥सर वाहा अब दल में को है॥जात कहा कित तें दल आयो॥भेद कछू अब मैं नहि पायो॥३॥सैन उवाच॥दोहा॥अर्जुन सुत अभि मन्यु यह चढ्यो निसान बजाय॥जीतन चक्र व्यूह को वो ... ...॥४॥चलि वसीठ पहुंच्यो तहां ... ... पास॥देखो देख्यो कुवर तहं ... ...॥५॥दै असीस ठाढ़ो भयो आदर कियो कुमार॥कुशल प्रसन्न हि वूझि कै वैठक दई अगार॥६॥अभिमन्युरु वाच॥कैसो चक्र व्यूह नृप रच्यो कहो किहि रीति॥सोई घटि का एक में पैठि लेहु सब जीति॥७॥वसीठ उवाच॥कोट रचे इकईस गुरु संघट कह्यो न जाय॥पैठि कौन कहि नी करै संकट दुर्ग महाय॥८॥विकट दरी मारग विकट सागर सम गंभीर॥ताके अमित प्रवाह धसि कौन लहि सकै तीर॥९॥दुरजोधन वलिवंड

सुत लाखनि नाम बाहादु॥प्रथम कोट आभार सिर
लयो भुजा वर आदु॥१०॥कोट दूसरे विकट में विदु
र वीर को वास॥तीजे शल्य काह्यो बली तीजे कोट नि
वास॥११॥कोट चतुर्थ में द्रोण सुत रह्यो बली द-
ल गाजि॥कोट पांचवें सकुन दल राख्यो बहु दल र
साजि॥१२॥छठे सुशर्मा सात में साज्यो सबल सबाह
अष्टम विम्बासेन तहां सजे कवच संनाह॥१३॥न
वम विषम भूरि श्रवा दशमें कौ सब भार॥एकाद
श अरु द्वादशें ताही को विस्तार॥१४॥कोट तेरहें द्रोण
गुरु सकल सेन कौ लाज॥चतुर्दशें गांगेय तहां बा
जत वड़ो समाज॥१५॥हे कलिंग गढ पंद्रहें जिहि
बहु जीते युद्ध॥दुशासन गढ षोडशें सेना सहित
सक्रुद्ध॥१६॥चौपाई॥सप्तदशें कृत वर्मा देख्यो॥र
ताको महा गर्व में लख्यो॥अष्टादशें लसै महा बाहु
नव दश सेना जुत उत्साहु॥१७॥दोहा॥कोट बीस
में कर्ण नृप ताको बल नहिं अंत॥एक बीस मह
जय द्रथ साज्यो दुसह दुरंत॥१८॥दुरजोधन सब अ
नुज सुत साजि सेन चतुरंग॥न्यारो लसै महीपत
हं सुभट विकट सब अंग॥१९॥यह विधि चक्र व्यू
ह की सुनि अभिमन्यु कुमार॥करो विदा चलि जांउं हों
दुरजोधन के द्वार॥२०॥अभिमन्यु रु वाच॥साजे
नृपति महा रथी सकल सजे तन त्रान॥यह संदेसो
देहु तुम कर वर गहो कृपान॥२१॥पहुंच्यो दूत मही
प पै कही सकल विधि जाय॥नृपति जुधिष्ठिर की
चमूं तुम पर पहुंची आइ॥२२॥साज्यो चक्र व्यूह

पै पारथ सुत बलि बंड ॥ नाम भेषलषु जानिये पौरु
ष परम प्रचंड ॥ २३ ॥ ताको साहस मैं लख्यौ. कहत तन
बनई बाल ॥ कहत लेहुं हों जीतिकै चक्र व्यूह कोजा
त ॥ २४ ॥ करो उताइल कटकमें साजो राजाराय ॥
साव धान सब होहु भट गरजि निसान बजाय २५
त्रोटक छंद ॥ प्रतिहार नरेशतबै पठयो ॥ अवनीपु
निसों यह सो दैन गयो ॥ सुनिता मुख बैन सबै सजिकै
तन त्रान कसे बहु धा गजिकै ॥ २६ ॥ चहु ओरनि
घोर निसान बजे ॥ कहुं कुंजर वाजि समूह सजे ॥ व
षवंत महारथ साजि तहां ॥ लखिये नहिं पौन प्र
वेश जहां ॥ २७ ॥ अभिमन्यु जबै तहं सौ त्रि चल्यो ॥
बहु वीर नि को हिय देखि हल्यो ॥ पहिले गृह मध्य
प्रवेश कस्यो ॥ तब लाखनिके मनसोच परयो ॥ लखि
बालक सैन करै रणको ॥ यह शोक भयो अतिही
मनको ॥ नगहे धनुवान सो सीस धुनै ॥ पलही
पलही हिय मांहि गुनै ॥ २८ ॥ लाखन उवाच ॥ दो
हा ॥ अतिअपराधी मो पिता पंडु सुतनि नहि खो
रि ॥ उन नथरी जिय मांफ इनि औगुन किये करो
रि ॥ २९ ॥ प्रथम बनायो मंदिर रच्यो तामें दिये जरा
य ॥ भजि उबरे दावागिनतें श्रीहरि कियो सहाय
३० ॥ पांसे कपट बनाइकै छल करि लये हराइ ॥
राज पाट सब छीनि कै दीनो विपिन पठाइ ३१
खेंचत लज्या ना करी द्रुपद सुता को चीर ॥ हरि सहा
य उधरी नहीं कितहूं तनका शरीर ॥ ३२ ॥ ऐसे कोवि
विचारि कै समरन आप अजाइ ॥ जान दयो सुत

सुत पार्थ को नहिं राख्यौ विरमाइ॥३३॥गयो पैठि रहद्द
सेर पार्थ पुत्र वर वीर॥निरखत धनु गुण जुत वारो
विदुर उठे रण धीर॥३४॥निरखत ही अभिमन्यु को वि
दुर डुलायो सीस॥रक्षा बालक की करौ ह्वै भूपाल जग
दीस॥३५॥आपुन बांध्यों जुद्ध नहिं धनुष दियो भुव
डारि॥पापी वैठे गेह कत पंडु पुत्र तुम चारि॥३६॥पौ
रुष तजि लज्या तजी तजी सकल कुल कानि॥बालक
रणहि पठाइ कै आपु रहे सुख मानि॥३७॥दीरघ तन
दीरघ भुजा दीरघ पौरुष पाइ॥कातर ह्वै वैठे [illegible]दन
बहु बल वंत कहाइ॥३८॥विदुर माथ बरजो सबै को
ऊ जुरै न जुद्ध॥चल्यो तीसरी पारिको पार्थ पुत्र ह्वै
सुद्ध॥३९॥पैठि गयो [illegible] पार्थ पुत्र नव धाइ
सहित सल्य भट सकल मिलि कीनो धनुष चढाइ
४०॥[illegible] जुरे वीर विविधाइ॥त
व[illegible] हनी शांति ह्वै क्रुद्ध॥४१॥वि
षम चोट [illegible] वैगि दै पीठि॥पारथ सु
त कीनी [illegible] पर दीठि॥४२॥चौपाई॥तहां
द्रोण [illegible] पौरुष जैसे अखंड॥त
हं अभिमन्यु वेगि दै गयो॥तासौ महा जुद्ध तव भ
यो॥४३॥अगिन बाण उन लीने तीनि॥डारे पार्थ पुत्र
ते छीनि॥बाण बीस सौं गुरु सुत हयो॥ताके परम
क्रोध उर छयो॥४४॥तब अभिमन्यु हयो शत बाण
उन सर कियो सहस संधान॥दोऊ समर करत बलि
वंड॥दोऊ वरषत बाण अखंड॥४५॥दोहा॥ऐके वि
धा दुहुन की संभ्रम करत समान॥ऐसे वेई और को

पट तर दीजै आन॥४६॥क्रोध वाढ़ो तव पार्थ सुत वि
सिके छांड़े वान॥द्रोण पुत्र मूर्छित भयो आगे कस्यो
पयान॥४७॥तवही पारथ सुत गयो कोट पांचवें को
पि॥शकुनि रह्यो तहं क्रोध करि अंगद ज्यों पग रोपि
४८॥शकुनि उवाच॥वांधौ जीवत वालकै भागिन
पावै जान॥मारिलेहु तिनको अवै जो कोउ संजैइया
पान॥४९॥छेक्यो चहूं दिशाते कुंवर वाण अनेक
चलाइ॥घोर कर्म कीनो महा रह्यो व्योम सर छाइ।
५०॥रण कराल अभिमन्यु को सवको न रवल पैजाइ
जितहि द्वागिनि सों उठे तृण ज्यों दल भहराइ॥५१
भजे लजे नहिं शकुनि उर सव दल गयो पराइ॥व
हुत वीर अभिमन्यु सों उवरे हाहा खाइ॥५२॥छठे
सातवें आठवें नवमें कोट मंझाय॥दश एकादश द्वा
दशौं पहुंच्यो वलही जाय ५३॥सवही को सर सेल
सों हतिके गर्व नसाइ॥गयो तेरहें कोट धसि द्रो
ण उठे अकुलाइ॥५४॥द्रोण उवाच॥चौपाई॥वाल
कत रण में कित आयो॥कौन सुन्यों इहते कत
धायो॥तो संग संगम हौं कत मंडौं॥वालक जानि
हिये अव छंडौं॥५५॥जानतहू अव क्यों भगि जैहै
क्यों करिके इष तीक्षन सैहै॥काल वली वर तो कहं
लायो॥वालक भूलि इहां कत आयो॥५६॥पारथ
भीम युधिष्ठिर आवै॥सो क छु नेक प्रवेश हि पावै
तू कत पैठि सके गढ़ माहीं॥तो अव गाहन को य
ह नाहीं॥५६॥दोहा॥सुनत कुंवर यह पञ्ज सो हुंकि
वोल्यो ये वैन॥धनु गहि कर गुरु विप्र तें छिन दुका

जुद्ध करैन॥५७॥सवैया॥बालक मो हि गनो जिन द्रो
ण॥ सु कौं नहि बाण॥ प्रण मन साजत॥ जानत हो प्र
भु वंश की रीति नहीं लरिवैके कोउ जुद्ध हि भाजत॥
मो संग जौ लगि आप जुरै नहि तौ लगिहौ इहि मं
डल गाजत॥ तौलगि आपुन चित्तन आनत जौल
गि बाण न सीस विराजत॥५८॥दोहा॥ कौन हमारे
वंसमें भागपो देखि कुमार॥ ताते द्रोण विचारि कै कार
टेवो वार वार॥५९॥ कृपा करी जो आप उर प्रथ महि
करो प्रहार॥ रहै न धोखो चित्तमें धरिये आप हथ्यार
६०॥ गीतिका छंद॥ बाण॥ द्रोण तजे नहीं इन वचनको
टिक भाषियो॥ जानि बालक वेष कारण हृदै में वहु रा
खियो॥ कोप करि अभिमन्यु छंडे बाणसे सब लेखि
कै॥ सहजही तिन छीनि डारे उरध आवत देखिकै॥६१
दोहा॥ खुरप बाण अभिमन्यु लै ध्वजा पताका काटि
॥डारे भू तल शरनि सों सब दल लीनी पाटि॥६२॥ सवै
या॥ जे वहु कालहुनें जितवार सो ते उजरे नहि जुद्ध
अनैसे॥ बाण विधे सब के तन यों जिमि रोषित व्याल
बिले महं पैसे॥ सूर सनद्ध भये अध अंधक मध्य गि
राय दये सवरे से॥ ज्यों उनमत्त मतंग सरोवर पैठि वि
दारत वारिज जैसे॥६३॥ दोहा॥ हये द्रोण के लक्ष स
र कह्यौ न संगम जाइ॥ शलभा गन ज्यों व्योम धर
रहे बाण तहं छाइ॥६४॥ सवैया॥ कोटनि कोटि हुते
वहु जोधा सु वाहुन है धटिका विरमायो॥ पौन के
गौन ते वाढि उठो दल नीरद संघट सो विचरायो॥
भूतल व्योम दिशा विदिशा सुत पारथ के सर पंजर

छायो है भय भीत ससोकित अंगनि कौरव जानत अर्जुन आयो ॥ ३५ ॥ दोहा ॥ मंड लीका कीनो धनुष पारथ सुत वलिवंड ॥ वेध्यो गुरु हू लक्ष सों जीत्यो समर अखंड ॥ ६६ ॥ समर सह्यो नाहिं द्रोण गुरु रह्यो मानि हिय हारि ॥ पै हा अगिले कोट में पारथ सुत भटमारि ॥ ६७ ॥ और सवाल थल जीतिकै पहुंच्यो करण निकेत ॥ तवही उठि ठाढो भयो सोई रण के हेत ६८ करण उवाच ॥ दोधक छंद ॥ जानत हौं शिसु मीच वुलायो ॥ ढीठ भयो चलि मो ढिग आयो ॥ वृद्ध हुतो द्विज द्रोण पुरानो ॥ हौ तिनु का करि तो कहं जानो ६९ जीवत कौं न वचै भजि मोपै ॥ होय कहा अव मो ढिग तोपै ॥ पारथ को सुत यों तव भाखे ॥ काल वुलाउ जो तो कहं राखे ॥ ७० ॥ सवैया ॥ वीर अवीर महा भट भीर सो तीरही तीर रवेर सब हेरे ॥ आजु सवै तव गर्भ हरो अव पायो है मैं करि आपनो नेरे ॥ जीवत जाय न सन्मुख आय वौ तो सों मूढ कहां यह टेरे ॥ भूप युधिष्ठिर की जय को कुरु नंदन वांधहु देखत तेरे ॥ ७१ ॥ दोहा ॥ आप धनुर्द्धर धीर तुम रहे काहडु कहाडु ॥ तो वल ढाई जानिहों युद्ध जीति जो जाडु ॥ ७२ ॥ दुर जोधन वांधों जियत तेरे देखत आज ॥ नृपता माहि मंडल करैं युधिष्ठिर महराज ॥ ७३ ॥ सुंदरी छंद ॥ करण सही पति कोप कियो जव ॥ ऊरध मैं सर छाय दये तव ॥ तें अभिमन्यु वली रण तोरत ॥ सन्मुख ते अंग नेकन मोरत ॥ ७४ ॥ आदि धनुर्द्धर धीर महा वर ॥ व्योम हि छावत है सरही सर ॥ अद्भुत ज

द्रोणाचार्य ने कौरवों की सेना का चक्र व्यूह रचा
तिसे युद्ध करने को अभिमन्यु आया

अभिमन्यु

पांडवों की सेना
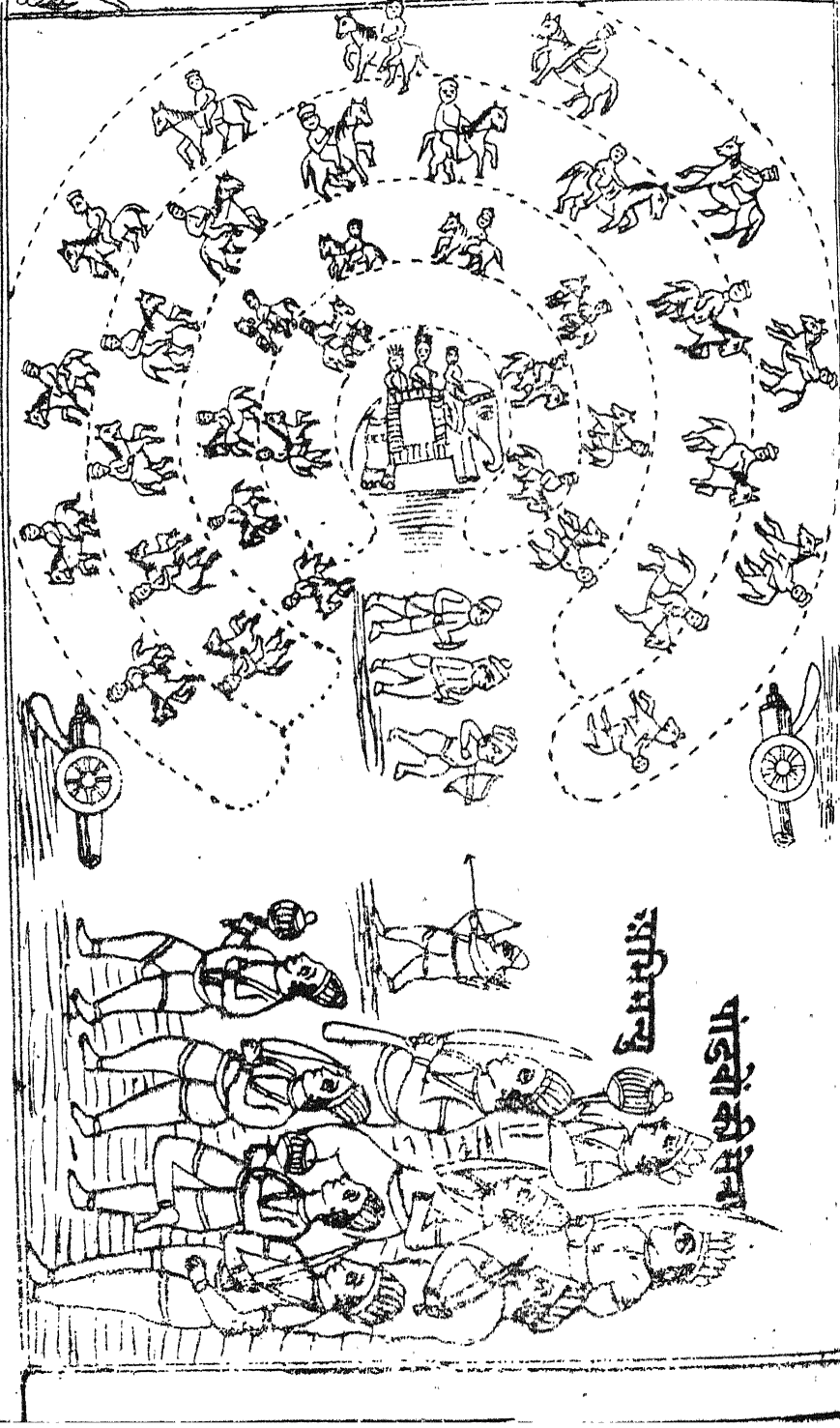
द्ध नहीं कहि आवत॥ कोउपमा कहि ताहि बतावत॥ ७५
दोहा॥ लख्यो करण अभिमन्यु सों जबहि जयद्रथ जुद्ध॥
बलसों रोके पंडु सुत तिरछो पैठि सक्रुद्ध॥ ७६॥ चौपा-
ई॥ भूप जुधिष्ठिर भीम प्रचारो॥ तौ पह जायन सों अ-
भिमारो॥ पंडु मही पति के सुत रोके॥ बैठि रहे सुसवा
इस सो के॥ ७७॥ दोहा॥ भयो महादेई रावर रोके पंडव
चारि॥ रह्यो जयद्रथ रोपि परा अंगद की उन हारि॥ ७८
चौपाई॥ चलि अभिमन्यु गेह में गयो॥ पारथ कुमर
अकेलो भयो॥ भयो करण सो जुद्ध कराल॥ छयो आ
काश थरा सर जाल॥ ७९॥ तद अभिमन्यु बढ्यो बहु क्रु
द्ध॥ रविनंदन महि सक्यो न जुद्ध॥ विचलि भग्यो नहि र
रोप्यो पांउ॥ नर पारथ सुत के भो चाउ॥ ८०॥ सुंदरी छंद॥
बाणन साथ उड़ाइ दये भट॥ पौन चले जिमि नीरद
संघट॥ कौरव यों लखि के उर आनत॥ आय गयो रण
पारथ जानत॥ ८१॥ दोहा॥ पाछे देख्यो पार्थ सुत साथ
न पांडव चारि॥ विलखि वदन बिसमो कियो रह्यो र
बिचारि बिचारि॥ ८२॥ अभिमन्युरुवाच॥ गीतिका छं
द॥ आजु जो रण भीम होतो जुद्ध मेरो देखतो॥ छेप
राजय करो भग्यो भवाल कौतुक लेखतो॥ लख पौर
ष कौन मेरो किया इहि पल आयके॥ जानि कै उत
पात कौरव कुमर रुंको जायके॥ ८३॥ दीपक पर
ज्यों पतंग यो परे भट धाय के॥ मेघ रूप ज्यों वृष्टि र
सायक करी चहुं दिशि जायके॥ जुरे रण भूरि श्र
वा दहैं वेन वृषा सन बली॥ जुरे कौरव जुत कलिंग
हिं शोभिजे रण अस्थली॥ ८४॥ दोहा॥ बहु दिशितें

अभिमन्यु तब छेकि लयो बलिबंड ॥ ज्यों सो सुरपति गि-
रिनि ज्यों करि करि कोप अखंड ॥ ८५ ॥ बढ्यो कोप अ-
भिमन्यु उर तब मुकराये वान ॥ कटे पताका चौंर ध्व-
ज काटि गये करण कृपान ॥ ८६ ॥ भुजंग प्रयात छंद ॥
चले भागि चौंहू दिशा रावराने ॥ निषंगी चले चर्म
वर्मा पराने ॥ रथी सारथी अश्व हस्ती भगे हैं ॥ नहीं
जुद्ध में वीर कोऊ खरे हैं ॥ ८७ ॥ पताका ध्वजा का-
टि है खंड कीने ॥ तजे अस्त्र काहू नहीं हाथ लीने ॥
तहां कोपिकै कर्ण को पुत्र आयो ॥ मनो दंड धारी
महा रास छायो ॥ ८८ ॥ तबै पार्थ के पुत्र सों जुद्ध ठा-
न्यो ॥ नहीं चित्तमें नेकहू त्रास आन्यो ॥ कटे वाण
ही वाण सों अंग ताको ॥ करैं वीर दोऊ दुहू जुद्ध था-
को ॥ ८९ ॥ दोहा ॥ रवि नंदन को पुत्र तहं वीरनि म-
नि वृषकेतु ॥ पार्थ पुत्रको जो रही जानन भीतर हे-
तु ॥ ९० ॥ अर्द्ध चंद्र अभिमन्यु ले हयो हियो बलवीर ॥
मोहितह्वै भूतल गिरो अतिथर हरो शरीर ॥ ९१ ॥
चौपाई ॥ दुरजोधन सुत लछिमन आयो ॥ पारथ
सुत सों रण को धायो ॥ दोऊ भिरतन माने हारि ॥ स-
कैन कोऊ काहू मारि ॥ ९२ ॥ दिशा दिशातें मिलि वीर-
व आये ॥ चहूं दिशितें तिनि शर मुकराये ॥ सुदृढ़ का-
हू शक्ति प्रहारी ॥ बल करि पारथ सुत तन डारी ॥ ९३ ॥
मूर्छित गिरो धरणि अकुलाई ॥ दुरजोधन सुत त-
व उठि धाई ॥ दोहथ गदा सु लछिमन हयो ॥ विना
जीव पारथ सुत भयो ॥ धर्म जुद्ध नहिं हिये विचा-
र्यो ॥ परो कुंवर तिहि दुष्ट संघार्यो ॥ सुनत जुधि-

खिर बहु दुख पायो॥अति आनंद कटक में छायो॥ २
४५॥ दोहा॥ कृस्न पक्ष एकादृसी मारग मास बखानि॥
प्रान तजे तब पार्थ सुत कटक रह्यो भय मानि ४६
इति श्री महा भारत पुराणे विजय मुक्ता वल्यां कवि
छत्र विरचिता यां अभिमन्यु विमोह
नो नाम पंच त्रिंसो ऽध्याय:॥ ३५॥
दोहा॥ अर्जुन आयो जीति रण पश्चिम दिशा अव
गाहि॥ निरखि ससो कयो कटक सव अति भय उपजी
ताहि॥ १॥ भुजंग प्रयात छंद॥ ससोके विलोके सबै
एव राने॥ महा दु:ख संजुक्त ते को बखाने॥ नगारे
सुनी नाकहूं वेद गाजें॥ वृथा सों नही वेद विद्या म
साजें॥ मसा लेन दीसें नही दीप देखें॥ सबै सूर आ
तंक सों चित्त लेखें॥ तबै पार्थ जीमें महा त्रास आयो॥
तहां वैन श्री कृस्न जूको सुनायो॥ ३॥ अर्जुन उवाच॥
दोहा॥ बिलख्यो देख्यो कटक सब अरु बिलख्यो २
सब साथ॥ जान तुहीं जूको इहां धर्म पुत्र नर नाथ
४॥ कैरा जूको भीम अब सब विधि भयो अकाज
पुरुषारथ सब चलि गयो गयो हाथ तें राज॥ ५॥ नृपति
जुधिष्ठिर पै गये देख्यो सब परिवार॥ पग वंदे कर
जोरि के अस बूझ्यो ब्योहार॥ ६॥ अर्जुन उवाच॥ दे-
खत सबही कुशल सों कुशल सकल अवनीश॥ कौ
न हेत बिलखे सबै सो मो सों कहि ईश॥ ७॥ लाज म
हा उर नृपति के कह्यो कछू नहि जाइ॥ हरि वैन नृप बो-
ल्यो तबै बिलख बदन अकुलाइ॥ ८॥ राजा उवाच॥ क
होंया हां कह तन बने भई अने सी बात॥ जूझि परो

अभिमन्यु रण दुरवन जरत सव गात॥९॥ कपट जुद्ध र
चि द्रोण गुरु चक्रव्यूह वनाय॥ ताहित हमको पार्थ
सुनि न्योतो दियो पठाय॥१०॥ सोरठा॥ हम जाने नहीं र
है चकित नर नाथ॥ साहस कै अभिमन्यु तव वीरा ली
नो हाथ॥ पैठो वंकट कोटमें भीम आदि दै साथ॥ द्रोण
वारण को देखिकै धीरजु रह्यो न हाथ॥१२॥ नकुल स
हदेव भीम को रह्यो जयद्रथ रोकि॥ भयो महा दुःख व
र रहे विलोकि विलोकि॥१३॥ कुंवर करण सों जुद्ध क
रि फेरि गिरो मुरझाय॥ लछिमन कोपि गदा लई पर
सु मारो आइ॥१४॥ हाहा करि सुनिकै गिरो तवही
पारथ वीर॥ वीते एक महूरते सुधिमें भये शरीर॥१५॥
अर्जुन उवाच॥ सहे वाण क्यों द्रोण के क्यों करि अंग र
यो जुद्ध॥ मुख चाह्यो सुत कौन को कारण भयो जव
जुद्ध॥१६॥ रोकि रह्यो मग जयद्रथ भीम न पायो जान॥
निपट अकेलो पुत्र तव तिहि थल छांड़ो प्रान॥१७॥
चौपाई॥ भीम सेन जो पावै जान॥ कै वृकन पावै सुन
दान॥ कह्यो जयद्रथ को यह भायो॥ तातें मैं अव यह
व्रत लायो॥१८॥ आजु वैक सुत को हौं मारौं॥ अथवत
भान जयद्रथ मारौं॥ जो पौरुष इतनो नहि साजौं॥ मा
त पिता पांडुहि हौं लाजौं॥१९॥ सवैया॥ मात पिताहि ल
जाउं महा अरु तीरथ धर्म सवै व्रत हारौं॥ दोष विना त
रुनीहि तजें तिनिकी गति पाय निरै पग धारौं॥ विप्र
निको अपमान किये पति सों त्रिय वीच विछोह हि
पारौं॥ एतिक पातक मो हि लगे पुनि जो नहि आजु ज
यद्रथ मारौं॥२०॥ हेम हरे द्विज दोष करे अति गर्व म

रे गुरु मान न पांवें ॥ मित्र को द्रोह लये पर चित्त सो चिं-
ता कुकर्म निके मग लावें ॥ झूठि येसा रिव जे आवत
भारिव नि एज कहा अप स्वारथ भावें ॥ जोन य-
थों वर आसु जय दृथ ए तिक पातक मो शिर आवें
२१ ॥ दोहा ॥ करी पैज हठि पार्थ यह बहु दुख करि
रण धीर ॥ जब जान्यो विसमें करत चरित रच्यो ज-
दुबीर ॥ २२ ॥ माया वपु अभिमन्यु तव अर्जुन को दर
साइ ॥ सपनो सांचों जानि चित संभ्रम रह्यो भुलाइ
२३ ॥ शिव पुर देख्यो पुत्र तव सपने खेलत सारि ॥
चितयो सो इत में नहीं रह्यो पार्थ मन मारि ॥ २४ ॥ ता
स्न कह्यो सुत इंद्र के आह चले अपार ॥ परे पुत्र की
पीठि पर चिंते कह्यो तिहि वार ॥ २५ ॥ अभिमन्यु रुवा-
च ॥ सोरठा ॥ कौन को भाय तू मूरख रोवे कहा ॥ सव ज-
ग आवत जाय कर्म फांस वंधन वंध्यो ॥ २६ ॥ को मा-
ता को पूत कौन कहो काको पिता ॥ वर धूतें जग धूत
कित याको शंसय करे ॥ २७ ॥ दोहा ॥ भयो शंक तव
पार्थ को सुनत पुत्र मुख वेन ॥ इतने निरखि चरित्र
को उघरि गये फिरि नैन ॥ २८ ॥ नाराच छन्द ॥ कह्यो
चरित्र स्वप्न सो जो पार्थ आपु देषियो ॥ रह्यो भुलाय
चित्त में कछू विषाद ना कियो ॥ उठो समर्थ गाजि के
वढ्यो सुरोष चाप सों ॥ करयो निखंग कोपि के कराल
काल भाल सों ॥ २९ ॥ त्रोटक छंद ॥ कुरु राज सुनी य-
ह वात जहीं ॥ प्रगटो गुरु सो सव भेद तहीं ॥ कछु आ
पुन आजु विचार करो ॥ यह मो विनती चित माहि
धरो ॥ ३० ॥ दिन एक जय द्रथ राखि अवे ॥ मम पूज

हि सों मन काज सबै॥ व्रत आजु धनंजय कौ हरि हैं॥ न
रहैं जग जीवत सो मरिहैं॥ ३१॥ कुरु राज कहे यह मा
नि अबै॥ सुत पडु अनाथ विचारि सबै॥ तबही नृप
सों गुरु द्रोण कहै॥ बल जा कहि रक्षहु कौन लहैं ३२
दोहा॥ द्रोणाचारय तब रच्यो सकट व्यूह बनाइ॥ भेद
भाव जाको कछू काहून जान्यो जाइ॥ ३३॥ आगे रच्यो
मन सम रच्यो विकट अति व्यूह॥ आस पास हाथी
रथो राखे सूर समूह॥ ३४॥ जमहू को न प्रवेश जहं दुर्ग
म दुसह सवारि॥ नर किन्नर नहिं लहि सकें रहैं सुरे
सों हारि॥ ३५॥ भाग्यो चाहत जयद्रथ पै नहिं पावत
जान॥ राख्यो सकट व्यूह में तजो अथावत भान॥ ३६
चौपाई॥ राख्यो व्यूह मारु सों लाय॥ जमहूं पै सो लख्यो
न जाय॥ आस पास गज रथ की पांति॥ दुर्गम दुसह
रच्यो बहु भांति॥ ३७॥ रक्षक द्रोण चमू पति वीर॥ अ
तुल पराक्रम साहस धीर॥ गाज्यो पार्थ धनुष लै वान॥
सारथ कीनो तब भगवान॥ ३८॥ दोहा॥ वाजे मारु ज
रथो अतिगति तवल निसान॥ भेरि शंख बहु धुनि
भई वीर धर गहे कृपान॥ ३९॥ प्रथम क्रुद्ध गुरु द्रोण सों
असि वर वाजी मार॥ नहिं प्रवेश अर्जुन लहैं कारत
अमित संघार॥ ४०॥ मारयो परै न पार्थ पै द्रोण विप्र
बलि बंड॥ सर समूह नभ छाय तहं संगम कियो अ
खंड॥ ४१॥ गीतिका छन्द॥ पार्थ के रथ के तुरंग भिद
तन तिल तिल के छये॥ देसकें नहिं आगकौ पग पर
म विह्वल ह्वै गये॥ चाहि मुख श्री दास बोले वीरय
ह सुनि लीजिये॥ अब पावै वाजि जैसे सो कछू विधि

कीजिये॥४२॥दारा॥छाय अकाश अर्जुन गेह सो तब धा
रि लयो॥कपि सरसों गंग काढ़ी नीर अश्वनि कोदयो॥
फेरि करि श्रीहरि जु रथ पै चढ़ि अकुलाय के॥ पंडु
को सुत द्रोण सो तबही जुरो रण आय के॥४३॥
दोहा॥बल करि कें द्विज द्रोण को सब हित चित भ्र
माय॥गयो पंथ दै दाहिनो दल में पहुंच्यो जाय॥
४४॥भयो समर नृप करण सें तिन हू रण अघबाहु
पेलि गयो चलि अगमनो जय को शंख बजाइ॥४५
जोजन तीनि गयो बली चलही कटक मकार॥तहां
जुरो रण शकुनि सों संगम भयो अपार॥४६॥भयो
कुला हल सोर है सुन्यो कछु नहिं जाय॥सुन्यो शंख
नहिं पार्थ को धर्म पुत्र बिलखाय॥४७॥चौपाई॥
पांचजन्य शब्द सुनि राई॥मनहीं मन बिलखे अ
कुलाई॥सात्य कि जादो पठयो तहां॥संगम करत
पार्थ हो जहां॥४८॥रथ चढ़ि धनुष बाण तिन लयो॥
प्रथम द्रोण गुरु आड़ो भयो॥कह्यो बादि जादो रण
आयो॥मैं ही तुव गुरु पार्थ पठायो॥४९॥घटिका
चारिक संगम भयो॥भूतल व्योम सघन ह्वै छयो॥
दिशि बिदिशा सूझै नहि नैन॥सात्य कि कहै विप्र
सों बैन॥५०॥सात्य कि उवाच॥दोहा॥जाहु विप्र भ
व भागि कै समर करत बेकाज॥जोन भगाऊं तोहि
हों तो गुरु पार्थ हि लाज॥५१॥विषम बाण उर लग
तही द्रोण गिरो अकुलाइ॥जहां हुतो भूरि श्रव
ता ढिग पहुंच्यो जाइ॥५२॥कोप्यो लखि भूरि श्र
वा कर लीनो दश बान॥सात्य कि के तिनि उर हये सु

रथ॥ भीमहि क्रोध भयो॥पुनि कौरव वीर उडाय लयो॥ पठ
यौ धरणी थल में जबही॥नर ज्यो भगि विप्र गयो तब
ही॥६४॥दोहा॥रथके बाजी भीम तब छिनहीमें संघारि॥
बढ्यो क्रोध पांडुपुत्र कुंवर सबही डारे मारि॥६५॥ कोपे
दूर्धर दुर्द्धर बल सुबल सुबाहु प्रचंड॥सोम कलिंग अ
घोष रथ जिन जीते बल बंड॥६६॥भीमसेन रणको
पिकै इक इक सर सब मारि॥और रथी रथ धीर रथ
डारे बहु न संघारि॥६७॥चल्यो पूर रथ भान को को
कवि कहै बखानि॥भागि चले बहु सूर गन नेकु न धी
न भरि आनि॥दंडक छंद॥श्रोनित सलिल माहि २
कौनके कौन मे सीस स्याम स्याम कुंतले सिवार देखे हें
विथे॥ब्याल हैं विशाल भुंड दंड लिये जाल जहां गा
ह से करीन के करन वर विशेषिवथे॥कच्छ पति रति च
में चक्र चाक चक्र रथ चामर पताका ताको मीन अव
रेखिवथे॥पवन पूत क्रोधके समर सिंधु सो च्यो रच्यौ
फूलनि मराल बरा भाग द्विज देखिवथे॥६८॥दोहा॥
भूतल डारि महारथी आगे पहुंच्यो जाइ॥निरखि
शरासन बाणलै करण उठ्यो अकुलाइ॥७०॥करण
उवाच॥जीते केतिक समर तें भीम कहां अब जाय॥
जीवन दुर्लभ जानि बस पर्यो हमारे आय॥७१॥भीम
करण को उर हये सप्त बाण करि क्रुद्ध॥धनुष काटि र
वि पुत्र तब हदे हन्यो सर सुद्ध॥७२॥चौपाई॥फेरि क्रो
ध रवि नंदन भयो॥कवच भीमको तब कटि गयो॥
धायो भीम उघरि अंग॥कीनो जाय तहां रण रंग॥७३
रथ आरूढ़ पवन सुत भयो॥रवि सुतके उर मुष्टिका

दयो॥भूतल गिर सो उठि अकुलाई॥मल्यो धनुष भीम सिर आई॥७४॥बार बार रिस सों रुक मारो॥खैंच्यो काढ्यो बारक ढारो॥भीम सेन को पौरुष गयो॥कारण शक्ति अति व्याकुल भयो॥७५॥दोहा॥करि मुष्टि कुंती बचनकी भीम दयो मुकुराइ॥विलख वदन चलि पार्थ पै तवही पहुंच्यो जाइ॥७६॥देख्यो पौरुष पार्थको तव कुरु नंदन राय॥सोलह सहस मतंग तहं दीनें तुरत पठाय॥७७॥भुजंग प्रयात छंद॥चले मत्त मातंग ते २ अरन आये॥मनो भूथली में महा मेघ छाये॥तहां पंडु के पुत्र चिंता भ्रमाये॥ससो वो हिये में महा त्रास २ लाये॥७८॥हिये सोच सोचे गयो नेम मेरो॥रह्यो आसरो है दया सिंधु तेरो॥सदा आप हैं दीन हीके सहाई॥परी भीर भारी सबै सो नसाई॥७९॥दोहा॥काही भीम सों पार्थ तव अव वल वंत सम्हारि॥कातर लों अति सिथिल तन कहा रह्यो हिय हारि॥८०॥यों सुनि गाज्यो सिंह ज्यों आकंपे मातंग॥विचलि चले मृग जूथ ज्यों सूखि गये सव अंग॥८१॥उठ्यो भीम वलिवंड तव वाढ्यो न पौरुष जाय॥एक बार दश सहस गज ऊरध दये चलाय॥८२॥सवैया॥एक रथी रथ मंत महा इक एक हतें वर वीर निषंगी॥तेउ जुरे नहिं आयुध लै जु हुते वल विक्रम सत्र के भंगी॥मत्त मतंग तजे नभ १ को विरच्यो रण भीम सदा रण रंगी॥पौन के चक्र में जाय परे सव ह्वै रहे अंग त्रिशंकु के संगी॥८३॥दोहा॥जेतिक गज ऊरध तजे फिरि भुव गिरे न आय॥सहस पंच गज दूसरे ऊरध दये चलाय॥८४॥लंक पौरि

अर्जुन सात्यकि अरु भीम सेन ये कुरु दल में धसकर
युद्ध कररहे हैं भीम सेन ने १० हज़ार हाथी आकाशकों फेंके

परते गिरि कछुक कंदरन माझ॥लखत मतंग गदा हू ने जानि नीथरी सांझ॥८५॥दुर जोधन लौं अनु जत हूं सीस हने बलवीर॥पैरत रथ जल रंगसे शोणित सलिल गंभीर॥८६॥हय हस्ती रथ भंजि कै दीनि दल बिललाय॥निदान जय द्रथ पार्थ तव पहुंच्यो चल ही जाय॥८७॥सूरसम निरख्यौ द्रोण तव बार बार अकुलाइ॥उतहि जय द्रथ निरषि चैहें निरखि निरनि रवि जाय॥८८॥दोधक छंद॥द्वै जन को मन सोचत ऐसें है रजनी चकई मन जैसे॥रैन चैहे वह द्रोसहि चाहै यो तिनके मन में मन माहै॥८९॥ताकत भानु जय द्रथ देख्यो पार्थ तवै निज काज विशेख्यो॥अंजलि वारा ध्यानं जय लीनो॥ता छिन ही अरिके सिर दीनो॥९०॥दोहा॥उडौ वारा के संग सिर कोकनि कहैं वनाइ॥परो तासु पितु अंजुली निरखि गिरो अकुलाइ॥९१॥चौपाई॥तवही सिर अंजुलि में गयो॥निरखत शोक वंत सो भयो॥कौरव दल में अति भय भारी॥परे आध्य मुख नर अरु नारी॥९२॥हा हा कुरु नंदन अनु सरे॥कोऊ कहूं धीर नहिं धरे॥पूरी पैज पार्थ की भई॥हरि अर्जुन शंख ध्वनि ठई॥९३॥इति श्री महा भारत पुराणे विजय मुक्ता वल्यां कवि छत्र विरचितायां जय द्रथ वधन अर्जुन विजय वर्णनो

नाम षट् त्रिंशो ऽध्यायः॥३६॥०॥

दोहा॥जबै जानि जय द्रथ हत दुर जोधन ह्वै क्रुद्ध॥गुरु तहि रथ ऊपर चढ़ी चल्यो जुद्ध को जुद्ध॥१॥सुंदरी छंद॥सूर छिप्यो तम रैनि भई तव॥गाजि महा रथ संत

उठे तब। देखि यह ताहि क्रोध बढ्यो अति। व्योम गयो ब-
हु सूरनि कौ हति॥२॥ रैनि भई न तहां कछु सूझत॥
अपने बाग न ले भट जूझत। जुद्ध भयो कवि कौन ब-
खानहिं। द्वै दल में कोउ हारि न मानहिं॥३॥ दोहा॥ त-
जत धरका ऊर्ध ते गिरिवर शिखर अपार॥ सतत प-
रसा शक्ति सौं वारन अमित संघार॥४॥ चौपाई॥ भ-
यो अंधेरो ना कछु सूझत। फूल फल और व को दल
जूझत। नारद मुनि मगन दरसावें। दल संघ रत
महा सुख पावें॥५॥ अर्द्ध रैनि लौं बीती मार। हिडो-
हनी दल कियो संघार॥ दल को नास जानि कुरु रा-
य॥ चाह्यो करण सों तब अघु लाय॥६॥ दुर्योधन
उवाच॥ दोहा॥ द्वै अहरय यह व्योम तें बरषत गिरि
तरु जाल॥ प्रलय काल सब दल हन्यो कीजो काम
कराल॥७॥ आनी शक्ति जो पार्थ हित तासौं याहि
संघार॥ बूडत रण की धारमें यह दल वीर उवार द
शक्ति प्रहार कियो करण जानि कटक को नास॥
गिरो ऊर्द्ध ते वीर धर भयो सकल दल त्रास॥८॥ व-
ज्र पात सौं धर परो गिरि से सुभट गिराइ॥ हन्यो
खंड इक छोहनी दल सब चल्यो पराइ॥१०॥ जिमि
धरका धर परो पंडु पुत्र दुख पाइ॥ कदन करत
तब हंसि उठे श्रीहरि बहु सुख पाइ॥११॥ समाधान
करि यों कही पार्थ जियो है आज॥ गई जु सेंदी
करण की अब सीझो सब काज॥१२॥ भयो घोर रन
त्र्योदशी जब बीत्यो इक जाम॥ उठो द्रोण सब रा-
जिनकै किये अमित संग्राम॥१३॥ चौपाई॥ पांडव

सेन चल्यो अकुलाइ ॥ काहू पासन राख्यो जाइ ॥ नृपति विराट तीस सर हयो ॥ इन करि क्रोध सरासन लयो ॥ १४ ॥ तीन बाण गुरु के उर मारे ॥ काटि पताका अरु ध्वज डारे ॥ एक बाण उरमें तब हयो ॥ लागत द्विज व्याकुल ह्वै गयो ॥ १५ ॥ दोहा ॥ बहुरि स

द्रोणाचार्य्य ने राजा विराट के माथे में तीर मारके गिरा दिया दोनों सेना में युद्ध

म्हारो द्रोण गुरु सायक हन्यो लिलाट ॥ वास लयो हरिलोक तब जूझ्यो भूप विराट ॥ १६ ॥ जबही कुवि ध्यानी गिरयो कर वर गहे कृपान ॥ रोक्यो द्रुपद नरेश गुरु लैहैन आगे जान ॥ १७ ॥ सहदेव धायो नकुल पार्थ जुधिष्ठिर आप ॥ जग मंडल नव खंडमें जाको अमित प्रताप ॥ १८ ॥ त्रोटक छंद ॥ चहु ओरनितें गुरु घेरि लियो ॥ तब देखत ही बहु रोष भयो ॥ सब के उर में बहु बाण हने ॥ मुरझाय गिरे कवि कौन भने ॥ १९ ॥

अर्जुन उवाच॥जग वंदन दै सिख मोहि ऐसे॥रणजीत
हि ज्यों बर आजु सबै॥तुम ही विपदा सब छम हरी॥
मन की बहु पूरण आस करी॥२०॥सवैया॥त्रिभुवन ई-
श जगदीश सों कर जोरि नाय नाय सीस पार्थ वंदना
महा करी॥कोटि कोटि कोटि कोटि संकट अनेक भांति
भांति जनन की आपदा सबै हरी॥भारी भारी भीर भा-
व जहां जहां जानी भय तहां तहां पैज काहूं सेवक की
नाहरी॥अमित अपार बल संतन के रखवार गावत
निगम नव कीरति धरी धरी॥श्रीकृष्ण उवाच॥नाराच
छंद॥तजै कृपान बाण द्रोण पुत्र जो मरो सुन्यो॥को-
टि धौं कराल शोक दुःख होहि सो गुन्यो॥सरोष भीम
सेन आज हाथ जो गदा धरै॥तुरंत द्रोण पुत्र नाम
को मतंग संघरै॥२२॥दोहा॥अश्वस्थामा नाम गज
हन्यो भीम करि कोह॥द्रोण होय विह्वल सुनत बढ़ै
हिये बहु छोह॥२३॥बैन जुधिष्ठिर नृप कहै तबही वि-
प्र पत्याइ॥तजै सकल आयुध सुनत अति विह्वल
ह्वै जाइ॥२४॥द्रुपद पुत्र धृष्टद्युमन तबही काटै सी-
स॥यह उपाय करि जीति हो बोले त्रिभुवन ईस॥२५॥
दुरद अश्वत्थाहन्यो भीमसेन तिहि बार॥हन्यो द्रोणसु
व पुत्र मैं अब कर गहै हथ्यार॥२६॥द्रोण नही रण को
तजै बैन सुन्यो न पत्याय॥तो मानैं मन बचन क्रम का
है जुधिष्ठिर राय॥२७॥तबै पुकारो धर्म सुत काहि
गुरु तजै कृपान॥बंधुन हित बोल्यो तबै भूपति बुद्धि
निधान॥२८॥जुधिष्ठिर उवाच॥समर अश्वस्थामा ह-
न्यो भीमसेन सुनि विप्र॥नर ना [illegible] कुंजर हत्यो क-

ही नृपति यह छिप्र ॥ २६ ॥ त्रोटक छंद ॥ यह बैन सुन्यो गुरु द्रोण जही ॥ बहु व्याकुल ह्वै गिरी भूमि तही ॥ स म मावत कौरव सो न सु नै ॥ बहु व्याकुल ह्वै द्विज सीस धुंनै ॥ ३० ॥ सोरठा ॥ त्व गुरु तजे त्रापान धृष्ट द्यु

म्न अवलोकि कै ॥ सिर काट्यो तिहि वार धर्म पुत्र की जय करी ॥ ३१ ॥ दोधक छंद ॥ दुर जोधन को दल दुच्चि ताई ॥ भीषे छत्र कही नहिं जाई ॥ वृद्धि थकी साधि की गति थाकी ॥ ग्यास थकी मन में नृप ताकी ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ धर्म पुत्र जय रण भई गहरे बजे निसान ॥ का सो चमू पति करण तव दुर जोधन दे मान ॥ ३३ ॥ इ ति श्री महा भारत पुराणे विजय मुक्तावल्यां का वे छत्र विरचितायां द्रोण गुरु वधनो नाम सप्तत्रिं २

णो ८ध्याय:॥३०॥इति द्रोण पर्व्व समाप्तम्॥अथ कर्ण पर्व्व कथनं॥सोरठा॥दल पति कीनो कर्ण दुर्जोधन अपंने सुप्रन॥जन जनको दुख हर्ण घट दरशनको कल्प तरु॥१॥दोहा॥चढ़्यो कर्ण रण धीर तब कर्ण्यो ने अनुवान॥सुर नर गण के तासु की पट तर नाहिं आन॥२॥शल्य कियो रथ सारथी पारथ जीतन काज॥सल वर्मी लछि मन चढ़े ले संग शकुनि समाज॥३॥दुशासन रक्षक भयो कर्ण संग सुख पाइ॥जूथ जूथ सैना चली गरजि निसान बजाइ॥४॥अर्जुन अर्जुन कहत भट आए रणगल गाजि॥बांधि लेउ वर आजुही जानन पावे भाजि॥५॥सजे कवच सन्नाह तन वाण शरा सन हाथ॥वीर दुशासन आदि दै सब आये इक साथ॥६॥भीम दुशासन देखिकै परम क्रोध सों धाय॥धरिके पटको भूमि पर दै गीवा पै पाय॥७॥भीमसेन उवाच॥सवैया॥है कोउ दो दलमें समरत्थ दुशासन कों वर आनि छुड़ावै॥रे कुरु नंदन रे रवि नंदन जे करि सो तोपे बनि आवै॥हर षनं रण रोवत देखत जूझ करें सब यों मन भावै॥काल हुते उबरे भजि जीवत जीवत सों भजि जानन पावै॥दोहा॥है दल में समरत्थ जो याको लेहि छुड़ाइ॥पाछें कहि हो बल कहा देखत राजा राइ॥८॥शंख ध्वनि करि तवक री नत छिन ही अकुलाइ॥वच न भीम को पार्थ सुनि तबहि जुधिष्ठिर राय॥१०॥कौरव दल काहु ना कह्यो लीनी भुजा उखारि॥केहरि ज्यों मृग कों उदर त्यों उर डार्यो फारि॥११॥सवै

या ॥ ज्यौं रघुनाथ हन्यो रण रावण जंभ किधौं सुर रा-
ज पछारो ॥ राघव वीर वध्यो वारम्हुर दीह्यरादा-
रण समूल प्रहारो ॥ कै त्रिपुरारि हन्यो वर राक्षस र
यहि वाण उरस्थल फारो ॥ ऐसहि भीम दुशासन
मारि तवै मन को वह रोस निकारो ॥१२॥ कोपि कें
वीर वली वल सों सु दुशासन दै दल वीच संघारो
केहरि ज्यों मृग टेरि दल्यो सुरराज किधौं भव प-
र्व्वत फारो ॥ ज्यों हनुमंत वली वल सों महि राव-
ण को भुज मूल उपारो ॥ त्यों नरसिंह स क्रोध भ-
यो हिरनाकुशको जु उरस्थल फारो ॥१३॥ दोहा ॥
मन भायो करि फारि उर रुधिर अंजुली चारि ॥ अं-
चै भींम प्रफुलित भयो मन को रोस निकारि ॥१४
और रुधिर भरि अंजुली लेकें पहुंच्यो धाम ॥ जाय
न्हवाई द्रौपदी सव पूजे मन काम ॥१५॥ सोरठा ॥ जास
है जीवन मूरि इहि पुर अरु उहि पुर सुखी ॥ ते सव-
कैं हैं धूरि द्विज दोषी अरु अपजसी ॥१६॥ व्याल व
से जिहि गेह पर दारा रति जे पुरुष ॥ निश्चय जानों
एह मृत्यु माहि संसय नहीं ॥१७॥ छै पर तरुणी वीर
सव जग मे अपजस लियो ॥ मरयो दुशासन वीर दे
खत सकल महारथी ॥१८॥ द्रुपद सुता तव रुधिर
न्हवाई ॥ रण मंडल सों पहुंच्यो जाई ॥ नकुल शकु
नि सों रण भयो घनों ॥ जुरे असुर अरु सुर पति म-
नों ॥१९॥ वाणन मारि शकुनि विचलायो ॥ विध्यो
उर वर भूमि गिरायो ॥ हकत शकुनि कुलाहल भ-
यो ॥ हाहा शव्द सकल दल ह्वयो ॥२०॥ दोहा ॥ भ-

यों द्रुपद अरु करण सों अतिगति करि संग्राम॥
जूझे भट द्वै सेन के वरणि सकै को नाम॥२१॥करणी
द्रुपद नर नाथ को उर मारे दश बाण॥कोन कहै ति
न धरनि धुकि तत छिन छांडे प्राण॥२२॥दंडक
छंद॥धीर तजे वीर सवे व्याकुल शरीर ह्वै कै संभ्रम
गंभीर वीर करण सो महारथी॥सूर कहलानें दह
लानें दल दीरघ जे हाथी दह लांने संक जाय को
न पै कथी॥जत्र तत्र सत्र दाह दुर्घट विकट भट का
हि काटि कीने काल दंड लोक को पथी॥काहूं दंड अ-
श्व काहूं पायक पताका रथ काहूं गिरे रथी काहू मा-
हि गिरे सारथी॥२३॥दोहा॥करण पराक्रम को क-
ह्यौ नहीं सुरो को जाय॥कटक त्रास डर जानि कै
रुप्यो पार्थ रण आय॥२४॥इति श्री महाभारत प
र्णे विजय मुक्तावल्यां कवि छत्र विरचितायां दुश्शा
सन शकुनि राजा द्रुपद वध वर्णनो नाम अष्ट त्रिं
शोऽध्यायः॥३८॥

त्रोटक छंद॥रवि नंदन पार्थ जुरे रण में॥बहु मोद भ-
यो जन के मन में॥अति संभ्रम सो कवि कौन कहै॥
सर जालन को तहं पौन वहै॥१॥धर ऊरध बाण न
छाय लयो॥छपि सूर तहां तम छाय गयो॥अति अ-
द्भुत विक्रम कौन कहै॥सुर वे लखि लाखनि भूलि रहै
२॥दोहा॥बाण चले दुहु वीर के जो जन एक प्रमान
वैसे वेई युद्ध को पटतर नाहीं आन॥३॥अस्त्र शस्त्र
सों परस्पर समर रचत दोउ वीर॥जुरि जुरि क्यों हूं म्रु-
त न हि होत रण रण धीर॥४॥आयो वासर तीसरो कौ

भीमसेनने दुश्शासन की एक भुजा उखाड़ डाली और उसका पेट फाड़ रुधिर से अंजुलि भरि पीलीनी और नकुल ने शकुनि का पेट फाड़डाला ॥

हू रण उमंगैन॥सुर असुरनि यह कर्म काहु सुन्यौन देख्यौ
नैन॥५॥तब छांड़ौ कब सरस्यो सेन परे बहु जानि॥
मंडलीका कीनो धनुष पकेन कोंहू पानि॥६॥रह्यौ
करण के तून में बाण ह्वै गयो व्याल॥धस्योधनुष व-
ल वंड सो छांड़ि दयो उत्ताल॥७॥दोधकछंद॥आव-
त सो अहि श्रीहरि देख्यो॥पारथ कालहि येमह लेख्यो॥
दाबि कियो तबही रथ नीचो॥सीस बच्यो लहि सूक्ष्म
वीन्चो॥८॥चटटि किरीट हि लै गयो सोई॥सेन समूह
त्रसे सब कोई॥फेरि सो व्याल सरोषत धायो॥कर्ण-
निकेत तबै चलि आयो॥९॥सर्पउवाच॥दोहा॥नि-
ज अरि मोरो पार्थ है कारण सो बुद्धि निदान॥हनों श-
त्रु तुम मोहि जो करि कें छांड़ो बान॥१०॥कर्ण उवाच॥
हौं समरथ पार्थ हि हतों चाहौं नहीं सहाइ॥कह्यौ न
मान्यो सर्प को वह करि थको उपाइ॥११॥चौपाई॥र
कटका मुकट पारथ सिर भयो॥स्वरूप बाण धनु जो
जित कयो॥बल करि रवि नंदन सिर हयो॥टोपा का-
टि पार सो भयो॥१२॥दोऊ रोष वंत वर वीर॥कारत जु-
द्ध नहिं श्रमित शरीर॥तजत तन रण सिर छूटे केश॥दो-
ऊ घोर असुर के भेश॥१३॥गीतिकाछंद॥शल्य सो नृ-
प कर्ण भाख्यो वेगन रथ वर वाहई॥सुनत सारथि
रोष कीनो भूमि अब वैरिनि भई॥गिलि रथ को चक्र
धरनी धंसि गयो ह्वै चलि ना सकों॥बार बार अशेष उ-
द्यम किय सो करि के थकों॥१४॥श्राप पूरब जन्म दी-
नो विप्र बहु दुख पाय कें॥गिले रथ को चक्र धरनी र-
ह्यो संभ्रम छाय कें॥कवच कुंडल इंद्र लीने बाण कुं

नी सेनाड्र॥भई वैरिनि मेदिनी चित कर्ण के चिंता भई
१५॥कर्ण उवाच॥दोहा॥छत्री धर्म विचारि उर छिन
हुक समर निवारि॥सुन्यो पार्थ जौं लौं रथे भुवतें ले
हु निकारि॥१६॥श्री कृष्णोवाच॥सवैया॥पौन को पू
त वहाद्द दयो जल भोजन मांझ हला हल डार्यो॥सु
रभी हरी जब भूप विराट की जाय तहां वहु सां कोरा(?)पा
र्यो॥धारौन कछू मरजाद की वात जवै सुत धर्म को
देश निकार्यो॥द्रौपदी को खल चीर गह्यो तब पा
प कियो तुम धर्म विचार्यो॥१७दो॰कौरे निहौरो क्यौं
कियो तातें कीजे जुद्ध॥ज्यौं पावक में घृत जरै भ
यो करण अति क्रुद्ध॥१८॥कोपि सरासन कर ल-
यो चले करण के बाण॥हनत पार्थ मोह्यो महा भू
तल पर्यो निदान॥१९॥वल करि काढ्यो कंध दै
भुवतें रथ स विलास॥वहुरि वृष्टि सर की करी छा-
यो धर आकाश॥२०॥दोधक छंद॥चेत सही उठि
पारथ धायो॥करण लख्यो नियरो जब आयो॥सा
रथि सौं विनवै तब ऐसें॥हांकि रथै रण जीतहु जे-
सें॥फेरि धरा रथ चक्र गिल्यो है॥सो वर ठेलत हू न
हिल्यो है॥वारहिं वार महा रुक कोर्यो॥भूमि हली॥
अहि को सिर डोर्यो॥२२॥पारथ क्रोध कियो वहु
धाही॥बाण हयो रिपु के उर माही॥हूकि पर्यो
रवि नंदन ऐसें॥वज्र हन्यो सुरने गिरि जैसें॥२३॥
चामर छंद॥हाय हाय जत्र तत्र ह्वै रही जहां तहां देव
लोक भौं भलोक कर्ण सो रथी कहां॥सैनता विनाभ-
यो ओप ... दीनसी॥अंध पत्र भो महा विशेष

दुःख कर्ण न कों॥२५॥ दोहा॥ भागि चले सब सूर गण क-
र्ण पर्यो रण देखि॥ दुर्जोधन तब आपनी मृत्यु गिनी
मुविशेखि॥२५॥ अहंकार जुत जब कह्यो दल पति श-
ल्य जुझार॥ पायरजायसु वेगिही कोपि कह्यो किरवार
॥२६॥ सोपि गयो दिन चार जहां कर्ण पर्यो रण देखि॥
रोदन कारत गंधर्व सब सुरसो केस विसेखि॥२७॥

अर्जुन ने कर्ण को युद्ध में मारा और कर्ण के रथ के पहिये भूमि में ग-
ड़ गये

नैन हीन अंबुज बदन जोवन त्रिया सिंगार॥ त्योंही
कौरव हीन दल को कहि थंभन हार॥२८॥ चंद बिना
रजनी रजनी पति रैनि विना दुति मंद अनैसो॥ नीर
विना सर नैन विना नर धाम धनी विन देखिय जैसो
नीर बिना मुक्ताहल सो अरु दीप विना रजनी तम जै-
सो॥ त्योंही सिंगार विना युवती नृप कर्ण विना दल ला

गत तैसो॥२९॥दोहा॥पर्यो देखि नृप कर्ण को विप्र रूप धरि आय॥दूर्बल अति ह्वै कें वाह्यौ नृपति कर्ण सों जाय॥३०॥चौपाई॥दारिदृहि बहु भांति सतायो॥जाचन तोहि इहां हों आयो॥कर्ण सुन्यो जगमें बड़ भागी॥ताको चित्त भयो अनुरागी॥३१॥कर्ण उवाच॥पाहन लेवार विप्र सयानें॥मोरद भंजन संकन आनें॥वेगि वारो यह वारन लावहु॥लैसोइ कंचन धाम सिध्यावहु ३२॥श्री हास उवाच॥दोहा॥साधु साधु तकरन नृप पट तर दीजे काहि॥तोसो तुहीन दूसरो जगमें कोउ न आहि॥३३॥कर्ण उवाच॥विप्रन हित कंचन दियो सुनियो विप्र समान॥निज त्रिय रति जीवन गयो स्वामि काज्जये प्रान॥३४॥आदि अंत जाको नहीं सब जग व्यापक आय॥भई सकल मन कामना तिनको दरसन पाय॥३५॥श्लोक॥श्रापा युक्त स्तदा कस्मी यत्र कर्णो रणे हतः॥जीवकर्ण महदेवा यो दत्ते का सबी पुनः॥३६॥वृद्ध ब्राह्मण रूपेण कस्मत्तु स्व य मागतः॥विप्राहं कर्ण राजेन्द्र दारिदं बहु व्यापते॥३७॥पाषाणं गहणं विप्र दंत भंजय तेमम सवा भार सुवर्ण श्च यथात्वं रण उच्यते॥३८॥श्री कास्स उवाच॥साधु साधु महावाहो सर्व शास्त्र विसारद॥दातार सम कर्णस्य पृथव्यांन प्रजायते॥३९॥कर्ण उवाच॥विप्रार्थेन धनं क्षीणं स्व दारा गतपौ वनं॥स्वामि कार्य्ये गता प्राण अंत काले जनार्दनम्॥४०॥दोहा॥कर्ण पर्यो छिन तीसरे जब बीते द्वे जाम॥समर भूमि उद्यत भयो

शल्य कियो संग्राम ॥ ५८ ॥ इति श्री भारत पुराणे विजय मुक्तावल्यां कविछत्र विरचितायां कर्ण वीर संमोहनो नाम ऊनचत्वारिंशो ध्यायः ॥ ३९ ॥

इति श्री कर्ण पर्व समाप्तम ॥ अथ शल्य पर्व कथनं म ॥ दोहा ॥ शल्य सूर नृप आ रहो कर लीने धनुबान जीत्यो चाहत शल्य को साजत समर विधान ॥ १ ॥ द्रो- ण कर्ण भीषम हते रण जितवार अनंत ॥ जीत्यो चा- हत शल्य रण आसा बहु बलवंत ॥ २ ॥ दोहा ॥ छंद ॥ अर्जुन को रथ वायु जिम धायो ॥ सेन घनी बल कै बि- चरायो ॥ धूरि उड़ी उड़ि अंबर लों प्यो ॥ शल्य तहां जमि कै पग रोप्यो ॥ द्वै दल में नहिं सूझत कोऊ ॥ सन्मुख जुझ्झ जुरे भट दोऊ ॥ सूर घनो करि पौरुष जूझत ॥ का- हू की कोउ बात न बूझत ॥ ४ ॥ दोहा ॥ जरा संध को पुत्र तव दुरा संध तिहि नाम ॥ सहित आपने सेन सों ज्छु- कि पर्यो संग्राम ॥ ५ ॥ दुरा संध जूझो लख्यो नकुल र पर्ज यो वीर ॥ हन्यो सुशर्मा क्रोध करि जूझि पर्यो रण धीर ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ नृपति युधिष्ठिर कोपे आप ॥ जा को जग में बडो प्रताप ॥ असुर हिडंब आप कर हयो ॥ विना जीव परि भूतल गयो ॥ ७ ॥ एक घरी दिन लगि रण कर्यो ॥ भूप युधिष्ठिर सों संघर्यो ॥ दोसो पवन पूत बलिवंड ॥ कीनो तिन संग्राम अखंड ॥ ८ ॥ छप्पै ॥ सू- र हने रण धीर हने रथ वंत अंत अर ॥ काहूं हने गजराज गिरे कटि कुंभ चरण धर ॥ गिरे सारथी काहूं अश्व गि- रे कहूं छत्र चमर धर ॥ कहूं गिरे ध्वज दंड काहूं धर हर पायकन र ॥ बीस कुंवर कौरव तहां भीम हनें वर

संघारे॥काटि दयो अन वारहि ज्यों घन पल भट छिति परे॥८॥दोहा॥सब कौरव लिं ज्यान में हने भीम बलवंड॥दुरजोधन ख्यौ बच्यो भौ संग्नास प्रचंड॥१०॥सह देव अरु शल्य सो संग्रम भयो अपार॥बोवर मै विधि परस पर करत अमित संघार॥११॥चौपाई॥ सह देवकर असि वर लयो॥शल्य सारथी तब तिनि

सहदेव ने शल्य सारथी को मार भूमि में गिरा करके गिर पड़ा और घबराके सेना भागी

हयो॥तोको रथ अरु हने तुरंग॥कीनो घाउ शल्य के अंग॥१२॥मारो सीस टूटि धर परो॥दुरजो धनयश रथ पर हरो॥भजे शेष भट आयुध डारि॥किते चले भट हियरा हारि॥१३॥दोहा॥कुरु नंदन तिहि थल रह्यो निपट अकेलो आप॥हती चमू चतुरंग सब जाको अमित प्रताप॥१४॥छप्पै॥छप्पन जोजन छत्र छाह जाकी धर मंडहि॥दुर्गम दुसह दुरंत अदंड निबल करि दंडहि॥बंधु कुटंब असेष सकल

किंकर चहु ओरहि॥सब जग अमित प्रताप ताप छ-
त्रिन छिति छोरहि॥बहु छत्र चौर गज बाजि रथ
दल बर दीरघ पेखियें॥सोई भूमि भूप कुरराज सो॥नि-
पट अकेलो देखियें॥१५॥सोरठा॥होनी होय सो
होय नही मिटावे दूभसो॥ताते जग सब कोइ शं-
सय चित्तन आनिये॥१६॥जो रच्यो करतार सोई
सोई ह्वै रहै॥यहै बात सब सार मूरख जो संसा करै
१७॥इति श्री महाभारत पुराणे विजय मुक्तावल्यां
कवि छत्र विरचितायां सुशर्मा शल्य वधो नाम च-
त्वारिंशोऽध्यायः॥४०॥इति श्री शल्य पर्व्व समा प्त-
म्॥ अथ गदा पर्व्व क-
थनम॥चौपाई॥राजा निपट अकेलो भयो॥मंत्र जप-
न जल भीतर गयो॥जपन चारि घटिका जो पावै॥
तो अपने सब सेन जिवावै॥१॥यह सुधि पाये पंड-
व धाये॥जल में भूप हुतो जहं आये॥कहो कहां दु-
रि कुरु पति गयो॥सो नहिं हमें सामुहे भयो॥२॥भी-
मसेन उवाच॥दोधक छंद॥तो लगि के निक भूप-
ति आये॥नाम कछू नहिं जात गनाये॥ता थल जूझि
परे सब तेई॥छत्री जे बल वंत हु तेई॥३॥तो उर है इ-
तनो डर पैठो॥तू दुरि कें जल भीतर बैठो॥क्षत्रिय
धर्म विचारि हिये में॥सोच कछू नहिं आप किये में
४॥जो भजि बीर पता लहि जाई॥तौन बचै अब मो-
पहं भाई॥भूमि पताल संघारों तोही॥शपथ मही
पति पंडु को मोही॥५॥दोहा॥हने वीर निन्यान वे
तू तात उबरे भागि॥जौ लगि तो हि हनो नही नचैन ता

मस आगि॥ ६॥ चौपाई॥ पंडु सुतन में तोहि जो भावै॥ सो
ई तोसों रण को आवै॥ जोई आयुध तू कर धरि है॥ ता-
ही सों सो तोसों लरि है॥ ७॥ अब जो क्षत्रिय धर्म न गा-
हि है॥ सब जग में उपहासहि सहि है॥ सुनत बैन भूप
ति पर जरयो॥ ज्यों घृत मांझ हुता सन परयो॥ ८॥ रोषवं
त केहरि सो कढ्यो॥ रोष देखि भीमहि उर बढ्यो॥ वज्र
पात सम मुष्टिका मारो॥ कौतुक देखत बंधव चारो॥
॥ ९॥ नगस्वरूपिनी छंद॥ सरोष व्है दुहू जुरे॥ न भांति भां
ति तें मुरे॥ अशेष जुद्ध साजहीं॥ न रोष छांड़ि भाज
हीं॥ १०॥ दोहा॥ गिरो वाम दश भीम धुकि मोहि मोहि
बल बंड॥ सप्त बार भूपति गिरो करि संग्राम अखंड
॥ ११ कोऊ वीर कौर नहीं भूपर गिरे प्रहार॥ मिलत अ
मित गति को कहै तारन को विस्तार॥ १२॥ दुरजोध
न उवाच॥ सुंदरी छंद॥ ढीठ भयो तू कत रण ठानत
मोहिन तू अपने उर आनत॥ बालक मारि कितो ब
ल बोलत॥ कै यह विक्रम फूल्यो डोलत॥ १३॥ जीव
त कों उबरै अब मोंपै॥ जुद्ध करो वान आवै तोंपै॥
बंधव तेरे इ तोहि सराहत॥ भांतिन भांतिन तो मुख
चाहत॥ १४॥ डारि गदा भगि जायन कों अब॥ जीव
त छांड़ों न तोहि इहां जब॥ है में हारि न कोऊ मान
त॥ भांति अनेकनि जुद्धहि ठानत॥ १५॥ दोहा॥ हि
यहा सो तब पवन सुत विलखे बंधव चारि॥ फेरि हि
म्हारो देह तिन जब मुकि कह्यो मुरारि॥ १६॥ भीम
सेन उवाच॥ सकल देव नर देव के जो पीछे दुरि जा
य॥ तऊ न छांड़ों तोहि हों कौटिक करो उपाय॥ १७

सैन दई श्रीकृष्ण तब भीमहि चितवत जानि ॥ तब रि-
साय कै उठि चल्यो ठोकि जंघसों पानि ॥ १८ ॥ चामर
छंद ॥ सैन जानि भीम सैन जंघ मैं गदा हनी ॥ मोहि
मोहि भूमि मैं गिरो सु भूमि को धनी ॥ बिबिदै मही-
प धर्म पुत्र पास आइयो ॥ देखि देखि सो थली अशे-
ष दुःख पाइयो ॥ १९ ॥ राजोवाच ॥ छप्पै ॥ जा भुज भी-
षम करण द्रोण भग दत्त सुशर्मो ॥ दूशासन दै आदि
बंधु सब अद्भुत कर्मो ॥ देश देश के भूप त्रास निशि-
शंका मानत ॥ दुरजोधन पग परसि आपनी जीवन
जानत ॥ निशि द्यौस छत्र छाया चलें तेज अमित गति
पेखिये ॥ रण भूमि भूमि भूपति गिरो सो कोउ साथ न
देखिये ॥ २० ॥ दोहा ॥ सत छत्र कवि छत्र कहि तन्यो जु-
धिष्ठिर सीस ॥ बहुत बिसूरे कृष्ण को मुख चाहो अ-
वनीस ॥ २१ ॥ राजोवाच ॥ चौपाई ॥ हुतो सबल दल सो
कित गयो ॥ भूपति बिन वे बहु दुख छयो ॥ रथी अ-
ति रथी सूर अपार ॥ कित गयो साहन सब परिवार ॥ २२
जिन तृण करि मेरो दल लेख्यो ॥ छिति पर कोऊ शत्रु
न देख्यो ॥ जाके डर पर घर घर हल्यो ॥ सोई भूप अ-
केलो पर्यो ॥ २३ ॥ जाको छिति सब जोरै हाथ ॥ सो भु-
व पर्यो न कोऊ साथ ॥ यहि बिधि धर्म पुत्र दुख छा-
ये ॥ भीम आदि सब बंधव आये ॥ २४ ॥ भीमसेन उ-
वाच ॥ दोहा ॥ कत दुख कीजे भूप अब छत्री धर्म बि-
चारि ॥ पाय २ तुव आय सो डार्यो कटवा संघारि ॥ २५
हम चूके सेवक नहीं आयसु मान्यो सीस ॥ गुण औ-
गुण जो बनि गयो तव अज्ञा अवनीस ॥ २६ ॥ चित्रवा

सो पितिस्वल नको भूप जुधिष्ठिर राय ॥ पहुंचे तहं व
ल भद्र तव भूपति के ढिग जाय ॥ २७ ॥ गीतिका छंद
देखिदुर जोधन परो भुव जंघ घाउ विलोकि कें ॥
जानि जुद्ध अधर्म को वहु चित्त मांझ मसोकि कें ॥ है
गदाके जुद्धको यह धर्म चित्त विचारि तो ॥ अर्द्ध तन
कटि कें परो सो स्वप्न हूं नहि मरितो ॥ २८ ॥ व्योम भूमि
पताल भीमहि हों नहीं अव छंड़ि हों ॥ आजुही वल
आपने हठि सर्व गर्वनि खंडि हों ॥ वाडवानल सो उठो
करि क्रोध वहु दुख पाय कें ॥ अति रोषवंत विलोकि
श्रीहरि यो कह्यो ढिग आय कें ॥ २९ ॥ श्रीकृस्नउवा-
च ॥ द्रोपदी तव सभा आनी कर्म कर्कस नृप कियो
जंघ तोसो मारि कें यह नेम भीम तहां लियो ॥ ताहि
त हृणसन संघारो आपनो पनु पारियो ॥ हति शत्रु
वलहि जीवके इन सर्व शोक निवारियो ॥ ३० ॥ दोहा
सम साधे वहु भांति करि सुनि वल भद्र सो वात ॥ कुरु
नंदन अपराधकी सुधि करि करि पछि तात ॥ ३१ ॥
करी विदा वल भद्र की उरको क्रोध निवारि ॥ वंधव पां
चों संग लै निज थल चले मुरारि ॥ ३२ ॥ एक छोहनी
दल वच्यौ धर्म सुवन को साथ ॥ रथ चढ़ि चारों वं-
धु जुत तवै चले नर नाथ ३३ रैनि भये धृष्टद्युमन
निशि सत्यो सुख वीर ॥ द्रुपद सुताके पांच सुत सूते
अमित शरीर ॥ ३४ ॥ इति श्री महा भारत पुराणे विज
य मुक्तावल्यां कवि छत्र विरचितायां गदा जुद्ध दुर
जोधन वध वर्णनो नाम एकाचत्वारिंशोऽध्यायः ४१
॥ दोहा ॥ सूत्यो जान्यो कटक दल

नंद घोष रथ पाइ ॥ दूरि गयेलै हास्तलद पंडु पुत्र सु-
ख पाइ ॥१॥ उनेरै रथतैं अनुज जुत तबही भुव भर-
तार ॥ धसत हास्त रथलैं सबै उठी अगिनि की ध्यार ॥२
नंद घोष जरि भस्म भौ कह्यो नकौतुक जाय ॥ यह ल-
खि कैं पंचो अनुज संभ्रम रहे भुलाय ॥३॥ श्रीकृस्न
उवाच ॥ भीषम गुरु अरु करण किसानि दयो रथ जारि ॥ या
कौ अब पर भाव सुनि प्रगट्यो मंद मुरारि ॥४॥ चौपा-
ई ॥ जौलगि हौं रथ ऊपर रह्यो ॥ तब लगि सो बान नि न
हि दह्यो ॥ जबहैं धसि भुव ऊपर आयो ॥ नंद घोष ति-
नि सरनि जरायो ॥ हरि चरित्र तिनि ऐसो देख्यो ॥ वर-
न्यो जायन अद्भुत लेख्यो ॥ दुरजोधन जहं रसा में परो ॥
द्रोण पुत्र तिहि थल पग धरो ॥६॥ अस्वत्थामा उवा-
च ॥ दोधक छंद ॥ आयसु दै कुरु नंदन मोकौं ॥ दुष्ट ह-
नौं [illegible] दै सुख तोकौं ॥ पैज करौ इहि भांति भनैं सों ॥
पार्थ जुधिष्ठिर कौन गनैं सों ॥७॥ सिन रह्यो सोइ आज
संघारौं ॥ बंधव पांच तुरंत हि मारौं ॥ जीवत मोहि पंड
सुख सोवैं ॥ आजु सबै जम को मुख जोवैं ॥८॥ चामर छंद
पंच बंधु मारि आज पंच सीस ल्यायहौं ॥ तबै महीप तो-
हि मुख [illegible] ॥ [illegible] हपाल [illegible] ॥९॥
भौ [illegible] बली सौरव चित्त मां-
कै ॥१०॥ कुंडलिया ॥ [illegible] पिताको आजुहीं लैहौं बद-
[illegible] ॥ और हनों बरु पंडु सुत धृष्टद्युम्न को मारि ॥
[illegible] ॥ अद्भुत
काम शिशु बाल चित्त में ध्यान धरिहौं ॥ थोरे ही संका
[illegible] नाको ॥ लोई दरिकै [illegible] मिला-

ऊँदैर पिता कौ ॥१०॥ दोहा ॥ चलि सो पहुँचौ दल निकट ॥
द्रोण पुत्र जुत क्रोध ॥ पुरुष एक ठाढ़ो भयो तासों की-
नो जुद्ध ॥११॥ ताहीं अश्वत्थामा महा द्वै घटिका संग्रा-
म ॥ बहु सन्तुष्ट कियो सुभट तब कीनों विश्राम ॥१२॥
चौपाई ॥ तब तिहि पुरुष दया बहु करी ॥ मांगि मांगि यहि
विधि अनुसरी ॥ जोई वर तेरे मन भावै ॥ मांगत ही सो मो-
पै पावै ॥१३॥ अश्वत्थामा उवाच ॥ वीर अवीर सबै अ-
रि मारौं ॥ पंडु सुतनि जुत भट संघारौं ॥ यहै दया करि

अश्वत्थामा रात्रि में पांडवों के मारने को गया और वहां शिव एक
बड़े पुरुष का रूप धर उसे रोका तब दोनों में

युद्ध हुआ
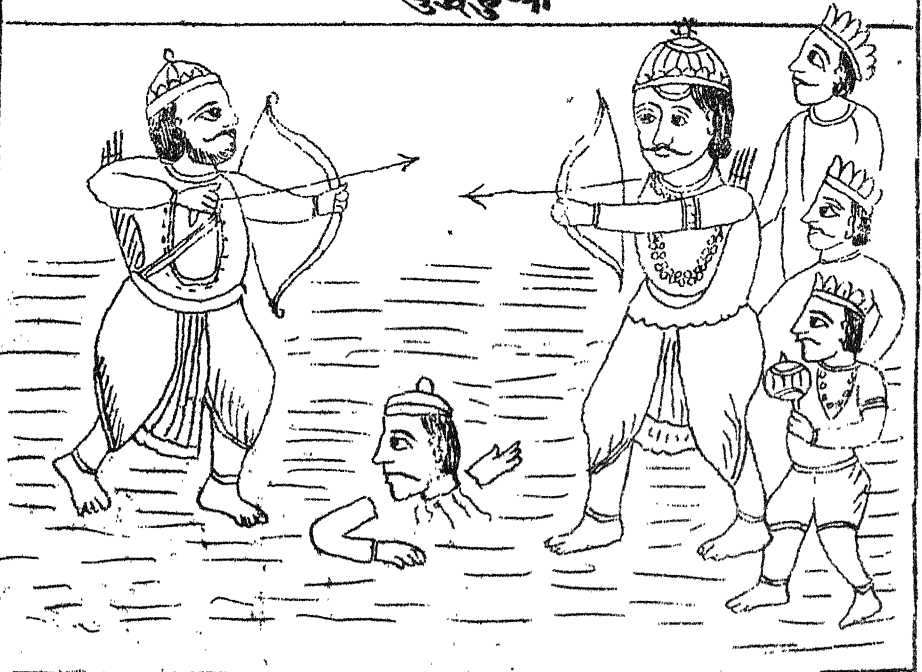
के वर दीजै ॥ परम अनुग्रह मोपै कीजै ॥१४॥ एवम अ-
स्तु कहि दीनो ज्ञान ॥ गयो कटक में गहि कृपान ॥ सू-
तो कुवर शिखंडी देख्यो ॥ भारत भय ते निर्भय लेख्यो

१५॥ दोहा॥ प्रथम प्रहारयो सो कुवर धृष्टद्युम्न को जाय
वाम चरण छाती हन्यो सोवत वीर जगाय॥१६॥ उठन
न पायो वीर सो मारयो दुःख दिखाय॥ द्रुपद सुताके पं
च सुत तेऊ मारे जाय॥१७॥ अर्द्ध रैनि लौं सब कटक
ठाम ठाम संघारि॥ एक छोहनी दल हन्यो चल्यो सक
ल भुव डारि॥१८॥ पांचालीके सुतनि के सीस काटि लै हा
थ॥ तब पहुंच्यो तिहि ठाम जहं दुरजोधन नर नाथ
१९॥ अश्वत्थामा उवाच॥ धर्म पुत्र को आदि दै सिर
लै आयो काटि॥ दुरजोधन उर सुख भयो ताके कर
तें डाटि॥२०॥ त्रोटक छंद॥ सुख दुःख समान भयो र
जवहीं॥ नर नायक प्राण तजे तव हीं॥ चलि भूप जु
धिष्ठिर गेह गयो॥ लखि वै दल तें भय भीत भयो २१
राजा उवाच॥ सुत द्रोण कहा यह कर्म कियो॥ शिशु मारि का
हा अपराध लियो॥ वहु दुःख धनंजय चित्त धरयो
अपने उरमें वहु क्रोध भरयो॥२२॥ भगिके अवसोर
अरि जाय कहां॥ अवहीं हनिहों पुनि वेगि तहां॥२
कुकिवे तवहीं रथ पौर सज्यो॥ तिहि रोष नहीं पल
एक तज्यो॥२३॥ हनिके गुरु पुत्र भज्यो तवहीं॥ वहु
पारथ रोष करयो जवहीं॥ तिनि जाय लयो नहिं भाजि
सक्यो॥ अति व्याकुल ह्वै यह राय थक्यो॥२४॥ दोहा
अर्जुन जोजन एक पै गुरु सुत लीनो जाय॥ जान्यो
नहीं उवार तिनि पिारयो सूर समुहाय॥२५॥ उपज्यो र
अद्भुत जुद्ध तहं को कवि सकै वखानि॥ सव हीं सर
नभ छाय गौ थके सूर नहिं पानि॥२६॥ काटत दोऊ
परस पर वाण समूह अनेक॥ व्योम में एक र

धर करन कटत हैं रुण्ड ॥२७॥ चौपाई ॥ हाकिन मानत
दोऊ वीर ॥ दोऊ समर वली रण धीर ॥ एकहि गुरु पै
विद्या पाय ॥ व्योम चली वानन करि छाय ॥२८॥ दो-
ऊ रण कौ लव श्रील बढ़े ॥ एक संग दोउ विद्या पढ़े ॥
ब्रह्म अस्त्र वार पारथ लीनो ॥ वही द्रौण सुत ने सिर
कीनो ॥ उपजी अगिनि दहन तें भारी ॥ त्रिभुवन कांपे
नर अरु नारी ॥ हाहा शब्द सवल परट्यो ॥ महा ताप
सुर असुरनि भयो ॥३०॥ सोरठा ॥ [illegible]
खानि वहु आतंक उर ॥ प्रलय होत है आजु कहि विधि
जग जन उच्चरत ॥३१॥ दोहा ॥ ब्रह्म बाण कौ पार्थ कौ
रण में निष्फल जाय ॥ सीस फोरि कै मणि लई तबही
नो मुकराय ॥३२॥ गर्भ उत्तरा कौ हन्यौ गुरु सुत कै संधा-
न ॥ भयो मृतक सुत तिहि समैं सव कुल दुःख निदान
३३॥ व्यास अनुग्रह सुत जियो भयो परीक्षित नाम ॥
चले पार्थ गृह को तवैं रहित भयो संग्राम ॥३४॥ चौ-
पाई ॥ चले हस्तिनापुर सव आये ॥ नृप धृतराष्ट्र तवैं
समझाये ॥ भांति भांति विनयो करि जोरि ॥ मिटें न सो-
नी वियें करोरि ॥३५॥ भये शुद्ध पानी तिन दिये ॥ का-
ज कर्म करात सव विधि किये ॥ रुदन करैं कौरव की ना-
री ॥ दुखदाया मिनतैं पर जारी ॥३६॥ तव भीषम स-
व त्रिय समझाई ॥ होय रचै जो त्रिभुवन राई ॥ पांडु पु-
त्र सव पास बुलाये ॥ दिन प्रति राज नीति समझाये ॥
३७॥ भीषम उवाच ॥ सवैया ॥ क्रोध्य दृथा न करो कबहू
न मतौ कछु मूढ़न सौं करिये जू ॥ मित्रन को अपमा-
न रच्यो न दया उर शत्रुन की धरिये जू ॥ छत्र सदा पर

तबै राज अभिषेक करि भूप जुधिष्ठिर आप। बैठो प्रफुलित पाट पर बाढ़यो अमित प्रताप॥१॥ करत निकंटक राज धर नासे शत्रु समूल॥ छत्र कहै सज्जन नन के बाढ़ी तन मन फूल॥२॥ दंडक छंद॥ कर्म हैं कुकर्म जेते मिटैं हैं अधर्म सर्व भूतल सकल धर्म सरसाइयतु हैं॥ ठौर ठौर दान सन मान घने विप्रन को आनंद निधान भौन भौन गाइयतु हैं॥ जन तत्र छत्र कवि कोउ नाहिं शत्रु रह्यो अब छांड़ि छांड़ि सोन ढूंढ़े पाइयतु हैं॥ भूपति जुधिष्ठिर के राज में सुचैन जग मेटि कैर असत्य सत्य धराछाइयतु हैं॥३॥ दोहा॥ चारि वरण तें स्वप्न हूं पर त्रिय रत नहिं कोय॥ पर द्रोही नर कृतघ्नी अज सुन काहू होय॥४॥ भुजंग प्रयात छंद॥ दरिद्रै दरिद्री अधर्मै अधर्मी॥ महा शोक शोकै कुकर्मै कुकर्मी॥ लसै इंद्र कीसी पुरी राजधानी॥ सबै सद्म नीके महा सुःखदानी॥ सुहाये अटा दीखियै धाम धामा॥ परी सी विराजैं मनो काम कामा॥ कहां लौं कहौं ता पुरी की निकाई॥ चहूं ओर दीषै महा शोभा छाई॥६॥ सबै बाग फूले फले चित्त मोहैं॥ मनो ते लता कल्प की छत्र सोहैं॥ तहां धाम हैं नीर संजुक्त ऐसे॥ मनो देव दैवेश के सद्म जैसे॥७॥ छहूं काल के वृक्ष फूले फले हैं तहां कोकिला आदि पक्षी भले हैं॥ कहां लौं बखानौं महा शोभ नीकी॥ तहां शोक संका नसै सर्व जीकी ८ दोहा॥ धर्म सुवन भूपति बने आगे बंधव चारि॥ सेवत मन वच कर्म सों सकत न आयसु डारि॥९॥ गीतिका छंद॥ गोत घात विचारि कै ऋषि राज तहं बोले घने

व्यास ऋषि दुर्वास जुत ऋषि राज जोतिक कोगने॥ज-
ज्ञ तहं हयमेध कीनो सर्व विधि निवनायकै॥पार्थ
लै चतुरंग सेना भूमि जीती जायकै॥१०॥दोहा॥२
आयो दश दिशि जीति कै आन्यो वाजी धाम॥पूरण
कीनो जज्ञ तहं सव पूजे मन काम॥११॥चौपाई॥
जज्ञ सिरायो सुर सरि तीर॥धर्म धुरंधर गुण गंभी
र॥समदे ऋषि जे आये भूप॥भूपतिपहिरे वसनअ
नूप॥१२॥जितीकुती कौरव की नारी॥ग्रसी सवाल२
दुःखनि सों भारी॥ते सव व्यास महाऋषि राई॥लीनी
अपने पास वुलाई॥१३॥दोहा॥मायावीतिन के पुरुष
दीने ऋषि दरसाय॥पतिलहि सव आनन्द जुत पग
नि परी सव जाय॥१४॥धसी सुर सरी के सलिल भ
ई सु अंतर ध्यान॥है है सोई जो कछू रचि राखी भग
वान॥१५॥रहे तहां धृत राष्ट्र अरु गंधारी संग नारि
वहुत विसूरै रैनि दिन सुतको सोच विचारि१६
एक छत्र मांहि भो गई भूप जुधिष्ठिर आप॥रामचंद्र
ज्यों अवध में दिन दिन वढ़ो प्रताप॥१७॥निसि दि-
न सेवा मात की करैं न सासन भंग॥अज्ञा कारी स-
र्वथा चारो वंधव संग॥१८॥वृद्धि भई शशि वंशकी
भरे साहन भंडार॥वाढ़ो छत्र विशेष कैं जदुकुल
वहु परिवार॥१९॥चौपाई॥करि भारत ठवैर दश ज-
ने॥अव कवि तिनके नाम निभनै॥पान्चो पंडु पु-
त्र वलवान॥छठे शोभित श्री भगवान॥२०॥कर
ण पुत्र शोभित [illegible]॥मेघवरण वहु विधि सु-
ख देत॥सात वर्स जादो वलि वंड॥दोरा पत्र सं[illegible]

[illegible] भारत में इते और रह्यो नहिं को
य [illegible] नन रची सोई सोई होय ॥ २२ ॥ सोरठा ॥
[illegible] नु सुत सरिवर भूपति गने ॥ करि कुं
ती [illegible] सम ॥ २३ ॥ छप्पै ॥ नि
त्य नित्य [illegible] न तहं पावहिं ॥ षट दरश
[illegible] पावहिं ॥ सप्त दीप नव ख
[illegible] हरखि मनि मुक्त
[illegible] पावहिं ॥ कविकुल सकल भूपति जप
ति दीनन नर कोउ देखिये ॥ भुव भूप जुधिष्ठिर राज में
सो थल थल आनंद लेखिये ॥ २४ ॥ दोहा ॥ द्वादश वर्ष व
न है त्रयों दशे अज्ञात ॥ मारि कीन्च कान जस लियो र
हर्षवंत ह्वै गात ॥ २५ ॥ सब कौरव परिवार जुत मारे जग र
जस जीति ॥ रहे हस्तिना पर नृपति चारौ अनुज समी
ति ॥ २६ ॥ छप्पै ॥ कृप द्रोण गांगेय सकल कौरव तरु सा
जै ॥ धारि जयद्रथ भयेउ लहरि रविनंदन राजै ॥ कच्छ र
मच्छ जल जंतु शल्य तहं भयेउ सुसर्मा ॥ भूरिश्रवा भ
ग दल भयो तहं ग्राह सुवर्मा ॥ करि नाव धनंजय धीर
कों त्रिभुवन पति केवट भयेउ ॥ जस तिलक युधिष्ठि
र [illegible] सरिता तरि गयेउ ॥ २७ ॥ दोहा ॥ जो
[illegible] तिनहि सहाई पाय ॥ एक छत्र
करि [illegible] ॥ २८ ॥ भारत मुनि भा
षा कियो [illegible] बुद्धि हि पाय ॥ कहत सुनत पातक
[illegible] दारिद्र दुख जाय ॥ २९ ॥ चारि बरन में जो
सुनै [illegible] ॥ प्रगटै हरि की भक्ति उर
मोच्छ [illegible] को होय ॥ ३० ॥ सवैया ॥ जो फल तीरथ

करे किये अरु जो फल षोड़श दान दियें ते॥ ज्ञान काशी [illegible] सुनें फल जो कवि छत्र [illegible] बहु [illegible] हियें तो जो फल संजम नेम रचे अरु जो फल है सत जज्ञ किये ते॥ जो फल [illegible] भये फल [illegible] जुधिष्ठिर नाम लियें ते॥ ३३॥ [illegible] न भये वर पाये॥ तीरथ राज प्रयाग गये [illegible] नाम गंग अन्हाये॥ जोग किये व्रत नेम लियें अरु [illegible] [illegible] आप सजे जु जुधिष्ठिर गाये॥ ३२॥ दोहा॥ अष्ट दशा पुराण में सुनें जगत में कोइ॥ सुनत विजय मुक्तावली तैसोई फल होइ॥ ३३॥ कहयो ग्रंथ सुछत्र कवि अपनी मति अनुसार॥ जु लिख्यौ चूक बुद्धिपृ सब कविन तासमु सहार॥ ३४॥ छपै॥ मधु कैटभ कुल हन्यो हन्यो हिरनाक्ष अघ्या सुर॥ हरना कुश जिहि हन्यो हन्यो धेनुक केशी सुर॥ बंधु सहित दश कंध हन्यो वत्सासुर जिहि वर॥ नरका सुर तिहि हन्यो हन्यो शिशु पाल अधम धर॥ सुत धर्म कर्म रक्षन कारन महिमा नहिं जानी परै॥ त्रैलोक्य नाथ कवि छत्र कहि पढ़त सुनत रक्षा करै॥ ३५॥ सवैया॥ व्याल धरे शशि भाल धरे गज खाल धरे तन भस्म चढ़ाये॥ ज्वाल धरे सिर माल कपाल धरे विष कंठ महा सुख पाये॥ गंग धरे अर्द्धंग शिवा ढिग भंग धरे गन भूत निकाये॥ ऐसे सदा शिव होहि प्रसन्न सो छत्र विजय मुक्तावलि गाये॥ ३६॥ दोहा॥ फौज सुदर वारी लसे भूपति सिंह कल्यान॥ पूरण कीनी छत्र कवि ग्रंथ सुतिहि अस्थान॥ ३७॥ इति श्री

[illegible] विराजि-

तायां राजा जुधिष्ठिर राज वर्णनो नाम

त्रिचत्वारिंशोऽध्याय ॥४३॥

लिखितं चाउी दत्त ब्राह्मण

कान कुब्ज

छप्पै

तिलक भाल वन माल [illegible] छबि॥१

मोर मुकुट की लटक चटक वरनत अटकत कवि॥१

[illegible] च्यो त-

[illegible] ॥ रति कोटिका-

म अभिराम अति दुख निकंद नागर धरन॥ आनंद

कंद व्रजचन्द प्रभु सु जय २ असरन सरन॥ मोर मु-

कट नग जड़ित कर्ण कुंडल हेम झलकै॥ मृगमद र

तिलक लिलाट कमल लोचन दल पलकैं॥ घुंघर

वारी अलक कौस्तुभ कंठ विराजै॥ पीत वसन वन

माल मधुर मुरली धुनि बाजै॥ करत कोटि आभाव

रन सु चन्द सूर्य देखत लजत॥ वृह्म देव दे भक्त जन

सु श्याम रूप प्रीतम सजत॥ २॥ चतुरानन सम बुद्धि

विदित जो होय कोटि धर॥ एक एक धर प्रति न सी-

स जो होय कोटि वर॥ सीस सीस प्रति वदन कोटि

कर तार बनावै॥ एक एक मुख याहि रसन फिर को-

टि लगावै॥ रसन रसन प्रति सारदा कोटि बैठि बानी

ककहि॥ महि जन अनाथ के नाथ की महिमा तव हु

न कहि सकहि॥ ३॥ भूमि परत अवतरत करत बा-

लक विनोद रस॥ पुनि जोवन मद मत्त तरुन सुन्दरि

अनंग वस॥विषय हेतु जड़ फिरत वहुरि पढ़ें यों
हथ ष्पन॥गयौ जन्म गुन गनत अंत कछु भयौ न ग्र-
ष्पन॥थिर रहत न कोउ नर पति नवल रहत न र-
का चहुं जुग जस॥सोई अचर अमर नर हर नि-
रखि जांपियत भक्ति भरा वंत रस॥५॥विमल चित्त
करि मित्र प्रभु छल बल मद किज्जिय॥प्रभु सेवा
वस करिय लोभ वंतहि धन दिज्जिय॥युवति प्रभु
वस करिय साधु आदर वस आनिय॥महा राज गुन
कथन वन्धु सम रस मन मानिय॥गुरु निमित्त सी-
स रस सों रसिक विद्या वल वुध मन हरिय॥मूरख
विनोद सु कथा वचन सुभ सुभाय जग वस करिय॥
६॥जाचक लघु पद लहै कामी नर जो कलंक पद॥
लोभी दुर जस लहै अमन लालची लहै ग॥८॥मूरख
औगन लहै लहै पद्धि रस गुन पंडित॥सूर सुरन ज-
स लहै रहै रन मैं मंहि मंडित॥निर्वान सु पद जोगी
लहै जोन गहै ममता सुमति॥सुख भगत जगत ज-
न लहै कौन सु नौ विधि भक्ति प्रति॥धिक मंगन वि-
न गुनहि गुन सुधिक सुन तन रीझै॥रीझक धिक
विन मौज मौज धिक दे तजौ खीजै॥देवौ धिक वि-
न सांचि सांचि धिक धर्म न भावै॥धर्म सुधिक किन
रत्न दया धिक अरि कहं आवै॥अरि धिक चित्तन
सालई चित्त धिक जहं नउदार मति॥मति धिक
जो तव ज्ञान विन ज्ञान सुधिक विन हरि भगति॥

॥७॥

॥कवित्त॥

नेह राज रूप राज रसिक रस राज नैन सुख राज गहि उठायो गिरि राज है ॥ छोटे से कर निवर अंगुरी पे धर्‍यो गिरि पूंभी कैसो छत्र हरि लिये गजराज है ॥ हाथनि ललाई तामें पहुंचि निछवि छाई ऊंचो कियो हाथ सब छवि को समाज है ॥ नैननि की सैननि सों कहै अलबेली अलि चोर चोर खायो दधि काम आयो आज है ॥ नेकु तो निहारो प्रिय प्राननि को प्यारो अति पंकज से हाथ लिये धार्‍यो गिर भारी है ॥ प्रेम सों लपेटी कहै नेह भरी बात अलि लेहुरी लकुटि नेकु देहुरी सहारो है ॥ कहैं अलि मिल सब काम आयो आज वलि खायो रुचि माखन जो चोर के हमारो है ॥ नेह भरी बात सुनि हिय हुलसात मंद मंद मुसकात मुख रूप को उधारी है ॥ सब ही के ग्वाल बाल सब ही के गोधन है ॥ सब ही पे आनि परी प्रानन की भीर है ॥ सब ही पे मेघ बरसत है गोला धार सब ही की छाती छेद करत समीर है ॥ किधौं मेरो ई अनोखो ढोटा भाग आनो एरी बीर वो हल पहारन कोमल सरीर है ॥ नेकु याके हाथ तें गिरि लेहु सौं न तुमही सब अहीर पैन काहू हिये पीर है ॥

॥ इति मुक्तावली समाप्तः ॥०॥

लिखतं चण्डीदत्त ब्राह्मण

कानकुब्ज